ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' ९५ म अंक ०१ दिसम्बर २०११ (वर्ष ४ मास ४८ अंक ९५)

वि दे ह *विदेह Videha*

***বিদেহ* http://www.videha.co.in** *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine* *नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।* Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA. Read in your own script **Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gurmukhi Telugu Tamil Kannada Malayalam Hindi**

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य

२.१.***हम पुछैत छी : विदेह ई-पत्रिकाक सहायक सम्पादक***

***मुन्नाजीक संग*** ***रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क बातचीत***

२.२.**हम पुछैत छी-** **बृषेश चन्द्र लालजी सँ**

**मुन्नाजी पुछैत छथि ढेर रास गप**

२.३.  मुन्नाजीसँ  रमेश रंजनक अन्तर्वार्ता

२.४.  श्री राजेन्द्र बिमलसँ हुनक रचना यात्रा मादेँ गप केलनि विहनि कथा रचनाकार  श्री मुन्नाजी

२.५.  गजेन्द्र ठाकुर- **उल्कामुख** (आगाँ)

२.६.१.  सत्यनारायण झा- पलट २.

 **जवाहर लाल कश्यप**- अर्धसत्य

२.७.  ओमप्रकाश झा - कथा- **डीहक जमीन**



२.८.१. मनोज झा मुक्ति- विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा २. नरेन्द्र मिश्र



३. नवेंदु कुमार झा- मिथिला राज्यक विरोध मे उतरलाह डा॰ मिश्र/ **पर्यटनक उद्योग पर सरकारक बढ़ल जोर विकसित होएत हलेश्वर पुनौरा आ पंथपाकर/** लोकायुक्तक मामिला मे सत्ता आ विपक्ष मे गतिरोध/ मनाओल गेल दरभंगा महाराजक जन्म दिवस/ प्रदेश मे खूजत पशु विश्वविद्यालय/ टाका नहि खर्च कएला पर बंद होएत आवंटन ४.प्रभात राय भट्ट- रोटी रोजीक खोजी

३. पद्य

३.१.१.गुलसारिका २. **भावना** नवीन

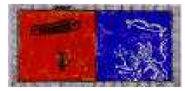
३.२.ओमप्रकाश झा

*३.३.*१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' २.**मिहिर झा ३.**जगदानंद झा 'मनु'

३.४.१**शिवशंकर सिंह ठाकुर २.**अमित मोहन झा

३. रवि मिश्रा'भारद्वाज'

३.५.१अनिल मल्लिक २उमेश पासवान ३.जगदीश प्रसाद मण्डल ४. मुन्नाजी हाइकू

३.६.१. अन्जनी कुमार वर्मा २. 
रामबिलास साह

*३.७.*१. डॉ॰ शशिधर कुमर २ नवीन कुमार "आशा"

*३.८.*१. प्रभात राय भट्ट २. **अमरेन्द्र कुमार मिश्र**

४. मिथिला कला-संगीत-१. ज्योति सुनीत चौधरी

२.श्वेता झा (सिंगापुर) ३.गुंजन कर्ण 

४.राजनाथ मिश्र (चित्रमय मिथिला) ५. उमेश मण्डल (मिथिलाक वनस्पति/ मिथिलाक जीव-जन्तु/ मिथिलाक जिनगी)

-

६.बालानां कृतेडॉ॰ शशिधर कुमर ''विदेह''

–

७. भाषापाक रचना-लेखन -[मानक मैथिली], [विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.]

8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

9. VIDEHA MAITHILI SAMSKRIT EDUCATION

बिपिन कुमार झा-संवादः**(contd.)**

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक (ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal (in Braille,

Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ आगाँक अंक

विदेह आर.एस.एस.फीड।

"विदेह" ई-पत्रिका ई-पत्रसँ प्राप्त करू।

अपन मित्रकेँ विदेहक विषयमे सूचित करू।

↑ विदेह आर.एस.एस.फीड एनीमेटरकेँ अपन साइट/ ब्लॉगपर लगाऊ।

ब्लॉग "लेआउट" पर "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आर.एल." मे http://www.videha.co.in/index.xml

टाइप केलासँ सेहो विदेह फीड प्राप्त कए सकैत छी। गूगल रीडरमे पढ़बा लेल http://reader.google.com/ पर जा कऽ Add a Subscription बटन क्लिक करू आ खाली स्थानमे http://www.videha.co.in/index.xml पेस्ट करू आ Add बटन दबाउ।

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

Videha Radio

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari/ Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पर जाऊ। संगहि विदेहक स्तंभ मैथिली भाषापाक/ रचना लेखनक नव-पुरान अंक पढ़ू।

http://devanaagarii.net/

http://kaulonline.com/uninagari/ (एतए बॉक्समे ऑनलाइन देवनागरी टाइप करू, बॉक्ससँ कॉपी करू आ वर्ड डॉक्युमेन्टमे पेस्ट कए वर्ड फाइलकेँ सेव करू। विशेष जानकारीक लेल ggajendra@videha.com पर सम्पर्क करू।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at http://www.videha.co.in/ .)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/

ISSN 2229-547X VIDEHA

फोटो सभक फाइल सभ (उच्चारण, बड़ सुख सार आ दूर्वाक्षत मंत्र सहित) डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाऊ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी कवि, नाटककार आ धर्मशास्त्री विद्यापतिक स्टाम्प। भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालहिसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभमि रहल अछि। मिथिलाक महान पुरुष ओ महिला लोकनिक चित्र **'मिथिला रत्न'** मे देखू।



गौरी-शंकरक पालवंश कालक मूर्त्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अंकित अछि। मिथिलाक भारत आ नेपालक

माटिमे पसरल एहि तरहक अन्यान्य प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्र, अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक़ हेतु देखू **'मिथिलाक खोज'**

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अन्वेषण संगहि विदेहक सर्च-इंजन आ न्यूज सर्विस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित वेबसाइट सभक समग्र संकलनक लेल देखू **"विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण"**

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाऊ।

"मैथिल आर मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त) पर जाऊ।

१. संपादकीय

१

विनीत उत्पलक सूचनाक अधिकारक अन्तर्गत मांगल सूचना १० सदस्यी साहित्य अकादेमीक मैथिली एडवाइजरी बोर्ड द्वारा मैथिलीकेँ खतम करबाक षडयंत्रक खुलासा केलक अछि। http://esamaad.blogspot.com/2011/11/vinit-utpals-rti-application-dated.html आ http://www.facebook.com/media/set/?set=oa.208811812530288&type=1 ऐ दुनू लिंकपर ई सूचना उपलब्ध अछि। *श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री राजदेव मण्डल, श्री बेचन ठाकुर (क्रमसँ मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ जीवित कथा-उपन्यासकार, कवि आ नाटककार), श्री उमेश पासवान, श्री उमेश मण्डल, श्री रामदेव प्रसाद मण्डल "झाड़ूदार", श्री दुर्गानन्द मण्डल आ श्री आनन्द कुमार झाकेँ कोनो असाइनमेन्ट नै? मुदा की* मैथिली एडवाइजरी बोर्ड द्वारा मैथिलीकेँ खतम करबाक षडयंत्र मैथिलीकेँ मारि देत? नै, कारण? कारण जै तरहेँ *श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री राजदेव मण्डल, श्री बेचन ठाकुर , श्री उमेश पासवान, श्री उमेश मण्डल, श्री रामदेव प्रसाद मण्डल "झाड़ूदार", श्री दुर्गानन्द मण्डल आ श्री आनन्द कुमार झा आ आन गोटे अपन तन-मन-धनसँ मैथिलीक जड़िकेँ अपन खून-पसीनासँ पटा रहल छथि..ई षडयंत्र- मैथिलीकेँ मारबाक- नै सफल हएत। ई भाषा जिबैत रहत।*

अविलम्ब एडवाइजरी कमेटीक सभ सदस्य अपन अपन असाइंमेंट वापस करथि / करबाबथि (अपन माने अपन , अपन परिवार /

बच्चा / चेला चपाटी), नै तं हिनका सभ पर त्यागपत्र देबाक लेल दवाब बनाओल जाए, हिनकर सबहक घरक सोझां अष्टजान कएल जाए, राष्ट्रगीतक गाओल जाए, राष्ट्रगीतक अष्टजाम कएल जाए /

मिथिला राज्य जं ऐ स्थिति मे बनत तं यएह दस परिवार मिथिला कें भूजि खा जाएत /

मिथिला राज्य संघर्ष समिति सभ ऐ छद्म अनुवाद सभकें अपन सभामे जराबथि / तखने ओ सिद्ध का' सकता जे ओ मिथिला राज्य बनेता आकि मैथिली राज्य /

सी. आइ. आइ. एल. सं सेहो (मैथिलीमे) ग्रांट -इन ऐड आ अनुवादक सूची सूचनाक अधिकार तहत मंगबाओल जाएत /

२

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान २०१२-१३: ऐ बेर ई प्रक्रिया पछिला बेर जकाँ पुनः प्रारम्भ कएल जा रहल अछि।

रचना आ रचनाकारपर अपन प्रतिक्रिया
ggajendra@videha.com **वा**
https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/207867575958045/ **थ्रेडक कमेन्ट बॉक्समे दी से आग्रह। ई**

ISSN 2229-547X VIDEHA

समस्त डिसकशन ३१ दिसम्बर २०११ धरि चलत। तकर बाद रचना/ रचनाकार शॉर्टलिस्ट कऽ कऽ वोटिंग १ जनवरी २०१२ सँ शुरू हएत।

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१२-१३ :ऐ लेल श्री राजनन्दन लाल दास, श्री डॉ. अमरेन्द्र आ श्रे चन्द्रभानु सिंहक नामक प्रस्ताव हम दऽ रहल छी। हिनकर सभक समग्र योगदानपर पाठकसँ टिप्पणीक संग कोनो आन नाम जे पाठक देबए चाहथि, आमंत्रित अछि।

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी *मूल* पुरस्कार -**१२ :** ऐ लेल श्री बेचन ठाकुरक "बेटीक अपमान आ छीनरदेवी"(दूटा नाटक), श्री राजदेव मण्डलक "अम्बरा" (कविता-संग्रह), श्रीमती शेफालिका वर्माक "किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथा), श्रीमती आशा मिश्रक "उचाट" (उपन्यास), श्री उदय नारायण सिंह "नचिकेता"क "नो एण्ट्री:मा प्रविश (नाटक), श्रीमती विभा रानीक "भाग रौ आ बलचन्दा" (दूटा नाटक), श्री सुभाष चन्द्र यादवक "बनैत बिगड़ैत" (कथा-संग्रह), श्रीमती पन्ना झाक "अनुभूति" (कथा संग्रह), संग समय के (कविता संग्रह)- महाप्रकाश, भावनाक अस्थिपंजर (कविता संग्रह)- वीणा कर्ण, तारानन्द वियोगी- प्रलय रहस्य (कविता-संग्रह) आ श्री महेन्द्र मलंगियाक "छुतहा घैल" (नाटक)क नामक प्रस्ताव हम दऽ रहल छी। हिनकर सभक पोथीपर पाठकसँ टिप्पणीक संग

कोनो आन नाम जे पाठक देबए चाहथि, आमंत्रित अछि। ई पोथी सभ २००८, २००९ वा २०१० मे प्रकाशित हेबाक चाही।

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी ***बाल*** साहित्य पुरस्कार -**१२ :** ऐ लेल हम श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ''तरेगन''(बाल-प्रेरक कथा संग्रह), जीवकांत - खिखिरक बिअरि आ मुरलीधर झाक ''पिलपिलहा गाछ''क नामक प्रस्ताव हम दऽ रहल छी। हिनकर सभक पोथीपर पाठकसँ टिप्पणीक संग कोनो आन नाम जे पाठक देबए चाहथि, आमंत्रित अछि। ई पोथी सभ २००६सँ २०१० धरि प्रकाशित हेबाक चाही।

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी ***युवा*** पुरस्कार -**१२ :** ऐ लेल हम श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक ''अर्चिस'' (कविता संग्रह), श्री विनीत उत्पलक ''हम पुछैत छी'' (कविता संग्रह), कामिनीक ''समयसँ सम्वाद करैत'', (कविता संग्रह), आदि यायावरक ''भोथर पेंसिलसँ लिखल'' (कथा संग्रह),, श्री उमेश मण्डलक ''निश्तुकी'' (कविता संग्रह), श्री प्रवीण काश्यपक ''विषदन्ती वरमाल कालक रति'' (कविता संग्रह), श्री दिलीप कुमार झा "लूटन"क जगले रहबै (कविता संग्रह), श्री आशीष अनचिन्हारक "अनचिन्हार आखर"(गजल

संग्रह) आ श्री अरुणाभ सौरभक ‘‘एतबे टा नहि’’ (कविता संग्रह)क नामक प्रस्ताव हम दऽ रहल छी। हिनकर सभक पोथीपर पाठकसँ टिप्पणीक संग कोनो आन नाम जे पाठक देबए चाहथि, आमंत्रित अछि। ई पोथी सभ २०११ धरि प्रकाशित हेबाक चाही।३१ दिसम्बर २०११ धरि प्रकाशित रचना अहाँ दऽ सकै छी, कारण ई डिसकशन ३१ दिसम्बर २०११ धरि चलत; तकर बाद रचना/ रचनाकार शॉर्टलिस्ट कऽ कऽ वोटिंग १ जनवरी २०१२ सँ शुरू हएत।

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी ***अनुवाद*** पुरस्कार -**१३ :** ऐ लेल हम श्री नरेश कुमार विकल (ययाति,मराठी उपन्यासक अनुवाद मूल लेखक श्री विष्णु सखाराम खांडेकर), श्री महेन्द्र नारायण राम (कार्मेलीन,कोंकणी उपन्यासक अनुवाद मूल लेखक श्री दामोदर मावजो), श्री देवेन्द्र झा (बांग्ला उपन्यासक अनुवाद मूल लेखक श्री दिव्येन्दु पालित) आ श्रीमती मेनका मल्लिक (देश आ अन्य कविता सभ- रेमिका थापा, नेपाली), कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- मैथिली गीतगोविन्द (जयदेव - संस्कृत) क नामक प्रस्ताव हम दऽ रहल छी। हिनकर सभक पोथीपर पाठकसँ टिप्पणीक संग कोनो आन नाम जे पाठक देबए चाहथि, आमंत्रित अछि। ई पोथी सभ २००९, २०१० वा २०११ मे प्रकाशित हेबाक चाही।३१ दिसम्बर २०११ धरि प्रकाशित रचना अहाँ दऽ सकै छी, कारण ई

डिसकशन ३१ दिसम्बर २०११ धरि चलत; तकर बाद रचना/ रचनाकार शॉर्टलिस्ट कऽ कऽ वोटिंग १ जनवरी २०१२ सँ शुरू हएत।

रचना आ रचनाकारपर अपन प्रतिक्रिया

ggajendra@videha.com **वा**

https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/207867575958045/ **थ्रेडक कमेन्ट बॉक्समे दी से आग्रह।** ***ई समस्त डिसकशन ३१ दिसम्बर २०११ धरि चलत। तकर बाद रचना/ रचनाकार शॉर्टलिस्ट कऽ कऽ वोटिंग १ जनवरी २०१२ सँ शुरू हएत।***

पूर्व पीठिका:

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान दिसम्बर मासमे कोलकाता, दरभंगा, झंझारपुर आ पटनामे देल जाएत, ऐमे प्रशस्ति-पत्र आ पदक देल जाएत। विस्तृत विवरण शीघ्र देल जाएत। ऐ बेरुका पुरस्कारक सूची:-

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)

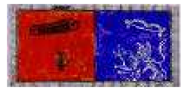
२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

ऐमेसँ श्री रमानन्द रेणु जीक मृत्यु सम्मानक घोषणाक बाद भऽ गेलन्हि, तँ हुनकर उत्तराधिकारीकेँ ई पदक आ प्रशस्ति-पत्र देल जाएत।

/सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकेँ यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया क्यूमे लागि गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तिरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बांग्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि)। मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/ ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्रा कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh

ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en कें मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

सूचना: ३.विकीपीडिया मैथिली:

मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai ऐ लिंकपर

Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी तँ http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट अकाउन्ट) कऽ आ प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोक्ता खाताक लिंककैँ क्लिक कऽ अपन प्रयोक्ता खात पन्ना बनाउ। किछु कालमे अहाँकेँ ट्रान्सलेट करबाक अनुमति भेट जाएत। तकरा बाद अनुवाद प्रारम्भ करू।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८)मे हम सूचित केने रही- “विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल,कारण मैथिलीक विकीपीडियाकेँ स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही आ सूचित करैत हर्षित छी जे २७.०१.२००८ केँ (मैथिली) भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे, विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक।” आ आब जखन तीन सालसँ बेशी बीति गेल अछि आ मैथिली विकीपीडिया लेल प्रारम्भिक सभटा आवश्यकता पूर्ण कऽ लेल गेल अछि विकीपीडियाक “लैंगुएज कमेटी” आब बुझि गेल अछि जे मैथिली “बिहारी नामसँ बुझल जाएबला” भाषा नै अछि आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जरूरत अछि। विकीपीडियाक गेरार्ड एम. लिखै छथि (http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

-"ई सूचना *मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भाषासमूहसँ सम्बन्धक* विषयमे उमेश मंडल द्वारा देल गेल अछि- उमेश विकीपीडियापर मैथिलीक स्थानीयकरणक परियोजनामे काज कऽ रहल छथि, ...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक प्रयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थान बिहारी भाषा समूहक अन्तर्गत राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूर्ण स्पष्ट भऽ गेल अछि जे "नै"। "

रामविलास शर्माक लेख (*मैथिली और हिन्दी*, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पांडेय) जइमे मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बनेबाक प्रयास भेल छलै तकर विरोध यात्रीजी अपन हिन्दी लेख द्वारा केने छलाह , जखन हुनकर उमेर ४३ बर्ख छलन्हि (आर्यावर्त १४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल प्रयास ऐ अर्थे आर विशिष्टता प्राप्त केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात्र ३० बर्ख छन्हि। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध वा करेक्शन हुनका लोकनि द्वारा नै वरन मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहनिहार ऐ मैथिली प्रेमी युवा द्वारा भेल से की देखबैत अछि?

उमेश मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक लोकक कण्ठक गीतकेँ फील्डवर्क द्वारा ऑडियो आ वीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएने छथि जे विदेह आर्काइवमे उपलब्ध अछि।

TIRHUTA UNICODE

See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered

valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."

(विदेह ई पत्रिकाकेँ ५ जुलाइ २००४ सँ अखन धरि ११६ देशक १,९६२ ठामसँ ७०,३९८ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी. सँ ३,३१,७७९ बेर देखल गेल अछि; धन्यवाद पाठकगण। - गूगल एनेलेटिक्स डेटा।)

गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html

ISSN 2229-547X VIDEHA

२. गद्य

२.१.हम पुछैत छी : विदेह ई-पत्रिकाक सहायक सम्पादक

मुन्नाजीक संग रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क बातचीत

२.२.हम पुछैत छी-  बृषेश चन्द्र लालजी सँ

 मुन्नाजी पुछैत छथि ढेर रास गप

२.३.  मुन्नाजीसँ  रमेश रंजनक अन्तर्वार्ता

ISSN 2229-547X VIDEHA

२.४.  श्री राजेन्द्र बिमलसँ हुनक रचना यात्रा मादेँ गप

केलनि विहनि कथा रचनाकार  श्री मुन्नाजी

२.५.  गजेन्द्र ठाकुर- **उल्कामुख** (आगाँ)



२.६.१. सत्यनारायण झा- पलट २.



जवाहर लाल कश्यप- अर्धसत्य

२.७.ओमप्रकाश झा - कथा- **डीहक जमीन**



२.८.१. मनोज झा मुक्ति- विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा २. नरेन्द्र मिश्र



३. नवेंदु कुमार झा- मिथिला राज्यक विरोध मे उतरलाह डा॰ मिश्र/ **पर्यटनक उद्योग पर सरकारक बढ़ल जोर विकसित होएत हलेश्वर पुनौरा आ पंथपाकर/** लोकायुक्तक मामिला मे सत्ता आ विपक्ष मे गतिरोध/ मनाओल गेल दरभंगा महाराजक जन्म दिवस/

प्रदेश मे खूजत पशु विश्वविद्यालय/ टाका नहि खर्च कएला पर बंद होएत आवंटन ४.प्रभात राय भट्ट- रोटी रोजीक खोजी

हम पुछैत छी : विदेह ई-पत्रिकाक सहायक सम्पादक 

मुन्नाजीक संग *रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"क बातचीतक अंश:*

मुन्नाजी: रामभरोस जी नमस्कार।

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": नमस्कार।

मुन्नाजी: अपने अपन साहित्यिक यात्राक प्रारम्भिक परिदृश्यक विवेचनमे की कहए चाहब?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": मुन्नाजी, हम जाहि परिवारसँ आएल छी ओ धन-वीत्तमे समाजमे अग्रणी तँ छल, मुदा भाषा, साहित्यक ओतऽ नामोनिशान नै छलै। बाबूजी गाम विकास समितिक मुखिया, प्रधान पंच होइत रहलाह, क्षेत्रमे नीक प्रतिष्ठा, नाम छलनि। मुदा घरमे पत्र-पत्रिका, पुस्तक पढ़बाक माहौल नहि छलै। ताहुमे मैथिली!

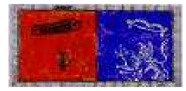
जखन हमरा दुनू भाइकेँ बघचौरासँ जनकपुरक हाई स्कूलमे शिक्षाक हेतु पठाओल गेल, तखन स्थिति बदललैक। हमरा पत्र-पत्रिका पढ़बाक लत लागल, रुचि बढ़ल आ तखन किछु लिखी से मनमे होबऽ लागल। हमर सम्पर्क डॉ. धीरेन्द्रसँ भेल जे रा.रा.कैम्पसमे मैथिली पढ़बैत छलाह। हुनका संगतिसँ लेखन दिश सक्रियता बढ़ल। ओना हम अपन पहिल कथा "इमानदार बालक" हिन्दीमे लिखने रही आ डॉ. धीरेन्द्रकेँ देखौने रहियनि। ओ तत्काल हमरा अपन भाषा मैथिलीक प्रति आकर्षित करौलनि आ तकर अनुवाद कऽ लएबा लेल कहलनि। हम कथाक अनुवाद मैथिलीमे कऽ देलियनि, जकर शुद्धि करैत काल एक्को पंक्ति एहन नहि छल जाहिमे लाले लाल नहि लागल होइ। जखन उतारि कऽ देलियनि तँ हुनक चिट्ठीक संग मिहिरमे पठा देबाक लेल कहलनि जे कथा नेना भुटकाक चौपाड़िमे १९६४ ई. मे छपल। तहिया हमर उमेर १३ वर्षक छल। बस, तकरा बाद हमर साहित्यिक यात्रा जे चलल, आइ धरि निरन्तर जारी अछि। एखन धरि विभिन्न विधाक तीससँ ऊपर पुस्तक प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

ISSN 2229-547X VIDEHA



मुन्नाजी: साहित्यक अतिरिक्त अहाँ आर कोन गतिविधिसँ जुड़ल रलौं अछि?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": हमर प्राथमिक झुकाउ साहित्ये दिश रहल। खूब लिखलौं- खूब आनन्दित भेलौं। दोसर हम पत्रकारितामे सेहो निरन्तर लागल छी। नेपालक पहिल मैथिली समाचारपत्र "गामघर साप्ताहिक"क विगत तीस वर्षसँ सम्पादन-प्रकाशन कऽ रहल छी। एहि विच "अर्चना", "आंजुर" मासिक, द्वैमासिक, सेहो निकाललहुँ। एकर अतिरिक्त सामाजिकशोध संस्थामे सेहो सक्रिय रहलहुँ।

मुन्नाजी: मैथिली साहित्यक परिधि छोट आ सीमित अछि। मुदा ऐ भाषाक रचनाकार सभ अपने कुकुर कटाउझ करैत पाओल जाइत छथि। ई समस्या किएक उत्पन्न होइत अछि आ एकर निदान की?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": मैथिली भाषा, साहित्यक क्षेत्रमे लाभक अवसर कम छैक। जे छै तकरा अपना दिश कोना हँसोथल जाए, एहि फिराकमे मित्रगण सभ लागल रहैत छथि। एक आर्थिक लाभक लोभ, दोसर अपन वर्चस्व कायम रखबाक लौल- दुनू कुकुर कटाउझक कारण मानल जा सकैछ। निदान कहब कठिन- ई स्वभाव, प्रकृति आ आचरणसँ सम्बद्ध छैक। धैर्य राखब मात्र एकर उपाय थिक।

मुन्नाजी: देखल जाइत अछि जे सामान्यतः मैथिलीमे दू चारिटा रचना वा एक दुइ साल रचनाक पछाति एकटा पत्रिका निकालि ओ रचनाकार स्वयंकेँ सम्पादक घोषित कऽ दैत छथि। वास्तवमे सम्पादनक की मानदण्ड अछि आ ओइपर कतेक सम्पादक अटकल रहि पबैत छथि?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर": ई-प्रश्न मोनकेँ गदगद कऽ देलक। साँच बात इहो छैक- एखन मैथिलीमे ई समस्या बड़ जोड़ पकड़ने अछि। दू चारिटा कथा, कविता लिखने, छपने अपनाकेँ साहित्यक

सिरमौर बुझबाक भ्रम सभतार होइछ। दशकूंक लगानीकेँ छाउर बूझि मुँहक फुकसँ उड़िया देबाक भयावह आत्मरति भाव मैथिली लेखनक सहज परम्पराकेँ भ्रमित कऽ रहलैक अछि। सम्पादन स्वयंमे एकटा कला छै, विज्ञान छैक। एक-आध अंक बहार कऽ अपनाकेँ सम्पादक काह मठोमाठ बनने हमरा जनैत ताही प्रतिभाक हेतु नोक्शानीक बात छैक। सुधांशु शेखर चौधरी, डॉ. हंसराज, डॉ. भीमनाथ झा, बाबू साहेब चौधरी, कृष्णकान्त मिश्र, डॉ. सुधाकान्त मिश्र, डॉ. धीरेन्द्र, सम्प्रतिमे रामलोचन ठाकुर आदि किए सम्पादक कहौलनि! अहाँ मानदण्डपर अटकलक बात करै छी, पत्रिकाक कए गोट अंकपर ओ अटकल रहि पबैत छथि?

मुन्नाजी: नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ भऽ प्रतिष्ठासँ केहन अनुभव कऽ रहल छी, ऐसँ जीवन आ लेखनमे केहन परिवर्तन आएल अछि, की जीवन आ लेखनमे ई सहायक भेल अछि?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर: निश्चय प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे प्राज्ञ भऽ आएब हमर सपना रहए। कोनो साहित्यकारक हेतु ई सभसँ उच्च सम्मान छैक। हम नेपाल सरकारक एकरा लेल आभारी छी। एहिसँ हमर जीवन शैलीमे किछु परिवर्तन तँ भेबे कएल अछि। हम जनकपुरमे रहैत छलहुँ, आब काठमाण्डूमे रहऽ पड़ैत अछि। हम स्वतंत्र, खुशफैल रहऽ बला लोक, आब नियमित ऑफिस जाए पड़ैत अछि।

मुदा स्वतंत्र आ आह्लादकारी काज तँ छैहे प्रतिष्ठानमे। लेखनमे कोनो फरक नै, बस बेसी जगजिआर भेल अछि। पत्रकारिता बस लेखनकेँ बाधित करैत छल। हम काठमाण्डू अएलाक तीन वर्षमे छः गोट पुस्तक प्रकाशित कऽ सकलहुँ आ दर्जनों निबन्ध, कथा, कविता, नाटक आदि।



मुन्नाजी: नेपाली साहित्य मध्य मैथिली साहित्यक केहेन जुड़ाव छैक? आ दुनू भाषा मध्य कोन साहित्य बेशी समृद्ध अछि आ किएक?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर: नेपाली आ मैथिली अपन-अपन बाटपर चलैत अछि। एक राज्योपोषित रहलै, दोसर साहित्यकार पोषित। प्राचीन साहित्य मैथिलीक, लेखनमे समृद्ध नेपाली।

ISSN 2229-547X VIDEHA

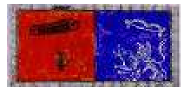
मुन्नाजी: मैथिलीक सीमामे फाँट कएल (नेपाल आ भारत) साहित्यिक गतिविधिक तुलनात्मक परिदृश्ये कतुक्का साहित्यक केहेन दशा-दिशा देखा पड़ैए?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर: भारतीय साहित्यकार, ओतुक्का साहित्यिक प्रतिष्ठान, सरकारी वा गएर सरकारी एहि तरहक फाँट-बखरा कऽ कऽ रखने अछि। एम्हरका लोक साहित्य अकादमीक पत्रिका, पुरस्कार, लेखन, गोष्ठीमे सामेल नहि कएल जाइत छथिनेपालमे तेहन कोनो बन्देज नै छैक। प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कार्यक्रममे हमहीं निरन्तर बजबैत छिऐन्हि, डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंहक "नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास" नेपालक अर्ध सरकारी प्रकाशन संस्था साझा प्रकाशन छपलक अछि। हँ, ओम्हरका साहित्यक लेखन परम्परा निरन्तर चलैत रहल- समृद्ध अछि। प्राचीनताक दृष्टिएँ, ऐतिहासिक उपलब्धिक दृष्टिएँ नेपाल ओम्हरसँ समृद्ध अछि। "वर्णरत्नाकर", सिद्ध साहित्य, मल्ल काल, सभ मैथिली साहित्यक आधार थिकै- ज्कर स्रोत नेपाले अछि।







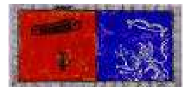



ISSN 2229-547X VIDEHA

मुन्नाजी: वर्तमानमे अपन गतिविधि कोन दिशामे जारी अछि? साहित्यिक-सांस्कृतिक कोने अग्रिम योजना अछि?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर: एखन प्रज्ञामे लागल छी। देखू, साझा प्रकाशनमे अध्यक्ष भऽ कऽ तँ ओ मात्र नेपालीक पुस्तक छपैत छल, हम मैथिलीक शुरुवात कएलहुँ। एक बालपोथी "बगियाक गाछ", दोसर "मैथिली साहित्यक इतिहास"। प्रज्ञामे पहिल बेर साधारण सदस्य भऽ आएल रही तँ पहिल बेर मैथिलीक पत्रिका बहार कएलहुँ "आंगन"। जे एहि बेर अएलाक बाद हमरे सम्पादनमे निरन्तर प्रकाशित अछि। एखनो बेसीसँ बेसी मैथिली दिश ध्यान दितो हमर विभाग "संस्कृति विभाग" सम्पूर्ण देशक हेतु देखैत अछि। तथापि जट जटिन, सलहेस, दीनाभद्रीक लोकगाथा, नृत्य संयोजन, संकलन, ऑडियो विडियोग्राफीक सुरक्षित कऽ देने छिऐक। हम ग्रन्थक रूपमे बहार करबाक नियारमे छी। मैथिलीमे एम्हर नाट्य क्षेत्रमे किछु नव संस्था, कलाकार सभ अपन प्रतिभा देखौलनि अछि, हम हुनका सभकेँ उचित मंच भेटौक ताहि दिश प्रयत्नरत छी।

मुन्नाजी: साहित्य लेखक एवं सम्पादकक नव तूरकेँ की सनेस देबऽ चाहब?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर: जे लिखथि मोनसँ लिखथि। अपनेसँ अपन मूल्यांकन नहि करथि। अपन अग्रज साहित्यकारक सम्मान करथि। सम्पादक महज लौलसँ अथवा अपनाकेँ स्थापित देखएबा लेल नहि करथि। एहिसँ अपन पूर्वूक छविकेँ धुमिल भऽ जएबाक डर होइछ।

मुन्नाजी: साहित्य मध्य साहित्यकारक राजनीतिक उठापटककेँ अहाँ कोन परिप्रेक्ष्यमे देखै छी? की साहित्यकारक लेल ऐ प्रकारक क्रियाकलाप उचित अछि?

रामभरोस कापड़ि "भ्रमर: हमरा लगैत अछि शुरुएक प्रश्नमे किछु बात आबि गेल अछि। साहित्यकारकेँ राजनीतिसँ दूरे रहने नीक। मुदा कतेको अवस्थामे ई सम्भव नहि बुझाइत छै। पटना आ दरभंगाक साहित्यिक मंचपर राजनीतिकर्मीक वर्चस्व एकर प्रमाण अछि।

ISSN 2229-547X VIDEHA







मुन्नाजी: शुरूहेसँ मैथिली भाषा पिछड़ल जातिक धरोहरि जकाँ रहल अछि। मुदा साहित्य मध्य (रचनाकारक रूपेँ) ओइ वर्गकेँ अवडेरि कऽ (कतिया कऽ) राखल गेल। की ऐसँ भाषाक हीनता आएल अछि? वा ई भाषा मृत्यु शय्या धरि पहुँचि गेल अछि। अहाँक नजरिये की कहब ऐपर?

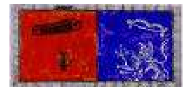
रामभरोस कापड़ि "भ्रमर: ई प्रश्न हमरा जनैत मैथिली भाषा, साहित्यक क्षेत्रमे सभसँ अहम अछि।

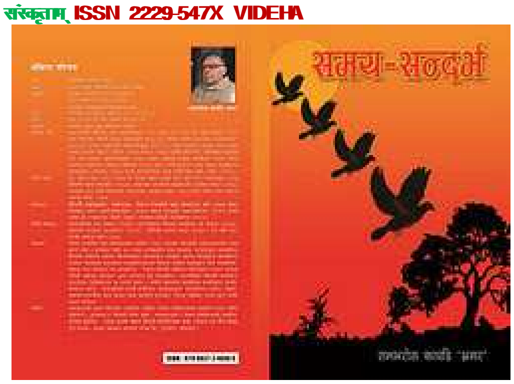
मैथिली भाषाकेँ संस्कृत जकाँ "हम्मर भाषा" कहि विगत डेढ़-दू सय वर्षसँ अपन पोथी-पतरामे जाँति कऽ रखनिहार मुट्ठी भरि वर्ग नब्बे प्रतिशत बजनिहारकेँ एकरासँ दुरे रखबाक काज कएलनि। आब जखन ई जपाल भऽ गेल छन्हि तँ भाषाक विस्तारीकरणमे लागल छथि। एखनो मैथिलीक मंचपर नमूनाक हेतु किछु गोटे

अभरताह, मुदा तकर पुछ कोन रूपेँ? साहित्यमे कतेक चर्च? गोलैसी कऽ कात करबाक, नीचाँ देखएबाक कोन प्रयत्न छुटल अछि? एहिमे कोन सन्देह जे जे वर्ग मात्र मैथिलीएटा बजैत अछि, तकर भाषा छीनि कऽ अहाँ महन्थ बनल छिऐ, आ अपने अंग्रेजी, हिन्दी, नेपाली बजैत समाजमे रोब दैत छिऐ। परिणाम तँ साफ छै,- एहि बेरका जनगणनामे नेपालमे मैथिलीक ठामपर मगही, बज्जिका लिखाओल गेलैए। किछु लाख तँ अबस्से बजनिहारक संख्या कम भेल हएतै। लिखौनिहारक साफ तर्क छलै, ई भाषा हमर अछिए नहि, ई तँ... ।

हमरा सन लोक एहिमे लागल छी, स्वयं हम एकर प्रतिपादमे किछु जिल्ला घुमलहुँ। मुदा हमरा सभकेँ अपवाद बुझैत अछि। आ जे नाटक एखनो धरि कएल जा रहल छैक, ताहिसँ मोन हमरो सभक दग्ध अछि औ मुन्नाजी! किएने मैथिलीक पुस्तक बिकाइए, पत्रिका बिकाइए? जे लेखक सएह पाठक! हमरा लगैत अछि- आब सम्हरबोक समय नहि अछि! ई भाषा मृत्यु धरि पहुँचि गेल अछि से हम नहि कहब, मुदा कए खाढ़ीमे विभक्त आ छिन्न-भिन्न धरि अवश्य भऽ गेल अछि। जकरा जोड़बाक ककरो ने रुचि छैक आने पलखति! तखन?!






समय-सन्दर्भ



ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

हम पुछैत छी-  **बृषेश चन्द्र लालजी सँ**

**मुन्नाजी पुछैत छथि ढेर रास गप**



१.अपने अपन साहित्यिक यात्रा मादेँ कही जे एकर शुरुआत कतऽसँ आ कोना भेल ?

हम अपनाकेँ साहित्यकार नहि मानैत छी । कारण, हमरा ज्ञानेँ साहित्यकारक औसत पंक्तिमे ठाढ़ हुअएवास्ते भाषा आ साहित्यक औपचारिक नहि तँ किछु अनिवार्य अध्ययन अवश्य हएबाक चाही जे हमरामे नहि अछि । हँ, हमरा अपन मातृभाषामे लिखएमे मोन लगैत अछि । एकर कएटा कारण छैक –प्रथमतः, हमरा लगैत अछि जे हम मैथिलीमे सहजतासँ अपन अभिव्यक्ति कऽ सकैत छी आ एहिलेल कोनो अनुवादक अभ्यास नहि करए पड़ैत अछि । दोसर,

हम जीवनभरि आत्मसम्मान, व्यक्तिक स्वतन्त्रता, सभक अपन खास परिचय सहितक सम्मानित विविधता आ बहुलवादी समाजक निर्माणहेतु लड़ैत अएलहुँ । मैथिलीमे लिखैत काल हमरा लगैछ जेना हम ओही लड़ाईकेँ आगाँ बढ़ारहल छी । तेसर, इहो जे लोक लिखैत अछि लोककेँ सुनाबए बुझाबएलेल आ भाषा वएह प्रयोग कएल जाइत छैक जे एहि कार्यलेल सभसँ उपयुक्त होइक ।

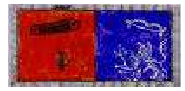
ओना हम जहिआ आठ कक्षामे पढ़ैत रही, मैथिलीक कक्षादिस छात्र छात्राक ठहक्का सुनि कऽ आकर्षित भेलहुँ । पं. सच्चिदानन्द झा मैथिली पढ़बथिन्ह । हुनक शिक्षणक शैली एतेक रोचक आ हँसीठट्ठाबला रहन्हि जे विद्यार्थीसभ सोझहिं आकर्षित भऽ जाइक । दोसर कक्षाक विद्यार्थीसभ सेहो आबिकए बैसि रहैक हुनकर गप्प सुनएलेल । हमरो बड़ड नीक लागल । रोचक, जानकारीमूलक, मनोरंजक आ सहजेँ बुझएमे आबएबला विषय के नहि चुनत ? हमहुँ मैथिली विषय लऽ लेलहुँ । ओ मिथिला मिहिरक चर्च बरोबरि करथिन्ह । हमर अग्रज गरिश चन्द्र लाल आ शिबेन्द्र लालजी मिथिला मिहिरक प्रेमी, तेँ हमरा ओतए मिथिला मिहिर नियमित अबैक । बस पढ़ए लगलहुँ । नेनाभुटका स्तम्भ हमरा बेस आकषर्ाित कएलक आ इच्छा भेल जे हमहुँ लिखतहुँ । मुदा साहस नहि हुअए । कहुना कऽ बतहु मामापर एक गोट कथा लिखलहुँ आ डेराइत डेराइत गुरुजीकेँ (पं. सच्चिदानन्द झा) देलिअन्हि । ओ पढ़लखिन्ह, नीक लगलन्हि आ बड़ड खुश भेलाह

। मैथिलीक कक्षामे हमर खूब प्रशंसा कएलन्हि आ ओ अपनेसँ मिथिला मिहिरमे पठा देलखिन्ह ।

एना, हमर पहिल रचना आईसँ ४३ वर्ष पहिने प्रकाशित भेल छल । लेखनक शुरुआत एतहिंसँ बुझू । तकरबाद हमर आत्मविश्वास बढ़ि गेल । हमरासभक स्कूलमे (श्री सरस्वती बहुउद्देश्यीय माध्यमिक विद्यालय, जनकपुर) प्रत्येक शुक्रदिन १ घण्टा सांस्कृतिक कार्यक्रम होइक । ओहिमे जरुर भाग लिऐक हमसभ । कहियो कविता तँ कहियो प्रहसन लऽ कऽ । हम आ परमेश्वर कापड़ि जे एखन मैथिली विभागक प्राध्यापक छथि जनकपुरमे, लेखनक काज करिऐक । हम खास कऽ हास्य व्यङ्गक कविता प्रहसन तैयार करी । परमेश्वर बेसी रचनात्मक रहए ।

२. अहाँ एकटा राजनेता सेहो छी तँ कहू जे साहित्य आ राजनीति मध्य की समानता वा विषमता देखाइए ?

बहुत मुश्किल प्रश्न अछि । एहिमादेँ हम कहियो सोचबे नहि कएलहुँ । हमरा लगैत अछि राजनीतिसँ साहित्य अलगो नहि भऽ सकैत अछि आ दुनू एकदम अलग सेहो अछि । वास्तवमे कही तँ ई सोचपर निर्भर करैत छैक । यदि साहित्य समाजक झरोखा अछि तँ ई राजनीतिसँ कोना पृथक रहि सकत ? राजनीति समाजक एकटा अङ्ग छैक ने ! फेर अहाँ झरोखासँ जे देखैत छी सएह अभिव्यक्त करैत छी । कोनो राजनैतिक उद्देश्यसँ परिचालित वा

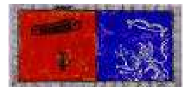



ISSN 2229-547X VIDEHA

पूर्वाग्रही नहि छी तँ तखन निश्चय ओ रचनासभ राजनीतिक उद्देश्यसँ अलग भऽ जाइत छैक । ओना कही तँ हमरा जनिते समाजमे गुणात्मक परिवत्र्तनवास्ते यदि राजनीतिक उद्देश्योसँ अभिप्रेरित भऽ रचना रचित होइत अछि तँ ओ स्वागतयोग्य अछि । आखिर साहित्यमे प्रगतिशीलता एकरे ने कहतैक ! बहुतो महानुभावसभ निरन्तर घोषित करैत रहैत छथि जे हुनक साहित्य राजनीतिसँ अलग छनि मुदा तरेतर वएह पूर्वाग्रही रहैत छथि, कोनो स्वार्थसँ परिचालित रहैत छथि । एहन अवस्थामे साहित्यक स्वतन्त्रताप्रति बलात्कार होइत छैक । एहिसँ नीक जे ओ अपन राजनीतिक उद्देश्यकेँ घोषित करथि आ फेर रचैथ । एहिसँ आम जनताकेँ आ पाठककेँ मूल्याङ्कन करएमे आ रचनाक भीतरतक जाएमे सुगम हएतैक ।

३. राजनीतिक रुपेँ अपनाकेँ कतेक सफल बुझैत छी वा राजनीतिमे अपनाकेँ कतऽ पबैत छी ?

हम फेर कहब जे सफलताक सम्बन्धमे सेहो अपन अपन दृष्टिकोण होइत छैक । बहुतो राजनीतिमे सफलताकेँ पद प्राप्तिसँ जोड़ि कऽ देखैत छथि । ताहि हिसाबेँ हम एहि क्षेत्रमे अपनाकेँ ओतेक सफल नहि बुझैत छी । हमरासभ जहिआ राजनीतिमे अएलहुँ तहिआ पदक बारेमे कोनो सोच नहि रहैत छलैक । हमसभ राजाशाहीक अन्त्य

आ लोकतन्त्रकक स्थापनाक लेल राजनीतिमे कूदल रही । हमसभ राजनीति शब्दो नहि बुझिऐक । संघर्ष, बलिदान आ त्यागक मात्र गप्प सप्प होइक । एहि क्षेत्रमे प्रवेशक अर्थ रहैक कखन मारल जाएब वा कखन पकड़ाकए जेलमे जाएब से अनिश्चित मुदा पूर्ण सम्भावनायुक्त । पूर्ण रुपसँ अनुशासित रहए पड़ैक । हमर शिक्षा सेहो नेपालेमे भेल । स्नातक आ स्नातकोत्तर हम जेलसँ कएलहुँ तैँ भारतमेक लोकतन्त्रक सियासी जोड़तोड़सँ सेहो परिचय नहि भेल । किछु मित्रसभ एहि मामिलामे अनुभवी छलाह तैँ जोड़तोड़मे हम सभ दिन पाछाँ रहलहुँ । बेसी परिवत्र्तनकामी आ मुहँफट भेलाक कारणेँ सेहो बहुतो सहए पड़ल । मुदा, हम सन्तुष्ट छी । लोकतन्त्रलेल लड़ल आ एखन नेपालमे लोकतन्त्र छैक । ज्ञानेन्द्रक समयमे लोकतन्त्रपर ग्रहण लागि गेल छलैक । हम प्रतिगमनक विरुद्ध सेहो वएह लगनसँ लड़लहुँ । हमरासभक कतेक मित्र काठमाण्डूक रत्नपार्कमे दिन देखारे हमरासभकेँ छोड़ि कऽ ज्ञानेन्द्रक (तत्कालिन राजा) कित्तामे चलि गेलाह मुदा हम कहिओ सम्झौता नहि करएबलामे समूहमे रहलहुँ । तैँ राजनीतिमे हमरा कहिओ हीन भावना वा पश्चाताप नहि भेल । हम जे कऽ रहल छी ताहिमे हमरा नीक लगैत अछि । तैँ करैत छी । एहि दृष्टिकोणेँ हम राजनीतिमे पूर्ण सफल छी ।

४. प्रश्न : लोकतन्त्रक हेतु संघर्षमे कतेक दिन जेल रहलहुँ । कतेक यातना भोगए पड़ल ?

हम लोकतन्त्रक लडाईमे १७ बेर गिरपmतार भेल छी । बहुतबेर दिन वा महीनामे जेलमे रहलहुँ । ५ बेर नाम अवधि तक किछु वर्षकलेल । लगभग ८ वर्ष जेलजीवन बिताबए पड़ल अछि । १९७३ १९९० धरि बेसी काल जेलमे बीतल । फेर ज्ञानेन्द्रक समयमे ।

.... जेल जेलेसन होइत छैक । हरीसमे ठोकि दैक । चित्त सुतए पड़ल । करोट नहि फेर सकैत छी । किछु बजलिऐक कि सटकासँ मारि मारि सोझ कऽ दैक । पेशाप लागल तँ लोटामे करु । उड़िस आ कीराक प्रकोप अलगे । भैँट नहि करए देत परिवार वा मित्रजनसँ । वर्षातमे चुअएबला घरमे कोंचि दैक । कतेक कहू । हमरा तँ जेलेसँ दू बेर हत्या करक योजना बनल । १९७५मे हमरा, बिमलेन्द्र निधि, महेन्द्र मिश्र आ रामप्रसाद गिरिकेँ काठमाण्डूक केन्द्रिय कारागारसँ मारकलेल निकालल गेल मुदा पता नहि फेर की भेलैक घुमाकए नखुजेलमे पहुँचा देल गेल । साँझमे गोकर्ण, ठगी सहित ४ गोटेक नखुक कातमे हत्या कऽ देलकैक । दोसर बेर हमरा, रामचन्द्र तिवारी, स्मृतिनारायण आ युवराज खातीकेँ

जलेश्वर जेलसँ सिन्धुली लऽ जा कऽ मुदा हत्याकलेल पुलिसकेँ अनुकूलता नहि भेलैक । हत्यासँ पहिने भारतीय दैनिक आजमे समाचार छपि गेलैक आ फेर आन्दोलन लगले सफल सेहोभऽ गेलैक । सिन्धुलीसँ हमरासभकेँ रिहा कएल गेल । …….. बहुतोकेँ अहूसँ विकट विकट यातना भोगए पड़ल छन्हि ।

५. साहित्य लेखन आ राजनीति, पहिल शुरुआत अहाँकेँ कै सँ भेल आ दोसर दिस कोना उन्मुख भेलहुँ ?

ओना सालक गणना करी ता लेखनक शुरुआत पहिने भेल । मुदा राजनीतिमे संलग्नता अपनेआप होइत गेलैक । वस्तुतः हाइस्कूलेसँ हम राजनीतिमे लागि गेलहुँ मुदा प्रत्यक्ष आ पूर्ण संलग्नता ३९ वर्ष पहिने भेल । हम काठमाण्डूक अमृत साइन्स कलेजमे छात्र यूनियनक चुनाव लड़ल रही । हम तहिआ नेपाली काँग्रेसक नेता बोधप्रसाद उपाध्याय, सरोजप्रसाद कोइराला आ महन्थ ठाकुरक निर्देशनमे काज करी । बादमे वीपी कोईराला, कृष्णप्रसाद भट्टराई, गिरिजाप्रसाद कोईराला, महेन्द्रनारायण निधि, महेश्वर प्रसाद सिंह आदिक प्रत्यक्ष सम्पर्क आ संगे काज कएलहुँ ।

लेखन निरन्तर चलैत रहल । हमर बहुतो रचना संग्रहित नहि अछि । वास्तवमे कही तँ हम एहिदिस ओतेक गम्भीर नहि रही ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

लिखी सुना दिऐक, हँसि ली मुदा प्रयोगक बाद ओकर संरक्षण नहि होइक । ई हमर जीवनक बहुत बड़का कमजोरी रहल । बहुत संगी एखन स्मरण करबैत छथि – स्कूलिया जीवनक रचनासभ, जेलक गीत, प्रहसन, व्यङ्ग आदि ।

हम वास्तवमे एकटा छोड़ि दोसरदिस उन्मुख नहि भेलौं । हमरा कनेको समय भेटैत अछि वा असगर रहैत छी तँ लिखए लगैत छी । बड़ड आनन्द अबैत अछि । हम पूर्णतः अपन आनन्दलेल लिखि लैत छी । हमर रचनासभक कहिओ कोनो उल्लेख्य समीक्षा नहि भेल । हम एहिलेल कहिओ प्रयत्नशील सेहो नहि रहलहुँ । हमरा बस आनन्द अबैत अछि । मुदा एकटा गप्प कहब, मैथिलीमे साहित्यकारलोकनि एको अहं के रोगसँ ग्रसित छथि । एकरा एकटा समूहक जातिक धरोहर बुझैत छथिन । अपनेसभमे समीक्षा करब, अपनेसभक चर्च करब, अपनेसभ पुरस्कार लऽ लेब – एकटा प्रवृति छैक । हम अपन आदतिसँ मजबूर छी मित्रगण क्रोधित भऽ जएताह । तैयाे हम एखनतक नहि बुझए सकलिऐक जे एहिसँ लाभमे के रहैत छथि ? साहित्यकेँ तँ पूरा हानि होइत छैक ने ! ई मानसिकता जे हटि जएतैक तँ मैथिलीक विकास अत्यन्त दुरत गतिसँ होइतैक । नव पीढ़ीमे एहि मादेँ किछु परिवत्र्तन देखएमे आएल अछि । ..... कतेक बेर तँ इहो देखएमे अबैत अछि जे नव साहित्यकार किछु दिनतक एहन मानसिकतासँ

मुक्त रहैत छथि मुदा जेनाजेना स्थापित होइत जाइत छथि वएह भायरससँ संक्रमित भऽ जाइत छथि ।

६. अहाँक पार्टीक मुख्य ध्येय की अछि ? ई पार्टी जनहितमे कतेक निकटतम देखाइए ?

एखन हम तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीमे छी । हम एकर प्रथम ९ संस्थापक सदस्यमेसँ एक छी । हमर राजनीति नेपाली काँग्रेससँ प्रारम्भ भेल । लोकतन्त्रलेल लडैत अएलहुँ । दिर्घ संघर्षक बाद लोकतन्त्रक स्थापना सेहो भेलैक आ अभ्यास सेहो । मुदा हमसभ महशूस कएलिऐक जे लोकतन्त्र यदि समावेशी नहि अछि , विविधताक सम्मानमे विश्वास नहि करैत अछि तँ ओहन लोकतन्त्र किछु लोकक लोकतन्त्र भऽ जाइत छेक । एहिसँ पिछड़ल, विभेदमे पड़ल लोक आ समुदायक कल्याण सम्भव नहि छैक । नेपालमे मधेशीक प्रति राज्य प्रायोजित विभेद होइत आएल छैक । तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टी एकर समाधान चाहैत अछि । संघीयताक अभ्यास सँ सभ प्रकारक विभेदक अन्त्य चाहैत अछि । हमर पार्टी संघीयतामे अपन क्षेत्रमे स्वशासन आ फेर केन्द्रमे सहशासनलेल प्रतिवद्ध अछि । हमरा लगैत अछि मधेशमे विभेद अन्त्य करक यएह एक गोट उपयुक्त उपाय छैक ।

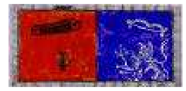
७. की अपन विचारक विस्तार वास्ते साहित्यक उपयोग करैत छी ?

से हमरा नहि बुझल अछि भऽ सकैछ जे हमर लेखनमे एकर प्रभाव होइक मुदा हमर ध्येय से नहि रहैत अछि । हमरा जे लगैत अछि हम लिखए चाहैत छी । हम पहिनहिं कहलहुँ जे हम एकदम अपना सुखलेल लिखैत छी आ हमरा अपना जे महशूस भेल रहैत अछि लिखएमे आनन्द अबैत अछि । हमर कथा संग्रह माल्होमे बेसी कथा राजनीतिक आसपड़ोसक छैक । एकर कारण कएटा – १. हम राजनैतिक व्यक्तिसभक समुदायसभक पीड़ा उगलए चाहलहुँ, २. हमरा अही क्षेत्रक बेसी अनुभव अछि जे हम व्यक्त करए चाहलहुँ ३ं राजनीति सेहो समाजेक अङ्ग छैक एकरा अछूत किआ मानी । …… हमर किछु कवितासभ गुणात्मक परिवर्त्तनवास्ते, समाजकेँ सचेत करकलेल राजनीतिक उद्देश्यसँ प्रेरित सेहो अछि । ई कोनो अपराध नहि थिकैक ।

मैथिलीमे सभ किछु रहौक सेहो चाहना रहैत अछि । तँ कहिओ मैथिलीक डिस्को तैयार करैत छी तँ कहिओ अन्य किछु । कहिओ बालगीत आदि आदि । ई हमर अपन शौख अछि । हमरा नीक लगैत अछि ।

८. नेपालमे मैथिली साहित्य आ अन्यान्य रानेताबीच अपनाकेँ कतऽ ठाढ पबैत छी ?

हम पहिनहिं कहलहुँ जे हम अपनाकेँ साहित्यकार नहि बुझैत छी । साहित्यकार हुअएलेल किछु जानकारी आवशयक छैक ।

साहित्यकलेल प्रतिवद्ध रहब सेहो जरुरी मानैत छी हम । साहित्य जिविकोपार्जनक सहयोगी हएब आपत्तिजनक नहि मुदा साहित्यककेँ वा अपनासभक सन्दर्भमे कहू तँ मैथिलीप्रतिक अनुरागकेँ अपन नफाक हेतु दोकानदारीमे प्रयोग करब हम नीक नहि मानैत छी । बहुतोकेँ देखैत छिअनि जे ओ एना करैत छथि । साहित्यमे माफियाक निर्माण करएमे रुचि रखैत छथि । दोसर केओ उभरि ने जाओ ताहिसँ डेराएत छथि । लगैत छन्हि जे केओ दोसरो दोकान थापि लेत तँ हमर बिक्री कमि जाएत । ...... ठीक एहिना राजनीतिमे सेहो होइत छैक तैँ हम दुनू ठाम अपनाकेँ एकहि ठाम पबैत छी । हमरा अपन स्थानसँ पूरा संतुष्टि अछि ।

लेखन हम आत्मतुष्टिलेल करैत छी , कोनो दोसर आकांक्षा नहि अछि तैँ संतुष्ट छी । राजनीति अपन विचारलेल करैत छी जाहिसँ कहियो सम्झौता नहि कएलहुँ , तैँ संतुष्ट छी ।

ISSN 2229-547X VIDEHA



९. अपनेक एहि कथ्यसँ जे राजनीति आ साहित्य दुनू एकटा समूह विशेषमे बन्हल अछि , हमहुँ सहमत छी । अहाँ दुनूमे अपनाकेँ कतेक नफा÷नोक्सान होइत पबैत छी ?

व्यक्तिगत नफा नोक्सानक सवाल नहि छैक । एहिसँ समाज आ साहित्य नोक्सानमे अछि । क्रान्तिकारिता अथवा प्रगतिशीलता जे कहिऔक, अपने मुहेँ मियाँ मिट्ठूसँ सम्भव नहि हएत । एहिलेल गुणात्मक परिवत्र्तनक निरन्तरता जरुरी छैक । क्रान्तिकारी वा प्रगतिशील वएह जे गुणात्मक परिवत्र्तनलेल प्रतिवद्ध होथि । राजनीति वा साहित्यकेँ समूह विशेषमे बान्हएमे जे जिममेवार होथि

ओ समाज आ साहित्यक विकाशक बाटमे अवरोधक आ प्रतिगामी छथि । नव प्रतिभासभकेँ छेकक कार्य करैत छथि ।



१०. अहाँक पार्टी सत्तामे आबि जाएत तँ मैथिली साहित्यकेँ कतेक फायदा पहुँचा सकत ?

तराई मधेश लोकतान्त्रिक पार्टी व्यक्ति समुदायक परिचय, स्वाभिमान आ आत्मसम्मानक प्रतिष्ठापन चाहैत अछि । विविधताक सम्मान अर्थात् असली बहुलवादक समर्थक अछि ई पार्टी । कहिओ

मैथिली नेपालमे राजभाषाक रुपमे सम्मानित छल । काठमाण्डू उपत्यकाक राजामहाराजा मैथिलीमे साहित्यिक रचना कऽ अपनाकेँ धन्य बुझैत छलाह । तेहन स्थिति छल । जौँ हमरासभक पार्टी प्रभावकारी ढंगसँ सत्तामे आओत तँ निश्चिते मैथिली भाषा आ साहित्यकेँ सम्मान भेटतैक । एखनो संविधानसभामे बहुतो मैथिलीमे शपथ ग्रहण कएलनि । अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनक आयोजनमे हमर पार्टीक लोकसभक प्रत्यक्ष आ खुला सहभागिता छल । ..... राज्यक यदि सहयोग रहैक तँ भाषा आ साहित्यक प्रभाव बढैत छेक । छोट उदाहरण अछि – १९ वर्ष पहिने जखन हम जनकपुर नगरपालिकाक प्रमुख पदपर विजयी भेल रही तँ मैथिलीक सम्मान आ प्रतिष्ठा बढाबएलेल बहुत किछु कएल गेल रहैक । नगरपालिका अपन सभ प्रमुख अपील मैथिलीमे सेहो छापय । तिरहुत रनिंग शिल्ड प्रतियोगिताक आयोजन प्रारमभ भेल रहैक । प्रत्येक वर्ष मैथिलीमे गीत रचना, गायन, संगीत आदि विधापर नगरपालिका पुरस्कार दैक । रश्मि, सुनील मल्लिक, अशोक दत्त आदि एहिसँ नीक परिचय प्राप्त कएलनि । होरीसँ १५ दिन पहिनेसँ आयोजन आ प्रस्तुतिक क्रम जारी रहैत छलैक । ... तँ असर तँ पड़िते छैक ने ।

११. एखन अपने बालकविता-गीतपर बेसी ध्यान देने छिऐक ?

हँ, एखन हमरा बालगीत आकर्षित कएने अछि । हमर मित्र परमेश्वर हमरा एम्हर घुमाबक बरोबरि प्रयत्न कएलाह अछि आ तकरे प्रभाव थीक । बालगीतक रचनामे वृद्धि हएबाक चाही । नेनभुटकाक गीतसभकेँ संगीतबद्ध सेहो करबाक चाही जाहिसँ बच्चासभकेँ ई नहि लगैक जे ओकर अपन मातृभाषामे एकर आभाव छैक । ..... हम एहि दिशामे प्रयत्नशील छी । हमरासभद्वारा सञ्चालित जानकी एफ.एम.क स्टूडियो नीक छैक । शिघ्र एकगोट बालगीतक एल्बम निकालक योजनापर काज भऽ रहल छैक ।

१२. एखनतक अपनेक कएगोट पोथी प्रकाशित भेल अछि ?

ह्मर एकगोट छोटछिन कविता संग्रह आन्दोलन, वीपी कोइरालाक प्रसिद्ध उपन्यासिका मोदिआइन जे महाभारतपर मिथिलाञ्चलक परिवेशमे लिखल अछि तकर मैथिली रुपान्तरण, माल्हो कथा संग्रह, संघीयताक सम्बन्धमे स्वीस विद्वान डा.निकोल टपरविनक लेखसभक मैथिली अनुवाद – एतेक मैथिलीमे । ट्रेड यूनियनः एक परिचय, संघीय स्वशासनतिर नेपालीमे । सभ मिलाकए छ टा ।

धन्यवाद ! अपन बहुमूल्य समय दऽ उतारा देबएलेल ।

 ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

 मुन्नाजीसँ रमेश रंजनक अन्तर्वार्ता

१. अहाँक रचनात्मक प्रवृति कोना जागल ? पहिल बेर की लिखल, कि छपल ?

हम लेखकसँ पहिने रंगकर्मी छलहुँ । मिनाप जनकपुरसँ संलग्नता छल । नाटक, ताहूमे

अभिनयमे रमल रहै छलहुँ । मिनापक वातावरण साहित्यिक सेहो छलै । डा. धीरेन्द्र, डा.

विमल,महेन्द्र मलंगिया सन गुरुक सानिध्य भेंटल । मिनापक तात्कालीन अध्यक्ष योगेन्द्र साह

नेपालीक अभिभावकत्व । ओहि कालखण्डमे श्यामसुन्दर शशि, धर्मेन्द्र झा, धीरेन्द्र प्रेमर्षि,सुनील

मल्लिक सन समकालीन मीत्र रचना करऽ लागल छलाह । हुनका लोकनिक दवाबसँ हमहूँ

किछु किछु लीखऽ लगलहुँ । हमर पहिल रचना छल, कविता जकर शिर्षक छलै कचोट, आ

हमर पहिल कविते प्रकाशितो भेल छल जकर शिर्षक छलै साकार । अइ कविताक नेपाली

अनुवाद तात्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानक पत्रिका समकालीन सहित्यमे प्रकाशित

भेल छल ।

२. शुरुआतेसँ कथा लेखन केलहुँ ? आओर कि सभ लिखलहुँ अछि ?

नइ, कथा तँ हम बहूत बादमे लीखऽ लगलहुँ । सगर राति दीप जरए साहित्कि क्षेत्रमे जागरण

लाबि देने रहै । जर्वदस्त चर्चा भऽ रहल रहै । मुदा मैथिलीक केन्द्र जनकपुरमे आयोजन नइ भऽ

सकल रहै । जनकपुरमे आयोजन लएबाक हेतु हमरा कथा लीखऽ पड़ल रहए । पन्द्रहम् समारोह

पैटघाटमे हम कथा लीख कऽ सहभागी भेंलहुँ आ सोलहम समारोह जनकपुरमे हमरा

संयोजकत्वमे सम्पन्न भेल । आओर विधामे लिखबाक बात छै तँ हम सभ ओहिठामक लोक

छी जाहिठाम संख्यात्मक रुपें लिखनिहारक अभाव रहलै । तें आवश्यकता अनुसार लिखबाक

विवशता सेहो रहल । ओना कविता, कथा, नाटक, उपन्यास, आलोचना, वृतचित्र, फिल्म आ

टेलीसिरियलक लेखन सेहो कऽ रहल छी ।

३. अहाँक कथा कथानक कि रहैछ, आ ओकर मूल ध्येय की रहैछ ?

हमरा कथाक विषयवस्तुक लेल बौआए नइ पड़ैए । अपन परिवेश आ आहि भितरक द्वन्दके

चिन्हित करै छी । ओकर सुख, दुःख, आन्नद, पीड़ा, संघर्षके भोक्ताक रुपमे अनुभूति करै छी ।

एकटा चेतना हमरा निर्देशित करैत अछि ओ छै माक्र्सवादी सौन्दर्य चेतना । हमरा बुझने

हमर साहित्यक ध्येय के आओर स्पष्टीकरण्क अवश्यकता नइ छै ।

४. अहाँ अपन कथा लेखनक प्रारम्भिक दौरसँ अखन धरिक यात्रामे की परिवर्तन पबैत छी ?

विचारक स्तरपर खास नइ । प्ररम्भमे आवेश छल अनियन्त्रित आवेश, आब थोड़े नियन्त्रणमे

अछि । कहन शैली पहिनेसँ थोड़े परिपक्व बूझारहल अछि । अर्थात शिल्प आ भाषाक स्तरपर

थोड़े प्रभावशाली लेखन कऽ रहल छी, सन बुझाइए ।

५. नेपाली आ मैथिली कथा साहित्य मध्य मैथिली कथा कतऽ अछि ? दुनूमे समानता आ भिन्नता की छै ।

जे भारतीय मैथिलीमे हिन्दीक आगू मैथिलीक अवस्था छै । नेपाली राज्य संरक्षित भाषा छै ।

राज्य अपार संभावना बनौलकै ओहि भाषामे तें संख्यात्मक आ गुणात्मक दुनू रुपें पर्याप्त लेखन

भऽ रहल छै । मैथिलीमे सेहो समकालीन कथा साहित्यिक प्रतिनिधि कथा लेखन होइ छै, मुदा

संख्या अत्यन्त न्यून छै । समानता आ भिन्नताक बात जहाँ तक छै तँ देश भितरक

औपनिवेशिकताके भोगिरहल अछि मिथिलाक लोक । ओ समानता चाहैए, नागरिक अधिकार

चाहैए, मुक्तिक छटपटी छै मैथिली साहित्यमे, नेपाली शासक वर्गक भाषा छै । मुदा नेपाली

कथामे नेपालक प्रतिनिधि कथाक अभाव छै, जातीय कथाक संकीर्ण घेरासँ बाहर नइ निकलि

सकल अछि ।

६. अहाँ रंगकर्मसँ सेहो शुरुएसँ जुड़ल रहलहुँ अछि । कि कोनो नाटको लिखलहुँ अछि ? अहाँक विचारमे लेखन आ रंगकर्ममे शुलभ आ सम्प्रेषनीय ककरा मानैत छी ?

हँ, से तँ हम अपनो स्पष्ट कऽ चूकल छी । नाटक लिखलहुँ अछि । आधा दर्जनसँ बेसी मंचीय

नाटक, ओतबे नुक्कड़ नाटक आ रेडियो नाटक सेहो खूबे लिखलहुँ अछि । हमर विचार कि ?

सर्वमान्य विचार छै जे नाटक शुलभ आ सम्प्रेषानीय होइ छै । श्रव्य आ दृश्य गुणक कारण ।

७.अहाँ अपन रंगकर्म मध्य अपनाके कतऽ मानै छी ? अहिमे मिनापक योगदान कत्ते मानै छी ?

अपना विषयमे मूल्याङकन करब कठीन होइ छै । नाटक अहूना समूह कार्य छै । तें समूहक

सफलता विफलतामे व्यक्तिक सफलता विफलता जुड़ल रहैत छैक । जँ मिनाप सफल छै तँ

ISSN 2229-547X VIDEHA

हमहूँ सफल छी । हमरा रंगकर्मक प्रारम्भमे हमर गाम परवाहा आ हमर रंग यात्राके एतऽ धरि

पहुँचाबऽमे सम्पूर्ण योगदान मिनापे के छै ।

८. नेपाली रंगकर्मसँ मैथिली रंगकर्म स्तरीयताक मादे कत्तेक लग आ दूर अछि ?

विश्व रंगमंचक प्रयोग आ प्रविधिसँ नेपाल परिचित भऽ रहल अछि । नेपालसँ हमर अर्थ अछि

कोनो खास भाषा नइ सम्पूर्ण नेपाल । जकरामे जहिना व्यावसायिक दृष्टिकोण छै, तकरामे

रंगमंचीय ज्ञानक विस्तार ताही रुपें भऽ रहल छै । समकालीन नेपालक रंगमंच मध्य मैथिली

अत्यन्त सम्मानित अवस्थामे अछि । मुदा नेपालीक तुलनामे मैथिलीक रंग समूह कम छै ।

नेपालीमे सेहो स्थायी स्वरुपक समूह बहूत थोड़ छै । मुदा एम्यचोर थिएटर कएनिहारक संख्या

बहूत छै । तखन मिनाप मात्रक प्रतिनिधित्वसँ गर्व कएल जा सकैए ।

९. कहल जाइ छै महेन्द्र मलंगिया मिनापके गोड़सि लेने छलाह । सभ रंगकर्मी हुनक पछलग्गू
मात्र भऽ कऽ रहि गेल छल । हुनका गेलाक बाद अपने सभके विकसित होएबाक मौका भेटल
अछि कि नइ ?(रामभरोस कापड़िक मिथिला दर्शनक लेख)

अपनेक प्रश्नपर हमरा ठहक्का लगएबाक मोन होइए । मुदा ई विचार अपने कत्तौसँ ग्रहण केलहुँ

अछि तें बातके स्पष्ट करब उचित । ३२ वर्षक अइ संस्थाके एक गोट व्यक्ति कोना कब्जा कऽ

सकैत अछि ? ई मिथ्या आ काल्पनिक सोच छै । कोनो एक गोटेक सृजनात्मक क्षमताक बलपर

मात्र मिनाप ने तँ ई उपलब्धी प्राप्त केलकैए ने ऊँचाइ । महेन्द्र मलंगिया मिनापक सिर्जनात्मक

नेतत्वकर्ता छलाह, छथि । समूहक मान्यता आ समूह संचालन विधिसँ संस्था निर्देशित होइ छै

ISSN 2229-547X VIDEHA

आ नेतृत्व सेहो । मलंगिया सर ओहिसँ फरक नइ छलाह । सामूहिक निण्र्राय आ व्यक्तिगत

जिमेबारीक मान्यतासँ मिनाप संचालित होइत रहल अछि । स्वयं द्वारा निर्धारित अनुशासनके

कियो तानाशाहक क्रुरता बुझै छै तँ बूझक लेल छोड़ि देल जाए ।

हुनका गेलाक बाद विकसित होएबाक बात छै तँ ओ एखनो गेल नइ छथि ओ भौतिक रुपमे

थोड़े कम उपस्थित भऽ रहल छथि । मिनापक एक एक गोटेक व्यक्तिगत सफलता उदाहरणीय

छै । आ प्रत्येक व्यक्तिक सफलतामे मलंगियाजीक प्रेरक व्यक्तित्वक पैघ योगदान छै ।

१०.मिनापसँ एखन सरिपहुँ अहाँक अटूट जुड़ाब देखल जा रहल अछि, एखन धरि अहाँ मिनापके कि देलियै आ मिनाप अहाँके की देलक ?

जरुर ! मिनाप हमरा सभकिछु देलक । व्यक्तिगत प्रगति आ सार्वजनिक जीवनमे सम्मानक

अन्तर कारण मिनाप अछि । देशक नाट्य सङ्गीत क्षेत्रक सर्वोच्च संस्था नेपल सङ्गीत तथा नाट्य

प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषद सदस्य आ नाट्य विभाग प्रमुखक नियूक्तीमे मिनापक सेहो मुख्य

भूमिका छै । हम की देलियै तकर मूल्याँकन अन्य मीत्र लोकनि करथि । हँ, एतेक जरुर कहव जे

अपना जीवनक सर्वाधिक उर्जाशील समय मिनापके देलियैक अछि ।

११. अहाँ अपना अगिला पिढ़ी (बेटी प्रियंका) के अहिसँ जोड़बाक कि ध्येय अछि ? कि मिनापक कलाकार मिनापसँ (यथा फिल्म अभिनय) आगू जा सकल अछि ? (अपनाके बाड़ि कऽ कहू)

ओकरो हमरे जकाँ रंगकर्म करबाक इच्छा भेलै, हम रोकलियै नइ बड्ड प्रोत्साहित कएलियै ।

समान्यतः ई कहल जाए जे हम रंगकर्मके नइ तँ अछूत कार्य मानलियै ने निकृष्ट तें नइ

रोकलियै । मिनापक कलाकार मिनापसँ आगू ? ई कोना हतै ? मिनापक कोनो कलाकारक

मिनापसँ आगूक ध्येय नइ छै । कलाक सम्पूर्ण साधना आ क्षमतमके मिनापक हेतु समर्पित करऽ

चाहैए मिनापक कलाकार । मिनापसँ आगू अपने फिल्म दिश संकेत केलहुँ अछि, तँ ई मान्यता

हम स्वयं नइ रखै छी । नाट्य अभिनयसँ पैघ फिल्म अभिनय नइ भऽ सकैए । चर्चा आ

व्यावसायिक सफलता आगू जएबाक मापदण्ड नइ छियै । ओना फिल्मसँ परहेज नइ छै

मिनापक कलाकारके । ओहो अभिनये छै । मिनापक अधिकांश कलाकार फिल्म क्षेत्रमे सेहो

स्थापित अछि । मुदा मिनापक अधिकांश कलाकार फिल्मसँ बेसी नाटकके प्रथमिकता दैए ।

१२.मैथिली रंगकर्ममे तकनिकी सुलभताक कारण चूनौती आओर बढ़ि गेलैए ? रंगकर्मक भविष्य कि छै ?

जतऽ चूनौती छै ओत्तै संभावना छै । तकनिकक सुलभता तँ छै, मुदा मैथिली रंगमञ्च ओहिसँ

परिचित भऽ रहल अछि कि नइ ? समान्यतः मैथिली रंगकर्म मध्कालीन अवस्थामे अछि ।

भौतिक पूर्वधारक अभाव छैके । मिथिलाक मूल भूमिमे रंग गतिविधि शून्य छै । अप्रवासी रंगकर्म

कृतिम स्वाँस आपूर्ति मात्र छै । तें पाठ आ मंच दुनूक तकनिकी वैशिष्ठ्यक निरन्तर अन्तरघुलन

मैथिली रंगमञ्चक भविष्य निर्धारण करतै ।

१३. नेपालमे मैथिली सहित्यक भविष्य केहन देख रहल छियै, कत्ते दिन टिक पाओत ?

भविष्य बेजाए नइ छै । भाषिक चेतनाक स्तर उठलैए । खतरो ओतबे बढ़लैए । मुदा समग्रतामे

बहूत चिन्ताजनक अवस्था नइ छै । कत्ते दिन टिक पाओत ? एखन भविष्यवाणी नइ करी । ई

मृत्यूक समय निर्धारण जकाँ भऽ जाइ छै । भाषाके मूर्त बनबै छै साहित्य कला तें ई मरब तँ

स्वयंके मृत्यू छै एकर कल्पना नइ करी ।

१४. मैथिली साहित्यपर शुरूसँ जाति विशेषक बर्चस्व रहलै । आब झूण्डक झूण्ड सक्रिय
पिछड़ल समूदायक लोकक प्रवेशसँ एकर भविष्य केहन मानिरहल छी ?

ई यर्थाथ छै । मिथिलाक सामाजिक संरचना सामन्ती रहलै । कर्मकाण्डीय लोकक बर्चस्व ।

संस्कृतक विरुद्ध आम लोकक भाषाके सिर्जनात्मक अभिव्यक्ति देबाक लेल मैथिलीक जन्म भेल

छलै । मुदा संस्कृत पूनः अजगर जकाँ गछेर लेलकै । आम लोक अहि भाषासँ दूर होइत गेल ।

खाँटी मैथिली पिछड़ल वर्ग संगे छै । अधिकांश गाममे रहनिहार अहि वर्गक संग अभिव्यक्तिक

हेतु दोसर भाषा नइ छै । संस्कारमे मैथिली छै । पूजा, पाठ, अनुष्ठान, गाथा सभमे मैथिली छै ।

कथित देव भाषाक प्रभावसँ बँचल अछि ओ समूदाय । तें सूच्चा मैथिल जँ मैथिलीके नेतृत्वमे

आँगा अबैत अछि तँ अहिसँ आह्लादकारी आओर की हेतै ।

१५.कि मिनाप जाति पाँतिक फाँट मध्य टीकल अछि ? कि ओहो कोनो द्वन्दक शिकार अछि ?

नेपालमे अखन ई विषय प्रवेशे कएलकै अछि । समान्यतः ई वहशक विषय छै । वहश करब

समस्याके निरुपण करब छियै । कानो गम्भिर द्वन्द नइ छै मिनापमे ।

१६.अन्तमे अपन पछिला आ नवका रचनाकार , रंगकर्मी कि कहऽ चाहब अहाँ ?

कोनो खास नइ । बहूत किछु कहि चूकल छी, आब कहब आवश्यक नइ छै । अनेरो उपदेश नइ

छाँटल जाए ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

नेपाली साहित्यक विज्ञ व्याख्याता (सेवा निवृत्त आ मैथिलीक प्रबुद्ध रचनाकार श्री राजेन्द्र बिमलसँ हुनक रचना यात्रा मादेँ गप केलनि विहनि कथा रचनाकार श्री मुन्नाजी।

हम पुछैत छी: मुन्नाजीसँ राजेन्द्र बिमलक अन्तर्वार्ता

मुन्नाजी: नमस्कार राजेन्द्र बिमलजी।

राजेन्द्र बिमल: मान्यवर मुन्ना जी, जय मैथिली।

मुन्नाजी:बिमलजी, अपनेक मातृभाषा मैथिली रहलाक पछातियो अपने नेपाली भाषा साहित्यमे उच्च अध्ययन आ अध्यापनमे अग्रसर रहलौं, एकर कोनो विशेष कारण?

राजेन्द्र बिमल: मैथिली मातृभाषा रहलो संता ‘‘नेपाली भाषा साहित्यक अध्ययन अध्यापनमे जीवन समर्पित करबाक अन्तःप्रेरणा उद्भूत भेल दू गोट प्रमुख उद्दीपनसँ’’ (क) प्राथमिक कक्षासँ ‘‘स्नातकोत्तर कक्षाधरि नेपाली (राष्ट्रभाषा) अध्येताक संख्या नेपालमे सर्वाधिक होएबाक कारणे ‘‘राष्ट्रीय स्तरधरी अपन परिचिति स्थापित करबाक अवसर अपेक्षाकृत सहज अनुभव करब। उल्लेखनीय थिक जे राष्ट्रभाषा नेपालीक अध्ययन नेपालमे प्रवेशिका कक्षाधरि अनिवार्य थिकै । मैथिलीक अध्ययन अध्यापन नेपालक मात्र दू गोट महाविद्यालय धरि सीमित अछि आ ताहूमे विद्यार्थीक संख्या नगण्य भेल करैछ । नेपालमे मैथिली अध्ययन अध्यापनक अवस्था भारतमे उर्दू अध्ययन अध्यापनक अवस्थासँ ‘‘सेहो ऋणात्मक अछि ।

(ख) मैथिली अध्ययन अध्यापनमे अपन आधारभूत आर्थिक भविष्य नितान्त असुरक्षित अनुभव करब ।

मुन्नाजी:मैथिली साहित्य रचनाक शुरुआत कोना केलौं आ पहिल बेर की लिखि कतऽ छपलौं:

राजेन्द्र बिमल: किछु साहित्यप्रेमी गुरुलोकनिक प्रेरणासँ “दसे वर्षक आयुसँ” किछु ने किछु जोरती जोरैत रहबाक लेल प्रेरित होइत रहलहुँ। मुदा, हमर यत्किञ्चित प्रतिभावल्लरीक जाहि स्तम्भकेँ पाबि पल्लवन पुष्पन भेल तिनक नाम थिक डा. धीरेन्द्र । अध्ययनकालसँ अध्यापनकालधरि प्रायः नित्य हुनकासँ भेंट होइत छल आ प्रत्येक भेंटमे ओ किछु नव लिखबाक लेल प्रेरित करैत छलाह। हमर पहिल मैथिली कथा “मुइल बच्चा” १९६२ (१) ई.क “मिथिला मिहिर”मे प्रकाशित भेल छल ।

मुन्नाजी: अहाँ नेपाली साहित्यक व्याख्याता रहलैं अछि। की अहाँ नेपालीमे सेहो रचना केलौं? ओकर नेपाली साहित्यकार वा पाठक मध्य कतेक महत्व भेटल?

राजेन्द्र बिमल:प्रकाशन सुविधाक दृष्टिए मैथिली साहित्य संसार एक गोट विराट मरुस्थल थिक जाहिमे एकाध छोटछोट मरु

उद्यान प्रकट होइत अछि, विलुप्त भए जाइत अछि। जएह हरियर गाछ देखैत छी से निसर्गक चमत्कार बूझू । राजकीय संरक्षणसँ सिंचित नेपाली भाषा साहित्यक संसार हरियर कचोर अछि, उर्वर आ नित्य सम्बर्धनशील । तैँ नेपालीमे हमर दर्जनधरि पोथी प्रकाशित भए सकल । पाठकके संख्या बेसी थिकै । तँ छोटो छिन कथा प्रकाशित भेल नहि कि पत्रक पथार लागि जाइत अछि । मैथिलीक पाठक संख्या से हो कम (लगभग जतबे लेखक, ततबे पाठक) आ हुनकामे “रिस्पोन्स” करबाक प्रवृत्ति से हो तेहन जीवन्त नहि । नेपाली भाषा साहित्यमे योगदान हेतु देल जाएबला पुरस्कारमे सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार “जगदम्बा श्री” सँ सम्मानित होएब हमर सौभाग्य थिक । लगभग तीन दर्जन संस्थासँ सम्मानित/ पुरस्कृत भेल छी ।

मुन्नाजी:नेपाली आ मैथिली साहित्यक स्तरक आधारपर दुनूमे कतेक समता वा विषमता छै:

राजेन्द्र बिमल: संख्यात्मक आ गुणात्मक दुनू दृष्टिए नेपाली साहित्यक अवस्था घनात्मक अछि । प्रभाववादी, प्रतीकवादी, विम्ववादी, घनत्ववादी, आस्तित्ववादी, उत्तरआधुनिकतावादी,

विनिर्माणवादी, नारीवादी, उत्तरऔपनिवेशिकतावादी प्रभृत अत्याधुनिक लेखनशैली आ विषयवस्तुसँ समृद्ध नेपाली साहित्य सरिपहुँ विश्व साहित्यसँ प्रतिस्पर्धा करबाक तैयारीमे अछि । १९६० क दशकसँ एखनधरि मैथिली साहित्यक विकासमे शिल्प वा कथ्यक दृष्टिए बहुत गतिशील विकासक्रम परिलक्षित नहि होइत अछि । विश्व साहित्यमे उठि रहल अनेक प्रवृत्ति लहरिक आरोह-अवरोह, आलोड़न विलोड़नसँ अधिकांश लेखक आ पाठक अपरिचित जेकाँ लगैत छथि । मृत्तिका मोह वा ‘‘नास्टाल्जिया’’ कने बेसिए गछेरने अछि।

मुन्नाजी:अपनेक मैथिलीमे टटका गजल संग्रह ‘‘सूर्यास्तसँ पहिनें’’ प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त आर की सभ प्रकाशन लेल तैयार अछि।

राजेन्द्र बिमल: मैथिलीमे लीखल अनेक पाण्डुलिपि प्रकाशनक बाट ताकि रहल अछि

(क) लगभग पाँच गोट कथा संग्रह

(ख) एक गोट उपन्यास (चान अहाँ उदास छी १९६३ ई.)

(ग) एक गोट गीत संग्रह

(घ) एक गोट कविता संग्रह

(ङ) एक गोट निबन्ध संग्रह

(च) दू गोट आलोचना संग्रह

(छ) एक गोट भाषा विज्ञानक पोथी

(ज) एक गोट नाटक संग्रह आदि

(A comparative study of the Morphology of Maithili Nepali and Hindi Language) आदि ।

मुन्नाजी:मैथिली साहित्य मध्य वर्तमान समयमे गजलक की दशा अछि, एकर भविष्यक की दिशा देखाइछ?

राजेन्द्र बिमल: गजल अत्यन्त लोकप्रिय विधा थिक । मैथिलीमे से हो खूब लीखल जा रहल अछि आ पढलो जा रहल अछि । बहुत गजलकार एकर व्याकरणसँ कम परिचित छथि । मुदा भविष्य उज्जवल छैक । मैथिली गजलमे अपन निजात्मकताक विकास शुभ संकेत थिक ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

मुन्नाजी:मैथिलीक प्रकाशित गजलक संगोर (कतेको गजल संग्रह) आ मायानन्द मिश्रक गजलकेँ गीतल कहि प्रकाश्यक मादेँ गजेन्द्र ठाकुर एकरा अस्तित्वहीन कहि अपन सम्पादकीय आलेख माध्यमे अवधारणा स्पष्ट केलनि।अहाँक ऐपर अपन स्वतंत्र विचार की अछि?

राजेन्द्र बिमल: संगोर सभ नहि देखल अछि । आदरणीय मायाबाबूक गीतल (गीत-गजल) एक गोट प्रयोग थिक । हम कोनो सृजनकेँ निरर्थक नहि बूझैत छी आ लेखन स्वतंत्रतामे विश्वास रखैत छी ।

मुन्नाजी:नेपाल आ भारतक मैथिली रचनाकारक मध्य कखनो कऽ फाँट देखाओल जाइछ। ऐ फाँटकेँ भरबाक लेल अहाँक की विचार?

राजेन्द्र बिमल: भाषा, साहित्य, संस्कृतिक कोनो राजनैतिक भूगोल नहि होइत छेक जेना आकाशमे इन्द्रधनुष वा धरतीपर जलप्रवाहक कोनो सीमा स्तम्भसँ छेकल नहि जा सकैत अछि । हमर आकांक्षा रहल अछि जे सरकारी/ गैरसरकारी स्तरपर एहन साझा मञ्चक निर्माण हो जे मैथिली भाषा, साहित्यक सम्बर्धन हेतु मीलिजूलि कए नीति आ कार्यक्रमक निर्माण करए, तकरा कार्यान्वित

करए । मैथिली आन्दोलनक हेतु सेहो एहन मंचक अपरिहार्यताक अनुभव करैत छी । भैयारी विभेद आ बँटबारा जातीय अस्मिताकेँ छाउर करबाक लेल शत्रुशक्तिक हेतु लंकादहनक मार्ग प्रशस्त कए दैत छैक । जमीन बँटि जाइत छैक, भाय भायक हृदय नहि बटबाक चाही, ई बोध जगाएब इतिहासक वर्तमान कालखण्डक मैथिली सर्जक आ चेतनासम्पन्न मैथिलक हेतु नैतिक दायित्व थिक ।

मुन्नाजी: अपने रचनामे सक्रिय रहलहुँ अछि तखन प्रकाशित पोथी एते विलम्बे किएक आएल? सेवा निवृत्तिक पछाति पहिल संग्रहमे गजले संग्रहकेँ किए प्राथमिकता देलौं, एकर कोनो विशेष कारण?

राजेन्द्र बिमल: जनकपुरमे रहि स्थानीय स्तरपर पोथी प्रकाशन करब असहज । टङ्कणक असुविधा, प्रेसक असुविधा (कतबो प्रूफ पढब, अशुद्धि जहिनाक तहिन) स्वयं से हो शारीरिक रुपैं एहि दिशामे बहुत सक्रिय रहबाक अवस्थामे नहि छलहुँ आ एखनहु नहि छी । तैँ .... । ''गजले'' छपलहुँ, तकर कारण हमर प्रिय सहयोगी प्रो.परमेश्वर कापडिक जोर ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

मुन्नाजी: मैथिली साहित्यक रचना मादेँ अगिला पीढ़ीकेँ की सनेस देबऽ चाहब?

राजेन्द्र बिमल: "कीर्तिलता" मे मैथिल कुलपुरुष, मंत्रदष्टा महाकवि विद्यापतिक एक गोट ऋचा थिकैन्हि, जकर अर्थ थिक जे कालक अखण्ड प्रवाहमे ओही जातिक कीर्तिक लता पसरैत अछि जे अक्षरक खम्भा दए अक्षरेक मचान बन्हैछ । एकर मर्म बूझि मिथिलाक भविष्णु सपूत सुपुत्री लोकनि अथक अक्षर साधनाद्वारा बारल अपन गौरवदीपक अमर आलोकसँ विभ्रान्त विश्वक हेतु मंगल पथ सदैव उद्भासित करथि, से शुभ कामना ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।


गजेन्द्र ठाकुर

उल्कामुख (मैथिली नाटक)

तेसर कल्लोल

(आचार्य व्याघ्र एकटा शतरंजक घनक चारू कात घूमि रहल छथि। आचार्य सिंह दोसर शतरंजक घनक चारू कात घूमि रहल छथि।)

आचार्य व्याघ्र: तत्वचिन्तामणिमे हमरा सभक चर्चा गंगेश केलन्हि मुदा आब लोक हमर सभक असल नाम सेहो बिसरि गेल। हमर सभक पोथी सेहो सुड्डाह भऽ गेल।

आचार्य सिंह: मुदा अपना सभक तँ कोनो सरोकार अछिये नै, तखन?

आचार्य व्याघ्र: हँ, आ मुइलाक बाद भूत राकशसँ नीक व्याघ्र आ सिंह कहेनाइ भेल ने।

आचार्य सिंह: मुदा अपना सभक तँ कोनो सरोकार छलैहे नै, दर्शनक सिद्धान्तमे गंगेश द्वारा कएल चर्चा...

आचार्य व्याघ्र: तहीसँ हमरा सभ अछोप भऽ गेलौं किने।

आचार्य सिंह: मुदा ओ तँ आनो लोकक चर्च तत्वचिन्तामणिमे केने छथि। ओ सभ किए अछोप नै भेलाह...

आचार्य व्याघ्र: कारण हुनका सभक नाम गंगेश लिखने रहथि। मुदा अपना सभक लेल ओ आचार्य सिंह आ आचार्य व्याघ्र मात्र लिखने छथि। से गंगेशक कविता बनि गेल उल्कामुख आ हम सभ बनि गेलौं व्याघ्र आ सिंह। गंगेशक बेटा वर्द्धमान गंगेशक विषयमे लिखलन्हि "सुकवि कैरव काननेन्दुः"। मुदा कियो खोजो केलकै चौपाड़िपर जे जँ गंगेश कवि रहथि तँ हुनकर कविता की भेल। आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंहकेँ जँ गंगेश आदर देलन्हि तँ से पोथी सभ सेहो सुड्डाह भऽ गेल।

आचार्य सिंह: कोन रहस्य छै ऐ मे।

आचार्य व्याघ्र: असुरक्षा आचार्य सिंह। गंगेश केलक रक्षा हमर सभक तर्कक श्रीहर्षक आक्रमणसँ, आ बनेलक नव्य-न्याय। नबका शास्त्र, नबका न्यायशास्त्र। ओहो अजीबे भेल, पिताक मृत्युक पाँच साल बाद भेलै ओकर जन्म आ चर्मकारिणीसँ केलक विवाह। आ ओइ विवाहसँ जे पुत्र भेलै वर्धमान से फेर मिलेलक न्याय आ नव्य-न्यायकेँ। मुदा वर्द्धमान अपन पिताक कविताकेँ नै बिसरल। असुरक्षा आचार्य सिंह, चौपाड़ि मध्य बाहरक विद्यार्थीकेँ तत्वचिन्तामणिक प्रतिलिपि पक्षधर नै करऽ दै छलखिन्ह, ने सार-

संक्षेप लिखऽ दै छलखिन्ह। चौपाड़िमे वर्द्धमानक बाद सभ कियो आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह आ उल्कामुख सभकेँ काल्पनिक बना देलक।

आचार्य सिंह: मुदा ऐसँ सर्जन कोना हएत आचार्य व्याघ्र। बिन सर्जनक चौपाड़िपर विद्यार्थी आत्म अभिव्यक्ति कोना करताह। योग्यता कोना बढ़त। पुरान इतिहास व्याघ्र, सिंह आ उल्कामुख बनि नै रहि जाएत? प्रतिबन्ध, प्रतिबन्ध..फेर ज्ञानक विस्तार कोना हएत।समाजक एक वर्ग दोसरसँ कटि जाएत... प्रतिबन्ध, प्रतिबन्ध..ऐ सँ स्नेह बढ़त वा निरपेक्षता बढ़त? जे अहाँकेँ करबाक हुअए करू, जे हमरा करबाक हएत हम करब..की समाजक यएह गति हएत?

आचार्य व्याघ्र: आचार्य सिंह। की ऐ विस्मरणकेँ रोकबाक प्रयास नै हेबाक चाही?

आचार्य सिंह: हेबाक चाही आचार्य व्याघ्र। कोनो चीजक विस्मरण तावत धरि सम्भव नै जाधरि ओकरा हम सभ बुझनाइ नै छोड़ि दिऐ।

आचार्य व्याघ्र: बुझि कऽ मोन राखनाइ, ठीक कहलौं आचार्य सिंह। तँ चौपाड़िपर ई व्यवस्था भऽ रहल हएत जे बिनु बुझने पाठ विद्यार्थीकेँ यादि कराएल जाए जइसँ सभ बिसरि जाथि गंगेश आ वल्लभाकेँ।

आचार्य सिंह: मुदा हम सभ संकेतक प्रयोग कऽ सकै छी। संकेतसँ स्मरण विस्मरण नै बनत। अपूर्ण रहत चौपाड़िक पाठ, आ अपूर्ण पाठक विस्मरण नै भऽ सकैए, विस्मरण होइए मात्र पूर्ण पाठ।

आचार्य व्याघ्र: मुदा कोन संकेत आचार्य सिंह..

आचार्य सिंह: उल्कामुख...

(आकाशवाणी होइए....

उल्कामुख..उल्कामुख... उल्कामुख ... उल्कामुख ... आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह वाम रंगशीर्ष दिश जाइ छथि। तावत आचार्य शरभ दूटा शिष्य- शिष्य खिखिर आ शिष्य शाही-क संग प्रवेश करै छथि आ रंगपीठ होइत दहिना मत्तवर्णीपर आबि जाइ छथि। दुनू शिष्य एकटा शतरंजक घन उठा कऽ अबै छथि। प्रकाश दहिना मत्तवर्णीपर केन्द्रित भऽ जाइत अछि।)

आचार्य सरभ: ई गंगेश आ वल्लभाक विवाह... शतरंजक खाना सभ दैत्याकार बनि जाएत, सात सए सालमे जाति खतम भऽ जाएत..किछु करू... रोकू..विस्मरण... विस्मरण ... .शिष्य खिखिर, शिष्य शाही।

शिष्य खिखिर: आचार्य सरभ, अपूर्ण पाठक विस्मरण नै भऽ सकैए, विस्मरण होइए मात्र पूर्ण पाठ।

शिष्य शाही: आचार्य सिंह आ आचार्य व्याघ्रक शिक्षासँ निकलल अछि संकेत लिपि, संकेतसँ स्मरण विस्मरण नै बनत आचार्य सरभ। ओ पाठ अछि उल्कामुख..

आचार्य सरभ: की अछि ई उल्कामुख? शिष्य खिखिर, शिष्य शाही..की अछि ई उल्कामुख? बड़ड नाम सुनै छिऐ एकर। मुदा चौपाड़िपर कियो बताएत जे की छिऐ ई उल्कामुख..

शिष्य शाही: आचार्य सरभ, कोना देखब ई उल्कामुख। ई आचार्य सिंह आ आचार्य व्याघ्रक शिक्षाक प्रयोग अछि जे गंगेश आ वल्लभा केने छथि। जे अछि संकेत मात्र, संकेत जे अछि चारू कात, आ जे अछि कतौ नै।

आचार्य सरभ: मुदा ओ संकेत, ओ उल्कामुख ऐ बँसबिट्टीकेँ पार केलक कोना शिष्य शाही।

(शिष्य शाही शिष्य खिखिर दिश बकर-बकर तकैत अछि।)

शिष्य खिखिर: आचार्य सरभ... खतम तँ कैये देलिऐ हम सभ.. आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंहकेँ जँ गंगेश आदर देलन्हि तँ से पोथी सभ सेहो सुड्डाह भऽ गेल। गंगेशक कवित्वक चर्चा सुड्डाह भऽ गेल..तँ हुनकर कविता बनि गेल उल्कामुख..वल्लभा बना देलन्हि ओकरा उल्कामुख..आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह आ गंगेश..ऐ तीनू नामक भय.. पुरान इतिहास व्याघ्र, सिंह आ उल्कामुख बनि गेल तँ हमहू सभ तँ सरभ, खिखिर आ शाही बनि गेलौं। सरभ तँ कल्पित भऽ गेल, शाही आ खिखिर सेहो खतम भेल जाइए.. प्रतिबन्ध, प्रतिबन्ध..फेर ज्ञानक विस्तार कोना हएत?

आचार्य सरभ: हम कल्पना छी शिष्य खिखिर?

शिष्य शाही: आचार्य, अहाँ कल्पना छी आ हम सभ कल्पना बनैबला छी।चौपाड़ि मध्य बाहरक विद्यार्थीकेँ तत्वचिन्तामणिक प्रतिलिपि

पक्षधर नै करऽ दै छलखिन्ह, आब देखियौ चौपाड़िक दशा..बाहरक विद्यार्थी तँ छोड़ू एतुक्को विधार्थीक एतए अभाव भऽ गेल अछि।

आचार्य सरभ: हम कल्पना? आचार्य सरभ भूतकालक कल्पना आकि आचार्य सरभ भविष्यकालक अछि कल्पना..विस्मरण..दोसराकेँ विस्मरण सिखबैत स्वयं विस्मरित भऽ गेल अछि आचार्य सरभ। विस्मरण मंत्र..ई उल्कामुख बनि गेल अछि भय.. दोसराकेँ विस्मरण सिखबैत स्वयं विस्मरित भऽ जाइए लोक।

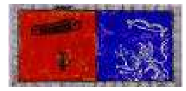
(आकाशवाणी होइए.....

उल्कामुख..उल्कामुख... उल्कामुख ... उल्कामुख... आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह वाम रंगशीर्षपर प्रकाश एलापर साकांक्ष भऽ छथि। आचार्य शरभ, शिष्य खिखिर आ शिष्य शाही दहिना मत्तवर्णीपर अन्हार भेलासँ मात्र छाह बनि जाइ छथि। तीनू छाह शतरंजक घन उठा कऽ आगाँ बढ़ैत छथि।)

आचार्य व्याघ्र: हम कल्पना? भूतकालक कल्पना आकि भविष्यकालक..

आचार्य सिंह: भूतकालक आचार्य व्याघ्र, भूतकालक। भविष्य तँ वल्लभक मृत्युक सात सए साल बाद आएत..अखन तँ अदहे बीतल अछि... भविष्यकालक तँ प्रतीक्षा अछि..मुदा तावत की की कल्पना बनि जाएत... की की बचल रहि जाएत।

(सौंसे अन्धार पसरि जाइत अछि, अन्हारेमेसँ आचार्य सिंह आ आचार्य व्याघ्रक अबाज बहराइए।)

आचार्य व्याघ्र: तखन कल्पने सही आचार्य सिंह। चलू वर्द्धमान, दीना, भदरी आ उदयन लग। वएह सभ कोनो गप बतेता।

आचार्य सिंह: ई कोने बेजाए गप नै हएत आचार्य व्याघ्र। षडयंत्रकेँ तँ तोड़ैए पड़त.. मुदा तावत की की बचल रहि जाएत सएह..।

आचार्य व्याघ्र: से तँ देखिये रहल छी आचार्य सिंह। आचार्य सरभ आ हुनकर शिष्य शाही आ खिखिर, ओहो सभ चुप नै छथि, किछु ने किछु कइये रहल छथि। एकटा रटैबला मशीन बनि गेल अछि मिथिलाक विद्यार्थी। नव्य-न्याय बंगाल चलि गेल, तकर ककरो कोनो चिन्ता नै छन्हि..किए चलि गेल.. वल्लभा आ गंगेशकेँ खतम करैत करैत ओ सभ सेहो खतम भऽ रहल छथि।

आचार्य सिंह: आचार्य व्याघ्र से तँ आरो खराप भेल..हे आबि गेलाथि वर्द्धमान, दीन, भदरी आ उदयन।

(प्रकाश भऽ जाइत अछि आ मुख्य रंगमंच स्थलपर आचार्य सिंह, आचार्य व्याघ्र, उदयन, दीन, भदरी आ वर्द्धमान देखना जाइ छथि।)

आचार्य सिंह: हम सभ एतए एकत्र भेल छी

वर्द्धमान: कोनो अकाल..

उदयन: कोनो बाढ़ि..

आचार्य व्याघ्र: नै उदयन, बाढ़ि नै, नै वर्द्धमान अकाल नै..

आचार्य सिंह: वर्द्धमान सोचक अकाल छै, उदयन..क्षुद्रताक बाढ़ि आएल छै।

दीना: कोनो बाहरी शत्रु..

भदरी: मनुक्ख आकि बनैया पशु..

आचार्य व्याघ्र: नै दीना, कोनो बाहरी शत्रु नै, भदरी कोनो बाहरी नै, ने कोनो मनुक्ख आ नहिये कोनो बनैया पशु..

आचार्य सिंह: सभ अपने लोक दीना-भदरी। कोनो बाहरी शत्रु नै..कोनो बनैया नै, सभ खुट्टे पड़हक..

उदयन: जगन्नाथ मन्दिरमे उदयनक उद्घोष, जे जैँ हम तैँ तूँ पूजित होइ छह। बन्द केवार खुजि गेल।

दीना-भदरी (सम्वेत स्वरमे): जड़िमे दुनू गोटे अड़ा देलिऐ शरीर आ दरकि गेलै देवार। आ बन्न केवार खुजि गेल।

दीना: मुइल गाइक हड्डीमे फोटरा गिदर बनि नुका कऽ सलहेस दीना-भदरी आ बाघक कुश्ती देखथि। बाघक रान पकड़ि दू कात चीर कऽ फेकी हम दुनू भाँइ आ मुइल गाइक हड्डीसँ बहार भऽ फोटरा गीदर बनल सलहेस ओकरा जोड़ि देथि आ फेर ।

आचार्य सिंह: सभ सएह उपाय करू, कोना ओ गीदर फेकत आगि..

भदरी: मिथिलाक राजा मग्गहक हंशराज-वंशराजसँ नरुआरक पोखरि खुनबओलन्हि मुदा ओ जाइठ नै उठा सकल। हम दुनू भाँइ दछिनबरिया भीड़सँ जाइठ फेकलौं तँ ओ सोझे जाठिक लेल बनाएल खाधि- बॉली मे जा कऽ खसल। ई जाइठ अखनो दक्षिण दिस टेढ़ अछि।

आचार्य सिंह: सभ सएह उपाय करू, कोना ओ गीदर फेकत आगिक गोला..

उदयन: मन्त्रार्थमे महर्षि पतञ्जलिक वैज्ञानिक मन्तव्य “यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्” माने जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैत अछि सएह हमरा लेल प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे वेदे प्रमाण अछि- सेहो हमरा नामसँ भविष्य पुराणमे नै जानि किए गलत रूपेँ दऽ देल गेल। अनकर देखल बौस्तुक स्मरण अनका कोना हेतै?

आचार्य व्याघ्र: वएह स्मरण खतम कएल जा रहल छै.. स्मरण विस्मरण बनाएल जा रहल छै।

दीना-भदरी (सम्वेत रूपेँ): धामी कहलक हमरा सभकेँ काज करैले अपना खेतमे। मारि कऽ जुमा कऽ फेकलौं हम सभ ओकरा धामिन लग। धामिन गेल खिसिया आ बजेलक अपन दोस फोटरा गीदरकेँ। फोटरा गीदर मारलक हमरा सभकेँ। मुदा जिऽत जिनगी पाबि कऽ ई उल्कामुख..

उदयन: बुझलौं आचार्य व्याघ्र, बुझलौं। लोकगाथा बनबए पड़त, नाराशंसी जगबए पड़त। हमर आ गंगेशक ग्रन्थकेँ बिनु बुझने रटबाक मतलब भेल विस्मरण।

वर्द्धमान: सुकविकैरवकाननेन्दुः गंगेश बनि जेताह उल्कामुख।

आचार्य व्याघ्र: जेना हम सभ बनि गेल छी, व्याघ्र आ सिंह आचार्य सिंह।

आचार्य सिंह: आ बना देने छी चौपाड़िक शिक्षककेँ आचार्य सरभ आ ओतुक्का विद्यार्थीकेँ खिखिर आ शाही। सभटा भऽ जाएत खतम? सर्वविनाश..

दीना: मुदा दौरीवाली हिरिया तमोलिन केलक तपस्या पतिक रूपमे प्राप्ति लेल..

भदरी: आ दौरीवाली जिरिया लोहारिन केलक तपस्या पतिक रूपमे प्राप्ति लेल..

दीना-भदरी (सम्वेत रूपेँ): मरलाक बादो। गंगामे पैसि बनेलौं पत्नी दुनूकेँ। मरलाक बादो।

उदयन: गंगेश केलक रक्षा हमर तर्कक श्रीहर्षक आक्रमणसँ, नव्य-न्याय। नबका शास्त्र, नबका न्यायशास्त्र। ओहो अजीबे भेल, पिताक मृत्युक पाँच साल बाद भेलै ओकर जन्म आ चर्मकारिणीसँ केलक विवाह। आ ओइ विवाहसँ जे पुत्र भेलै वर्धमान से फेर मिलेलक न्याय आ नव्य-न्यायकेँ।

दीना-भदरी (सम्वेत रूपेँ): सत्यकामक सेहो तँ सएह हाल रहै। पिता के छलै ओकरा बुझले नै छलै, जबालाक पुत्रसत्यकाम, मुदा गौतम, मिथिलाक गौतम, हुनका सन गुरु भेटलै, वेदक अध्ययन केलन्हि। मरलाक बादो उदयन, नव आ पुरानक मेल आ विरोध होइए। वंशीधर बाभन आ बालारामक मेल भेल, लोक देवी गहील आ पौराणिक दुर्गा देवीक मेल भेल।

उदयन: मरलाक बादो दीना-भदरी।

दीना-भदरी (सम्वेत रूपैँ): हँ उदयन। फोटरा गीदर बनल दोस...संग भेलाह सलहेस। मरलाक बादो...

(अन्हार पसरि जाइत अछि, मुदा गपशप सुनबामे अबैत अछि, आचार्य सरभ आ शिष्य शाही आ खिखिरक गपशप।)

आचार्य सरभ शिष्य नढ़िया, शिष्य बिज्जी, मारू , मारू खिखिर आ शाहीकेँ मारू। विद्यामे क्षति कऽ रहल अछि ई दुनू।

(मारि-पीटक शब्द आ खिखिर आ शाहीक आर्तनाद।)

आचार्य सरभ: लगैए खिखिर आ शाही मरि गेल। शिष्य नढ़िया, शिष्य बिज्जी। आब पढ़ाइ शुरू करू। कोनो दिक्कत नै हएत आब।

शिष्य नढ़िया: सभटा रटि लेलौं आचार्य सरभ।

शिष्य बिज्जी: हमहूँ सभटा रटि लेलौं।

आचार्य सरभ: ठीक छै, अहाँ सभ जाइ जाउ।

(मंचपर प्रकाश आबि जाइत अछि, आ मात्र आचार्य सरभ मंचपर देखा पड़ै छथि।)

आचार्य सरभ: ठीक छै, आब सभ ठीक छै, धधरा हम फेकैत छी, हम आचार्य सरभ। बनबऽ दियौ ओकरा सभकेँ उल्कामुख, धधरा तँ हमहू फेकैत छी । आब हमरा बाद बनत आचार्य, हमर दुनू शिष्य बनत आचार्य, आचार्य नढ़िया आ आचार्य बिज्जी। आइ धरि तँ आचार्यमे कियो ने कियो एकटा बचिये जाइ छल जे विस्मरणमे नै रहै छल, मुदा आब हएत पूर्ण विस्मरण।

(तखने माइकसँ गीत आबऽ लगैए, आचार्च सरभ चारू कात ताकऽ लगै छथि...)

एक मूड़ी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीनियाँ

हमरा पानि सेब देवता अरैध के लबिहेँ गै

एक मूड़ी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीनियाँऽ?

हमरा गौरध्या सन अरैध के लबिहेँ गै

एक मूड़ी तुलसी जल साजि के रखिहेँ गै मलहीनियाँ

हमरा गहील सन देवता अरैध के लबिहेँ गै.....।

.....

दुर-दुर छीया ए छीया,

सरभक मुँहसँ धधरा निकलै
जरै किछु नै किए?

दुर-दुर छीया ए छीया,

.....

(रुदन स्वरमे गीत अबैए, सरभ चौंकै छथि। स्वर कानऽ लगैए, आ आचार्य सरभ हँसऽ लगै छथि, हँसिते रहै छथि। सगरे अन्हार

पसरि जाइए।आ जखन इजोत होइए तँ उदयन, दीना, भदरी आ वर्द्धमान मुख्य रंगमंचपर देखा पड़ै छथि।)

उदयन: आब पुरान नाम फेरसँ रखबाक परम्परा आएल छै। से हम उदयन। ई छथि दीना, ओ भदरी,ओ वर्द्धमान.. ...सुनै छिऐ नामक सेहो प्रभाव पड़ै छै। जे से...

वर्द्धमान: धारक कातमे आ साँपबला घरमे निवास केनिहारकेँ चैन कतऽ उदयन?

उदयन: भातढाला पोखरि आ सागढाला पोखरि जाए पड़त तत्काल।

दीना: जतए भीम भात आ साग रखैत रहथि?

उदयन हँ, आ सिमलवन सेहो।

भदरी: सेमापुर जतए अर्जुन अपन अस्त्र-शस्त्र अज्ञातवास कालमे नुकेने रहथि?

उदयन हँ, एकटा आर युद्ध शुरू भऽ गेल अछि।

वर्द्धमान:

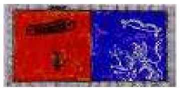
घृणाक तरहरिमे
प्रेम, मुस्कीसँ जीतब घृणा आ ईर्ष्याकेँ
घृणाक तरहरि खूनऽ दियौ
ओहि तरहरिमे घृणाकेँ गारि देबै
अपन प्रेमक शक्तिसँ

उदयन: हँसैत- मुस्कियाइत करबै आग्रह

जे परिश्रम घृणाक तरहरि बनबऽमे लगौलक
कहबै प्रेमक पोखरि काटऽ
जाहिमे प्रेमक पानि बरखा मासमे भरि जाएत
आ भरले रहत ततेक गहींर कऽ काटल रहत माटि
ओइमे हेलत प्रेम
हेलैत रहत
आ बहि जाएत, डूमि जाएत घृणा आ ईर्ष्या
डूमि जाएत आ बझा कऽ लऽ जएतै पनिडुब्बी ओकरा

दीना:
जावत हम रहब
नै छूबि सकत क्यो प्रेमक सत्यक पुत्रकेँ
कारण शक्तिसँ, ऊर्जासँ भरल अछि सत्यक पुत्र
ओकर चारूकात स्थूल-प्रेमक गिलेबासँ ठाढ़ कएल घेराबा रहत
नै करू चिन्ता।

भदरी:
आ जहिया हम नै रहब
सीखि जाएब अहाँ सभ किछु
हमर वियोग बना देत सक्कत, तीव्र आ कठोर
सत्यक विरोधीक लेल
ओहि घेराबाकेँ तोड़बाक प्रयास

संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अहाँक स्थूल-प्रेमी मित्र सभ नै हेमऽ देथिन्ह सफल

से हम रही वा नै रही
प्रयाण थम्हत नै
बतहपना बढ़त नै
मारि देब तँ मारि दिअ
मुदा मोन राखू
हमरा संगे मरत आर बहुत रास वस्तु
मुदा रहबे करत स्थूल-प्रेमी साधक सभ
आ करत पहिल नृत्य हस्त संचालनसँ
चतुरहस्त
आनन्दसँ भरल मोन
सत्य, झूठ आ तकर निर्णयक लेल
सनगोहिक चामसँ छारल डफ-खजुरी लए
डोरीक कम्पनसँ ध्वनि निकालत
गुमकी, ओहि खजुरीक ध्वनि
आ गुमकी, गुम..गुम..गुमकी...
आ तखन दोसर नृत्य होएत प्रारम्भ
शिखरहस्त
पर्वतशिखरसन
युद्धक आवाहन-प्रदर्शनक लेल
घृणाक तरहरि खूनऽ दियौ

ISSN 2229-547X VIDEHA

मारि देत तँ मारऽ दिऔ
मोन राखू मुदा
हमरा संगे मरत आर बहुत रास वस्तु
मुदा हमर वियोग बना देत सक्कत, तीव्र आ कठोर
रक्तबीजी सत्यपुत्र सभकेँ

दीना-भदरी (सम्वेत स्वरमे):
बुढ़िया डाही संग अछि
कमलक मृणाल, पुरैनि, कमलगट्टा, बिसाँढ़सँ भरल खेत
ओ नहि छथि बुढ़िया डाही
खेत जे छलै सनगर यौ
से बनल प्रेमक कमलदह
घृणाक विरुद्ध अछि हमर ई बुढ़िया डाही

(वल्लभाक अबाज अबैए, सभ चौंकि कऽ देखऽ लगै छथि।)
वल्लभाक अबाज
फेर वएह गप
आत्मरक्षार्थ
सत्यक विरोधमे
चोरबा बाजल फेर
सर्जनक सुख भेटत चोरिमे?
दोसराक कृति अपन नाम केलासँ

आकि दोसराक मेहनतिकेँ अपन नाम देलासँ
दोसराक प्रतिभाकेँ दबा कऽ
कुटीचालि कऽ आर
भाँग पीबि घूर तर कऽ गोलैसी
कोनाकेँ आँगुर काटब जे लिखब बन्न करत
तोड़ि दियौ डाँर, काटि दियौ पएर
आँखि निकालि लिअ धऽ दियौ रॉलरक नीचाँमे
पिसीमाल उठा दियौ
बड़का एलाहेँ सर्जनक सुख पएबाले
(गंगेशक अबाज अबैए, सभ चौंकि कऽ देखऽ लगै छथि।)

गंगेशक अबाज

तँ की हारि जाइ
तँ की छोड़ि दिऐ
इच्छा जीतत आकि जीतत ईर्ष्या
संकल्प हमर जे ऐ धारकेँ मोड़ि देब
मुदा किछु ईर्ष्या अछि सोझाँ अबैत
ईर्ष्या जे हम धारकेँ नै मोड़ि पाबी
बहैत रहए ओ ओहिना
ओहिना किए ओहूसँ भयंकर बनि

वल्लभाक अबाज

संकल्प जे हम केने छी
इच्छा जे अछि हमर/ से हारि जाए

आ जीति जाए द्वेष/ जीति जाए ईर्ष्या
हा हारबो करी तेना भऽ कऽ जे लोक देखए!/ जमाना देखए!!
तेना कऽ हारए संकल्प हमर/ इच्छा हमर

गंगेशक अबाज

धारकेँ रोकि देबाक/ ठाढ़ भऽ जएबाक सोझाँ ओकर
आ मोड़ि देबाक संकल्प ओहि भयंकर उदण्ड धारकेँ
मुदा किछु आर ईर्ष्या अछि सोझाँ अबैत
ओ द्वेष चाहैए जे हमर प्रयास/ धारकेँ मोड़बाक प्रयास

वल्लभाक अबाज

मोड़लाक प्रयासक बाद भऽ जाए धार आर भयंकर
पुरान लीखपर चलैत रहए भऽ आर अत्याचारी
आ हम जाए हारि
आ हारी तेना भऽ कऽ जे लोक राखए मोन
मोन राखए जे कियो दुस्साहसी ठाढ़ भऽ गेल छल धारक सोझाँ
तकर भेल ई भयंकर परिणाम
जे लोक डरा कऽ नहि करए फेर दुस्साहस
दुस्साहस ठाढ़ हेबाक उदण्ड-अत्याचारी धारक सोझाँमे
लऽ ली हम पतनुकान/ आ से सुनि थरथरी पैसि जाए लोकक हृदयमे
घृणाक विरुद्ध ठाढ़ हम बुढ़िया डाही।

(अबाज शान्त भऽ जाइत अछि, फेरसँ सभ साकाक्ष भऽ जाइ छथि।)

उदयन:

मुदा हम हँसै छी

हारि तँ जाएब हम मुदा हमर साधनासँ जे रक्तबीज खसत

से एक-एकटा ठोपक बीआ बनि जाएत सहस्त्रबाढ़न्कि झोँटाबला

घृणाक विरुद्ध ठाढ़ अछि हमर ई बुढ़िया डाही।

दीना:

कमलक मृणाल, पुरैनि, कमलगट्टा, बिसाँढ़सँ भरल खेत बनत

खेत जे छलै सनगर यौ, जाहिमे घृणाक तरहरि खुनेलौं यौ

घृणाक तरहरि खूनल ओइ खेतमे

कमलक मृणाल, पुरैनि, कमलगट्टा, बिसाँढ़ अछि भरि गेल

भदरी:

मुदा प्रेमक कमल अछि फुला गेल।

सहस्त्रबाढ़नि झोँटाबला बुढ़िया डाही केलक ई।

वर्द्धमान:

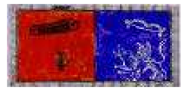
आ तखन

फैसला हेतै आब

जखन

उनटि जाइए लोक

उनटि जाइ छै बोल

ISSN 2229-547X VIDEHA

छने-छन बदलि जाइए

बिचकाबैए ठोर

बोलक मधुर वाणी

बोली-वाणी

बदलि जाइ छै

बनि जाइए बिखाह

गोबरझार दऽ चमकाबै छी स्मृतिकेँ

घृणाक विरुद्ध ठाढ़ छलि तहियो हमर ई बुढ़िया डाही।

उदयन:

धारकेँ रोकबाक हिस्सक जकरा लागि गेल छै

आ ओ सभ तकर विरुद्ध ठोकि कऽ ताल

भऽ जाएत ठाढ़

आ डरा जाएत द्वेष स्मरण कऽ

जे फेर रक्तबीजसँ निकलल एहि सहस्त्रबाढ़नि सभक रक्तबीज

एकर सभक बीआक सन्तान फेर आर बढ़ि जाएत आक्रमणसँ

कारण संकल्प अछि, इच्छा अछि ई सभ

धारकेँ रोकबाक हिस्सक जकरा लागि गेल छै

सभ सम्वेत स्वरमे:

घृणाक विरुद्ध अछि जे जकरा बुढ़िया डाही अहाँ कहै छिऐ।

घृणाक विरुद्ध अछि जे जकरा बुढ़िया डाही अहाँ कहै छिऐ।

घृणाक विरुद्ध अछि जे जकरा बुढ़िया डाही अहाँ कहै छिऐ।

घृणाक विरुद्ध अछि जे जकरा बुढ़िया डाही अहाँ कहै छिऐ।

(आस्ते आस्ते अन्हार पसरि जाइए।)

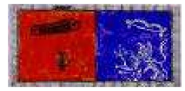
चारिम कल्लोल

... (जारी)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.  सत्यनारायण झा- पलट २.  **जवाहर लाल कश्यप-** अर्धसत्य

१



सत्यनारायण झा

पलट

बेटाक ब्याहक तैयारी मे लागल रही |पत्नीक संग बाजार सं डेरा पहुँचलौ |डेराक गेटक ताला खोलबाक प्रयास करय लगलौ |मोबाइल पर रिंग होमय लगलैक |ताला खोलब छोरि मोबाइलक स्क्रीन पर देखय लगैत छी |मन्नुक कॉल रहैन ||सोचय लगैत छी जे कतेक समयक बाद मन्नू फोन केलनि अछि |याद नहि परल जे एहि सं पहिने ओ कहिया फोन केने छलाह | पटना मे सासुर छनि |साल मे तीन चारि बेर अबैत जाइत रहैत छलाह मुदा कहियो कोनो संपर्क नहि केलनि ,अचानक फोन देखि भेल जे प्रायः धोखा सं नंबर डायल भ' गेल हेतनि ,तै पुनः ताला खोलय लगलौ | जहिना रूम मे पायर रखैत छी की लैंड लाइन पर फोनक घंटी फेर घन घनाय लागल |

हेलो ---? बाबूजी ,हम मन्नू गाँधी नगर सं बाजि रहल छी आ मन्नू जोर- जोर सं कानय लगलाह |हमरा भेल जे तीन चारि साल सं कोनो संपर्क नहि रखबाक कारणे पश्चातापे कना गेलनि अछि |आखिर हमहू त' पितिये छियैन |

हमरा मन्नू सं कतेक स्नेह छल |ओहो कतेक शांत स्वभावक लोक छलाह |कतेक सुकुमार छलाह |बाजब त' एहन रहनि जेना मिश्री घोरि क' पीने रहथि | मन्नू सं बहुत लगाव छल |

मन्नुक ब्याह मन्नुक पिताश्री ठीक केलखीन्ह | ब्याह जेतय ठीक भेल रहैक ओ कोनो तरहे ने मन्नू लेल आ ने परिवार लेल उपयुक्त रहैक, तै हम ओहि ब्याहक समर्थन मे नहि रही |ब्याह त' दु परिवारक कड़ी क' जोरैत छैक मुदा एहि ब्याह सं परिवार टूटबाक ख़तरा रहैक |बाद मे सैह भेलैक | हमर इच्छा रहय मन्नू एहि ब्याह क' रोकि देथि |मन्नू कोनो साधारण ब्यक्ति नहि छलाह |योग्य अभियंता छलाह |नीक आ बेजाय ओ बुझैत छलाह तथापि बियाहक लोभे ओ चुप भ' अपन मौन स्वीकृत द' देलखिन्ह | ओ नहि सोचलनि जे आखिर 'हमरा नहि मे' की निहितार्थ छैक | मन्नू सं जे आशा छल ओकर बिपरीति अपन रूप देखेलनि | मोन तृष्णा सं भरि गेल |मन्नुक ब्याह सं कात भ' गेलौ | आब त' ब्याहो क' कइएक बरख भ' गेलैक | मन्नू आ मन्नुक पिताश्री पलट सं संपर्क टूइ ट गेल |मोन बहुत खिन्न रहैत छल |मुदा धीरे धीरे सभटा बिसरि गेलौ आ हमहू अपन काज मे लागि गेलौ | प्रारम्भ मे पलट सेहो हमरा सं दूरी बढ़ा लेलनि मुदा जखन एहि ब्याहक कुपरिणाम धीरे धीरे सामने आबय लगलनि तहन हुनका आँखि फुजलनि |आब बुझाय लगलनि जे भाई कियैक मना करैत रहथिन | आब कोन मुहें ओ हमरा सामने अओताह |लाजे दुरे रहैत छलाह | कइएक ठाम

बजैत छलाह जे भाईक बात नहि मानि अनर्थ क' लेलौ | एक दु बेर फोनो केलाह मुदा हम अपना क' दुरे रखलौ | कतेक स्नेह पलट सं छल | पलट हमरा सं दु बरखक छोट छलाह | पलट एके मासक छलाह त' माय मरि गेलखिन्ह |हमरे माय पलट क' पालि पोशि क' ठाढ़ केलखिन्ह |पलट आ हमरा में कोनो अंतर नहि छल |पलटक पढाई लिखाई हमरा संगे भेलैक |एम्० कम० क' पलट नीक प्रतिष्ठित शिक्षक बनि गेलाह |पलट सं अंतरंगता हमरा बच्चे सं छल |एके संग स्कूल जाइत छलौ |हर समय संग रहैत छलौ |पलटक उन्नति सं हमरा आत्म सुख भेटैत छल | मुदा मन्नुक ब्याह हमरा दुनूक बीच दूरी बढ़ा देलक |

हमरा जेना पलट सं वितृष्णा भ' गेल तै हम हटले रहैत छलौ |ओना पलट कहियो क' अपन भौजी सं बात क' लैत छलाह आ हमहू कहियो हिनका मना नहि करैत छलियैन | आखिर संबंधक डोरी त' कतौ बान्हल रहैक जाहि सं हमरो आत्मसंतोष भेटैत छल |हिनके द्वारा पता चलइत छल पलट अपन पारिवारिक समस्या सं परेशान रहैत छलाह |

मन्नू क' कनैत देखि क्षण भरि त' चुप रहलौ मुदा तत्क्षण कहलियैन ---मन्नू कियैक कनैत छी |जिनगी मे कतेक गलती होयत छैक |अहाँक' पश्चाताप भेल ,बुझू सबटा गलती माफ भ' गेल | हम हुनका बुझबैत रहलियनि आ ओ आओर जोर जोर

सं कनैत रहलाह |हम कहलियैन मन्नू चुप भ' जाउ | कहलनि ,चुप कोना भ' जाउ| पापा आब एहि दुनिया मे नहि रहलाह |-------------

जबरदस्त झटका लागल |पूरा शरीर थर थर काँपय लागल | पसीना देबय लागल |हृदय पर जेना बज्र खसि परल | की ?पलट आब दुनिया मे नहि छथि ?की भेलनि ?मात्र एतबे सुनलौ जे हार्ट अटैक भेलनि | अय सत्ते पलट चलि गेलाह |आब हुनका सं एहि जन्म मे भेट नहि होयत |मोनक बात मोने रहि गेल | पलट हमरा सं छोट छलाह ||हम जिबिते छी आ ओ एहि दुनिया सं चल गेलाह | ओ कहिया सं बीमार छलाह सेहो कहाँ बुझलियै |मोन क' हम सम्हारि नहि सकलौ | लागल जेना आँखिक आगू अन्हार भ' गेल |तत्क्षण पलटक चेहरा दिमाग मे घुमय लागल |पलटक चालि ढालि ,बाजब भूकब सभटा चल चित्र जका आँखिक आगू घुमय लागल | भगबान की दय एहि संसार मे पलट क' पठेलखिन्ह |ओ अपना जिनगी मे कतेक दुःख सहलनि ?हम आ ओ एक दोसर क' पर्यायवाची छलौ |पलट हमर कतेक आत्मीय छलाह से पलट आई हमरा छोरि एहि दुनिया सं चलि गेलाह |दुखक अथाह सागर मे डूबि गेलौ |बेटा ब्याहक सभ अरमान हवा मे उधिया गेल | बिछावन पर एकाएक खसि परलौ |बेहोश भ' गेलौ |घर मे सभ क' डर भ' गेलैक |कियो बुझि नहि सकलैक जे हम केकरा सं गप्प करैत छलौ | 'हुनकर' आवाज सुनि सभ धीया पुता अगल बगल सं

ISSN 2229-547X VIDEHA

दौरल | सभ पूछय लागल मुदा हमरा आँखि सं अविरल अश्रुपात भ' रहल छल |मोन घूमि फिरि क' पलटक चेहरा पर चल जाइत छल |जीवनक एक एक क्षण मानस पटल पर उभरय लागल |हृदयक गति असामान्य भ' गेल छल |संज्ञा शून्य भ' गेल रही |केकरो बातक जबाब नहि दैत छलियैक |एक टक सं शून्य मे तकैत रही |सभ क' बुझा गेलैक जे कोनो पैघ दुर्घटना भेलैक अछि | सभ हमरा झकझोरि क' पूछय लागल |की भेलैक ? बजइ कियैक नहि छी ?केकर फोन आयल अछि ?पत्नी जोर जोर सं हमर देह पकरि पुछय लगलीह | एक क्षण क' लेल तंद्रा टुटल |कनेक होश भेल ?देखलियइ घर मे सभ बिचलित अछि | हमरा आँखि सं नोर रुकबाक नाम नहि लैत छल आ ओही अबस्था मे मुँह सं एक शब्द निकलल जे, पलट आब एहि दुनिया मे नहि छथि |हमरा सं ई शब्द निकलिते पूरा घर निःशब्द भ' गेल |सभ क' जेना एके बेर काठ मारि देलकै |हमहू अपना क' सम्हारि नहि सकलौ आ ओछावन पर बेहोश भ' खसि परलौ

|जखन होश भेल त' देखैत छी ,हम एकटा अस्पतालक बेड पर परल छी |लग मे कियो नहि छल |शुन्य दिस एक टक सं ताकि रहल छी |मानस पटल पर पलट देखा रहल छथि आ देखा रहल अछि पलटक सम्पूर्ण ब्यक्तित्व |छत दीस तकैत तकैत नींद भ'गेल | नींद मे जेना कियो कहि रहल अछि भाई अहाँ सुतल छी |हमरा दीस ताकू |लागल जेना नींद फुजि गेल | आगू मे पलट ठाढ़

छलाह |केस पैघ पैघ ,दाढ़ी बढल ,मैल खटखट ,फाटल चिटल कपड़ा पहीरने | हाथ मे एक मुट्ठी बालु ,आ बालू सं चेन्ह पारैत ओ बिदा भ' गेलाह | पाछू पाछू हमहूँ बिदा भेलौ | बहुत दुर गेलाक बाद जंगल आबि गेलैक | जंगल बहुत डरावना रहैक |बाघ ,सिंह प्रच्छन्न भ' घूमि रहल छलैक |पलटक पाछू पाछू हमहू आगा बढैत गेलौ | आगू बहुत पैघ पहाड़ रहैक | पहाड़ पार केलाक बाद एकटा कन्दरा भेटलैक | कन्दरा बड पिच्छर रहैक |ओकर बाद एकटा पैघ नदी अयलै|नदी मे बहुत उफान रहैक | भसियाति भसियाति बहुत दुर गेलौ तेकर बाद पलट नदी मे डुबकी लगेलनि| हमहू हुनके पाछू पाछू डुबकी लगेलौ |कतेक कालक बाद एकटा मंदिर भेटल जेकर चारु दरबाजा फुजल रहैक |मंदिर खूब सजायल रहैक |चारु कात दीप जरैत रहैक |बीच मे स्वर्ण रचित दुटा आसन लागल रहैक |हम आ पलट ओहि घर मे एक कोन मे ठाढ़ भेलौ | तखने एकटा चमत्कार भेलैक |जगतनंदनी लक्ष्मी जी संग हमर मातेश्वरी ओहि आसन्न पर बैस रहलीह | मातेश्वरी क' देखि हम त' अबाक भ' गेलौ |मातेश्वरी क' देखि पलट बजलाह | मातेश्वरी हम अहाँक भेट करय आयल छी | मातेश्वरी टुकुर टुकुर पलट दिस तकैत छलीह |मातेश्वरी अपन लग सं हमरा नहि हटाऊ | हमर जीबन आहाँ बिना शुन्य अछि | भाई क' हम सेहो नेने आयल छी |ई कहि पलट जोर जोर सं कानय लगलाह | हमहू कानय लगलौ | सत्ते कानय लगलौ | कनैत हमर आँखि फुजि गेल

ISSN 2229-547X VIDEHA

|सामने पलटक निर्जीव शरीर परल छैक आ सभ लोक कानि रहल छैक |

२



जवाहर लाल कश्यप

अर्धसत्य

(एकटा युवक इंटरभ्यु देबय लेल ऑँफिस मे प्रवेश करैत अछि /अप्पन बायोडाटा ऑँफिस मे बैसल व्यक्ति के दैत छथि /)

व्यक्ति ; बायोडाटा दिस देखैत अहॉके नाम ?

युवक ; देवकीनन्दन /

व्यक्ति ; केवल; देवकीनन्दन आओर कोनो सरनेम नहि? (ई कहि बायोडाटा पर नजर गडा दैत छथि) बायोडाटा मे पिताक नाम नहि अछि / केवल माता के नाम अछि देवकी ताहि कारण अहॉ देवकीनन्दन

युवक ; जी हॉ. .

व्यक्ति ; मुदा पिताक नाम आवश्यक अछि /

युवक ; ईसामसीह केर् माता मरियम के सब जनैत् अछि./ क्रिश्णक नाम देवकीनन्दन तखन हम्मर किएक नहि?

व्यक्ति ; ओ विशिष्ट व्यक्ति छथि / साधारण लेल पिताक नाम आवश्यक. . .

युवक ; (बीच मे टोकैत) हमरा पता अछि हम भारत मे रहि रहल छी, आर्यावृत मे नहि /

व्यक्ति ; हम नहि बुझलहुँ अहॉ कि कहय चाहैत छी/

युवक ; आर्यावृतक अर्थ आर्यजतिक लोक के रहय वाला स्थान /चाहे ओ स्त्री हो वा पुरुष /ओहि समय समाज मे दुनु के समान स्थान प्राप्त छल, दुनु मे कोनो भेद नहि छल / कालांतर मे पुरुषवादी मानसिकता हावी भेल आ मात्रिभुमि के नाम एकटा पुरुष

भरत के नाम पर राखि देल गेल (बीच मे साॅस लेवय लेल रुकैत अछि) हमरा पता अछि अहि तरहे जवाव देवा के कारण हमरा ई नौकरी नहि भेट सकैत अछि /मुदा हम पूर्ण सत्य के स्थान पर अर्धसत्य के स्वीकार नहि क सकैत छी /

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

ओमप्रकाश झा

डीहक जमीन

ट्रेन सकरी टीशन सँ फूजल आ पूब दिस घुसक' लागल। नरेश एकटा बोगी मे अपना सीट पर बैसल अपन गामक बात सब मोन पाडैत विचारमग्न भ' गेल। बहुत दिनक बाद ओ अपन गाम जा

रहल छल। भरिसक १० बरखक बाद। ओ एखन भोपाल मे शिक्षा विभाग मे नौकरी करैत छल अधिकारीक पद पर। गाम जाय लेल चिकना टीशन उतरि क' जाय पडै छलै। सकरी तक बडी लाईनक ट्रेन चलैत अछि। ओतय सँ फेर छोटी लाईनक ट्रेन सँ। ओकरा बोगी मे पूरा लोक कोंचल छल। चारि पसिन्जरक सीट पर सात-आठ लोक बैसल छल। हो-हल्ला आओर गप-शप सँ पूरा डिब्बा मे कोलाहल जकाँ छलै। मुदा ओकर दिमाग मे अपन पुरनका दिन घुरिया लगलै। सबटा दृश्य चलचित्र जकाँ ओकर आँखिक आगाँ घूम' लगलै। ओ अपना कँ २० बरख पहिनुका स्कूल मे देख' लागल। बस्ता ल' के नित भोरे पाठशाला जेबाक दृश्य आगाँ मे नाच लगलै। ओकर पिता फेंकन मरड हरवाह छला आओर गाम मे भुटकुन बाबू ओतय खेतीक आ माल-जालक काज करै छला। किछ बटाई पर खेती सेहो करै छला। अपन जमीनक नाम पर पाँच कट्ठा खेतीक जमीन आ आठ धूरक घरारी छलैन्हि। हुनकर माय 'मरौनावाली' केर नाम सँ जानल जाईत छलीह। भरि दिन मरौनावाली भुटकुन बाबू ओतय घरेलू काज मे मदति करैत छलीह आ साँझे घर आबै छलीह। नरेश बच्चा छलाह आ भरि दिन एम्हर ओम्हर खेलाइत रहैत छलाह। एक दिन भुटकुन बाबू फेंकन कँ कहलखिन्ह जे नरेशवा भरि दिन टौआइत रहै छौ, कियाक नै ओकरा हमरा एहिठाम चरवाही मे पठा दैत छी। फेंकन बजलाह- "गिरहत, ई गप नै कहियौ, ओ एखन मात्र चारि बरख के छै। ओकरा अगिला बरख सँ स्कूल पठेबै।" भुटकुन बाबू व्यंग्य मे

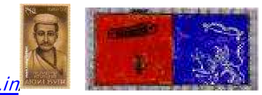
बजलाह- "तौं त' एतबे टा सँ हमरा एहिठाम चरवाही करै छलैं। तखन तोहर बाबू हरवाही करै छलखुन्ह, मोन छौ ने।" फेंकन कहलक- "जी ओ जमाना आब नै छै गिरहत। मरौनावाली एकदम जिद केने छै जे नरेशबा कें स्कूल पठबियो। किछ दिन पहिने बिसेसर बाबू मास्टर साहब भेंटल छलाह। ओ कहलथि जे पढेनाई बड्ड जरूरी छै तैं नरेशबा कें स्कूल पठाबहक।" भुटकुन बाबू- "जे तोहर इच्छा। हम त' तोरे दुआरे कहलियो। तोहर काज किछ हल्लुक भ' जइतो।" फेंकन- "गिरहत, हम जा धरि सकब, ता धरि अहाँ कें काज करैत रहब।"

अगिला साल नरेशक नाम स्कूल मे लिखाओल गेल। नरेश पढै मे नीक छलाह आ जल्दिये मास्टर सबहक प्रिय भ' गेलाह। दसवीं बोर्ड मे ओकरा अस्सी प्रतिशत अंक आयल। ओ काओलेज मे पढै लेल दरिभंगा चलि आयल आओर ट्यूशन पढा कें अपन खर्च निकालैत पढ' लागल। ओम्हर गाम मे फेंकन आओर मरौनावाली भुटकुन बाबूक काज मे लागल रहल। नरेशक पढाई पूरा भेलै आ मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोगक इम्तिहान पास क' के शिक्षा विभाग मे नौकरी भेंटलै। नियुक्ति पत्र गामक पता पर आयल छल आओर सौंसे गाम अनघोल भ' गेल रहै। ओहि दिन नरेश अपना कें आकाश मे उडैत पाओलक। भुटकुन बाबू जे आब वृद्ध भ' गेल छलाह ओहो नरेश कें बजा के आशीर्वाद देलखिन्ह। मरौनावाली त' कानैत बेहाल छल जे बेटा आब नजरि सँ दूर भ' जायत। किछ

दिनक बाद नरेशक बियाह भ' गेलै। किछ दिन कनियाँ गामे मे रहलैन्हि। फेर जयबाक जिद क' देलकै। नरेश कनियाँ कें ल' के भोपाल चलि गेल। मरौनावाली ओहि दिन बड्ड कानल रहै। नरेश अपन माता पिता कैं संगे रहै लेल बहुत आग्रह केलक, मुदा फेंकन साफ मना क' देलकै। ओकर कहनाई रहै जे पुरखाक डीह छोडि नै जायब। नरेश कहलक जे ई आठ धूर डीह अहाँ कें एतेक प्रिय भ' गेल जे अपन एकलौता संतान संगे रहै लेल तैयार नै छी। ओतय नाना प्रकारक सुविधाक गप सेहो नरेश कहलकै, मुदा फेंकन अपन जिद पर अडल रहलाह। मरौनावाली कनी जिद केलखिन्ह, त' फेंकन खिसिया गेला आओर कहलखिन्ह जे अहाँ चलि जाउ, हम असगरे रहब। मरौनावाली धर्मसंकट मे पडि गेली आ अंत मे गामे मे रहै कें निर्णय लेलथि। नरेश नियमित रूप सँ गाम पाई पठबैत रहै आओर फेंकन के हरबाही जबरदस्ती छोडा देलक। फेंकन साल दू साल पर नरेश लग जाइत रहै छलाह आओर नरेश काजक अधिकता आओर बच्चा सबहक पढाई दुआरे गाम कहियो नै आबैत छलाह। आब मोबाइलक जमाना मे नरेश फेंकन कें मोबाइल सेहो कीन देने छलखिन्ह, जाहि सँ ओ सब नियमित रूप सँ सम्पर्क मे रह' लगलाह। एक दिन फेंकन मोबाइल सँ नरेश कें फोन केलखिन्ह आ कहलखिन्ह- "बौउआ, अपन डीह सँ सटल भुटकुन बाबू केर दू कट्ठा जमीन परती पडल छै। ओ ओहि जमीन कें बेच' चाहैत छैथ। हमरा कहलैथ जे तौं ओ जमीन कीनब' त' हम तोरा पच्चीसे हजार मे द' देब'। बौउआ ओहि जमीनक कीमत

चालीस हजार सँ कम नै छै। नीक मौका छै। पाई पठा दितहक त' हम तोरे नाम सँ वा तोहर कनियाँक नाम सँ जमीन कीन दितियं।" नरेश चोट्टे खिसिया गेल आ बाजल- "हमरा गाम सँ कोनो मतलब नै अछि। अहाँ बलौं जमीन कीनं चाहै छी। हम त' सोचै छी जे आठ धूरक डीह आ पाँच कट्ठा खेतीवाला जमीन बेची आओर गाम सँ पिण्ड छोडाबी।" फेंकन- "हमरा जीबैत ई काज नै हेतौ। पुरखाक जमीन बेचबाक बात तोहर मोन मे कोना कँ एलौ। तू ओहि गाम सँ पिण्ड छोडेबाक गप करै छ, जतय नेना मे खेलेलह, जतुक्का पानि पीबि कँ नमहर भेल', जतय तोहर बाप-दादा केर सारा छ। तू डीहक नबका जमीन नै कीन, मुदा पुरनका बेचै कँ गप नै कर।" अस्तु नबका घरारी कीनबाक गप एतहि खतम भ' गेल।

एक दिन नरेशक बडकी बेटी सुनन्दा, जे चौथा मे पढै छल, नरेश कँ कहलक- "पापा, जेना हम अहाँ संगे रहै छी, अहूँ त' बच्चा मे बाबा संगे रहैत हैब।" नरेश- "हाँ, रहैत छलहुँ। सब रहैत अछि।" सुनन्दा- "अहाँ के सब गप मानैत हेता बाबा।" नरेश- "हाँ यथासम्भव मानैत छलाह।" सुनन्दा- "अहाँ बड्ड नीक छी पापा। हमर सब गप पूरा करै छी। हमहुँ नमहर भ' कँ अहाँक सब गप जरूर मानब।" ई कहैत ओ खेलाई लेल चलि गेल। ओकर अन्तिम वाक्य सुनि नरेश धक् रहि गेल। ओकरा अपन नेनपनक सब गप मोन पडय लागलै, जे कोना फेंकन फाटल धोती पहिरैत



रहल, कोना मरौनावाली फाटल नुआ पहिरैत रहलीह, मुदा नरेशक पढाई मे कोनो बिथुत नै हुअ देलखिन्ह। एक बेर त' नरेश कैँ फार्म आ किताब लेल पाँच सय टका भुटकुन बाबू सँ पैंच लेबा मे कोन कोन गप नै फेंकन कैँ सुन' पडल छलै। नरेशक मोन मे विचारक तूफान उठि गेल। ओ घर सँ बाहर निकलि कैँ घूम' लागल। घूमैत पार्क दिस चलि गेल। ओतय एकटा गाछ पर एकटा चिडै अपन बच्चा सब कैँ चोंच मे दाना दैत छल। ओकर हृदय फाट' लागलै। पण्डितजी केर संस्कृतक कक्षा मोन पड' लागलै जाहि मे ओ "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि" पर लगातार दू घन्टी पढबैत रहि गेल छलखिन्ह। ओ कक्षा नरेश कैँ बड़ड नीक लागल रहै। कतेक दिन धरि ओ एहि श्लोकक पाठ करैत रहै छल। एहि विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता मे सेहो ओ नीक बाजल छल आओर जिला स्तर पर पुरस्कार सेहो भेंटल छलै। ओ एकटा निर्णय लेलक आओर डेरा आबि कैँ कनियाँ सँ कहलक- "हमर अटैची तैयार क' दियं। हम गाम जायब।" कनियाँ बाजलैथ- "इ की बाजै छी। ओतय एखन जा क' की करब? दस बरख सँ उपर भेल गाम गेला। के चिन्हत? बाबूजी सँ नित गप होयते अछि।" नरेश- "डीहक जमीन कीनै लेल जाइत छी।" कनियाँ- "इ कोन बतहपनी धेलक अहाँ कैँ।" नरेश- "बताह त' एखन धरि छलहुँ। आब ठीक भ' गेलौं। जाहि मातृभूमि केर माटि-पानि सँ हमर देह पोसल अछि, जे मातृभूमि हमरा हमर पहचान देलक, ओकरा हम बिसरि गेल छलौं। माय-बाबूक आकांक्षा

ISSN 2229-547X VIDEHA

आ मनोरथ बिसरि गेल छलौं। एतय भोपाल मे सब सुविधा अछि, मुदा जे अपनैती हमरा गाम मे भेंटैत रहै तकर अभाव बुझाइत रहै ए। आब गाम साल मे एक बेर त' जरूर जायब।" कनियाँ कनी काल घमर्थन केलकैन्हि, मुदा हुनकर जिद आ दृढताक आगाँ चुप भ' गेलै।

एकाएक नरेशक भक् टूटल। बगलक यात्री, जिनका सँ सकरी मे परिचय भेल रहैन्हि, हुनका हिलबैत कहैत रहै जे श्रीमान् चिकना आबि गेलै, कतेक सुतब, उतरू नै त' ट्रेन फूजि जैत। मुस्की मारैत नरेश बजलाह- "नै यौ, आब जागि गेल छी। एखन धरि सुतल छलहुँ।" इ कहैत ओ टीशन पर उतरि गेल आ गाम दिस चलि देलक। डेग जेना हल्लुक भ' गेल रहै आ तुरन्ते गाम पहुँचि गेल। फेंकन एकाएक नरेश कँ देखलक त' आश्चर्य भेलै आओर मरौनावाली भरि पाँज मे बेटा कँ पकडि कान' लागल। नरेश फेंकन के गोर लागि कँ कहलक- "बाबू, हम आबि गेलौं डीहक जमीन कीनबाक अछि ने।"

साँझ मे दुनू बापूत भुटकुन बाबू लग गेलाह। भुटकुन बाबू नरेश कँ आशीर्वाद दैत कहलखिन्ह- "गाम कँ कोना बिसरि गेलहक?" नरेश- "नै बाबा, बिसरल नै छलौं, कतौ हरा गेल छलौं। आब आबि गेलौं। डीहक जमीन कीनै लेल।" भुटकुन बाबू हँसैत बजलाह-

"चल काल्हिये रजिस्ट्री क' दैत छियो। पाई आगाँ पाँछा द' दिह'।"
नरेश- "पाई आनने छी बाबा।"

साँझ मे फेंकनक छोट दलान लोक सँ भरल छल। मरौनावाली रहि रहि के चाह बनाबैत छल। नरेशक गाम मे आओर ओकर घर मे जेना पावनि-तिहारक चुहचुही छलै।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।



१. मनोज झा मुक्ति- विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा २. नरेन्द्र मिश्र ३.  नवेंदु कुमार झा- मिथिला राज्यक विरोध मे उतरलाह डा॰ मिश्र/ **पर्यटनक उद्योग पर सरकारक बढ़ल जोर विकसित होएत हलेश्वर पुनौरा आ**

ISSN 2229-547X VIDEHA

पंथपाकर/ लोकायुक्तक मामिला मे सत्ता आ विपक्ष मे गतिरोध/ मनाओल गेल दरभंगा महाराजक जन्म दिवस/ प्रदेश मे खूजत पशु विश्वविद्यालय/ टाका नहि खर्च कएला पर बंद होएत आवंटन

४.प्रभात राय भट्ट- रोटी रोजीक खोजी

१



मनोज झा मुक्ति

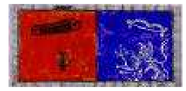
विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा

एहिवेर विद्यापति स्मृति दिवसकलेल सरहद ओहिपारक यात्रा हमर आ हमर किछु मित्र सबहक पहिनहिसँ तय छल । जाहि अनुसारे पहिने विद्यापतिक जन्मस्थली मधुवनी जिल्लक विस्फी गाम हमर सबहक पहिल गन्तव्य छल ।

विस्फीमे त्रिदिवसीय विद्यापति स्मृति समारोहक आयोजना लगभग १० वर्षसँ होइत आएल अछि । ताँए हम आ हमर दूगोट मित्र महोत्तरी जिल्लाक पिपरा गामके दिनेश चौधरी आ शीतलाल साह) कार्तिक धवल एकादशीक दिन ३.०० बजे जलेश्वरसँ दूटा मोटर साइकलपर प्रस्थान केलहुँ । जलेश्वरमे अवस्थित रातो नदीक किनार होइत खुड़पेरिया बाटसँ हमसब सरहद ओहिपार भिट्ठागाम होइत हमसब आगा बढ़ैत गेलहुँ । सिमरी,कोरियाही,चरौत,साहरघाट होइत हमसब उच्चैठ भगवतिक स्थान अर्थात दूर्गास्थान पहुँचलहुँ । दूर्गास्थानमे विभिन्न विद्वान सभहक प्रतिमाके मोटर साइकलेपरसँ एकटा फोटो लैत हम सब आगा बढ़ैत गेलहुँ । आगा बढैत हमसब बेनिपट्टी पहुँचलहुँ । बेनिपट्टीक बीच बजारमे विद्यापतिक एकटा पुराने प्रतिमाक स्तम्भके सरिएवाक काज भऽरहल छल । बेनिपट्टीमे किछु जलखै कऽ आगा बढबाक विचारसँ हमसब अपन मोटरसाइकलकेँ किछुकालकलेल कात लगा बन्द केलहुँ । छपरियाक भुज्जा दोकानमे बैसि भुज्जा फँकलहुँ, पान खेलहुँ आ पुन : हमर सबहक मोटर साइकल अपन गनतव्य दिस बढऽ लागल । संभवत : ओ गाम अरेर छल, जतऽ एकटा बोर्ड टाँगल छल जाहिपर मूर्धन्य साहित्यकार, कवि 'यात्री' जीक उत्सव मनाओल जेबाक सूचना देलगेल छल । दूर्भाग्यक बात जे सम्मेलनक दिन ओहिसँ एकदिन पहिने बितिगेल छल । मनके मसोह्नैत हमसब आगा बढलहुँ । आगा बाटमे रहिका गाम आएल । रहिकामे अबिते

ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिलीक एकगोट योद्धा स्व.चुनचुन मिश्रके याद आवि गेल । चुनचुन मिश्रक ओ व्यवहार मोन पड़ल जे एकबेर हम आ अनुज जितेन्द्र झा रहिका गेल छलौं, हूनकासँ भेंट होइते भरिपाँज कऽ धरैत हमरा सबके कहलाह जे कियो मैथिली कर्मीके हम देखैत छी त हमर छाती फुलि जाइत अछि । ओ मैथिली प्रति एतेक समर्पित छलाह से हूनक एहि वाक्यसँ सहजहिं अनुमान लगाओल जा सकैया 'मैथिलीक काज केओ कतौ करैत छथि त हमर कान्ह मजबुत करैत छथि ।' मोनहिमोन मैथिली पुत्र चुनचुनके श्रद्धाञ्जली दैत हमसब आगा बढलहुँ । बेर लुकझुकाए लागल छल । हमसब जिरो माइल पहुँचिकऽ ओतऽसँ पश्चिम विस्फीक बाट धएलहुँ । अन्हार भऽगेल छल मुदा सडक नीक होएबाक कारने हमरा सबके कनिको कठिनाई नहि भेल । विस्फी थानाक बगलमे धज्बा बजारपर रुकि पान खेलहुँ आ विस्फीए गामक काठमाण्डूमे काज कएनिहार मित्र भरत शर्माके दोकानदारेक मोबाइल माँगिकऽ फोन कएलहुँ । बातचितक बाद तय भेल जे पहिने विस्फीक गोबराही टोल जाई जतऽ मित्रक घर छल । हमसब गोबराही टोल पहुँचलहुँ । सबगोटे बहुत प्रसन्न भेलाह । विस्फी गोबराही टोलक लगभग ४०/५० गोटे ३०/३५ वर्षसँ काठमाण्डूमे काठक काज करैत छथि । काठमाण्डूमे हूनका सबहक अपने मजलिस छन्हि । ओसब कलाप्रेमी छथि, काठमाण्डूक शान्तिनगरमे होरीक कार्यक्रम हुए वा भजन किर्तन ओसब तत्पर रहैत छथि ।

खानपिन करैत ९.०० बाजिगेल छल । हमसब चारिटा मोटर साइकलपर विद्यापतिक डीहपर जेवाकलेल प्रस्थान केलहुँ । जखन डीहपर पहुँचलहुँ त भाषण भूषणक कार्यक्रम समाप्त भऽगेल छल आ विद्यापतिक जीवनपर आधारित विद्यापति फिल्म पर्दापर देखाओल जा रहल छल । आयोजकसँ जखन कार्यक्रमक सन्दर्भमे पुछल गेलनि त ओसब कहलाह जे प्रख्यात उद्घोषक एवं मैथिली एकादमीक अध्यक्ष कमलाकान्त जीक ग्रुपक प्रस्तुति आजुक राति तय छल, मुदा कालाकार सब नहि आबि सकलाक कारणे हूनक कार्यक्रम रद्द भऽगेलनि आ पर्दा चलाओल जा रहल अछि । काल्हि अर्थात धवल द्वादशीक रातिमे कवि गोष्ठी आ नाटकक कार्यक्रम अछि । हमसब किछुकाल विलमि ओतऽ स्मृति भवनमे रहल पुस्तकालयक आलमिराके देखऽ लगलहुँ, जतऽ एकौहुटा पुस्तक नहि छल । जिज्ञासा रखलापर जानकारी भेल जे पहिने लाखोसँ अधिक पुस्तक छल मुदा के,कहिया आ कतऽ लगेल से जानि नहि । फेरसँ पुस्तकालयक जोरजाममे लागल बात ओसब बतौलाह । रातिएमे पुन: गोबराही टोल घुरि एलहुँ ।



प्रात भिने भोरे विद्यापतिक जन्म नगरी घुमबाक कार्यक्रम बनल । हमसब पैदल गाम घुरबाक विचारसँ १०÷१२ गोटे भिनसरे निकलहुँ । गामक सब चौरि चाँचर देखिकऽ छाती फटैत जकाँ लगैछल, कारन एहिबेरुका बाढ़िसँ विस्फी लगायत परोपट्टा ४०/५० कोस धरि एक्कहु कनमा धान नहि रहिगेल छल । खेतमे धानक झुर्राठ ठाढ़ छल मुदा बालिमें छुच्छे खँखड़ी । किसान सब खेत खालि करेबालेल माथ हँसोथैत छल । हमसब बाढ़िसँ क्षत विक्षत विस्फी घुमिकऽ घर एलहुँ । पुन : भोजन कऽ कमतौल स्टेशनसँ कनि दूरपर रहल अहिल्या स्थान आ गौतम मुनिक आश्रम, गौतम कुण्ड देखबाकलेल ३ टा मोटर साइकलपर ७ गोटे प्रस्थान केलहुँ ।

बाढ़िमे कमलाक लील देखैत अहिल्या स्थान पहुँचलहुँ जतऽ श्रीराम द्वारा गौतम मुनिक पत्नि अहिल्याके उद्धार कएलगेल छल ।





अहिल्या स्थानके जाहिरुपे विकास होएबाक चाही ओना नहि बुझि पड़ल । सरकारद्वारा स्थानक जमीनमे पावर हाउस बनाएब एवं स्थानीय वासीद्वारा सेहो स्थानक जमीन दख्खल करब स्थानके दयनीय अवस्था उजागर कऽरहल छल । मन्दिरके जर्जर अवस्था, अहिल्या कुण्डमे स्थानिय वासीद्वारा फैलाओल जाऽरहल गन्दगी कोनो यात्रीके मोन खिन्न कऽदेत । ओतऽसँ हमसब गौतम कुण्ड दिसि प्रस्थान केलहुँ । चारुकात बाढिसँ जलमग्न रहल भूमि आ बीचमे गौतम मुनिक आश्रम ।



बाढ़िक पानिक कारणे गौतम कुण्ड डुबले छल । गौतम कुण्डमे बनैत विशाल धर्मशाला एहि स्थानके सुन्दर भविष्य दिसि इशारा कऽ रहल छल । हमसब पुन : घुरि एलहुँ विस्फीक गोबराही टोल । द्वादशीक रातिके कनि सबेरे हमसब डीह दिस प्रस्थान केलहुँ । ओतऽ कवि गोष्ठीक कार्यक्रम चालु छल । ताहिके बाद नाटकक कार्यक्रम शुरु भेल । एकटा कालाकार होएबाक नाते हमरो प्रस्तुति ओतऽ भेल । रातिमे विश्राम कऽ प्रात भिने अर्थात धवल त्रयोदसीक दिन भोरे मित्र दिनेश आ शीतलाल विशेष कारणवस नेपाल घुरि गेलाह । हम आ मित्र भरत एवं विजय दरिभंगाकलेल प्रस्थान केलहुँ । दरिभंगा स्टेशनके बगलमे रहल पैघ पोखरिक किनारपर अवस्थित एकटा कॉलेजमे त्रिदिवसिय विद्यापति विभूति पर्व

समारोहक आयोजना कएलगेल छल । पहिल दिन नेपालक दिसिसँ सुनिल यादव निर्देशित, राम भरोस कापडिक 'जनचेतना' नाटक छल, त्रयोदशीक दिन कवि गोष्ठी आ पूर्णिमाक दिन रंगारंग मैथिली कार्यक्रमक कार्यक्रम राखल गेल छल । त्रयोदशीक दिन होमयबला कवि गोष्ठीमे कविसब पहिनहिंसँ आमन्त्रित छलाह । हमहुँ अपन एकटा कविता वाचन करबाक वास्ते गेल छलहुँ । मुदा आमन्त्रित कवि नहि भेलाक कारणे मौका भेटब कठीन छल । मुदा आतऽ प्रख्यात कालाकार एवं उद्घोषक राम सेवक ठाकुर भेटलाह, हुनका सब बात कहिलियैन त ओ आयोजक के हमर परिचय दैत मौका देवाक आग्रह केलखिन्ह आ हमरो मौका देल गेल । कवि गोष्ठीमे मैथिलीक वरिष्ट वरिष्ट साहित्यकार, कविजी सबसँ साक्षात्कार होयबाक मौका भेटल । ओहि राति कूल ४८ टा कवि लोकनि अपन अपन रचना ओहि मञ्चपर प्रस्तुत कएने छलाह । मञ्चपर उद्घोषणक भार भेटल रहनि 'जनकजी'के जे करमान लागल दर्शक÷श्रोताके लोटपोट कऽदेल्खिन्ह । रचना पाठ कएनिहार कवि साहित्यकार सबमे बालेश्वर मिश्र, कौशलेश, परमानन्द प्रभाकर, बबलु कुमार, चन्द्रेश, हजरत हाफी मन्नान, रामकुमार, रामराजा मिश्र, उमेश कर्ण, दिलिप, विष्णुदेव झा, शम्भूनाथ मिश्र, शम्भूजी सौरभ, विद्याधर मिश्र, दिनेश, अशोक कुमार मेहता, विभूति आनन्द, बुचनू पासवान्, अशोक झा, शंकर देव, महेन्द्र नारायण राम, डा.जय प्रकाश चौधरी'जनकजी', मन्जर सुलेमान, चन्द्रमणि सिंह, शैलेन्द्रानन्द, गणेश झा, जयजय गोपाल, चन्द्रमोहन झा'पड़वा',

बुद्धिनाथ झा बोकारो, डा.राजेन्द्र झा, डा.चन्द्रदेव झा, हरिश्चन्द्र झा'हरित', मनोज झा मुक्ति, सक्रु पासवान, दिलिप कुमार झा, टुनटुन झा, शम्भूकान्त झा, श्याम विहारी राय'सरस', शम्भूनाथ मिश्र, रमाजी, मणिकान्त झा, कश्यपजी, अमलेन्द्र शेखर पाठक, अशोक चंचल, धनिक मण्डल, विनय विश्ववन्धु, जय नारायण झा, गंगाप्रसाद झा, डा.आर.के. रमण, सन्तोष झा आ फूलचन्द्र झा'प्रविण' । दरभंगामे भेल विद्यापति विभूति पर्वकलेल सबसँ पैघ जँ कियो धन्यवादक पात्र छथि त वैजुकान्त चौधरी । कवि गोष्ठीक तुरत्तवाद मधुवनी ग्रुपक नाटक मञ्चन भेल । कविगोष्ठीक बाद हमसब दरिभंगाक लगेमे रहल गौंसाघाटपर भूतक आ भगताक मेला देखबाकलेल प्रस्थान कएलहुँ ।

२


नरेन्द्र मिश्र

दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल

स्थान- दुर्गापूजाक मेला परिसर बेरमा (उत्तरवारि पार) जिला-मधुबनी

नाटककार- नरेन्द्र मिश्र

निर्देशक- **माधव आनन्द आ नरेन्द्र मिश्र**

पात्र- कलाकार- पिताक नाओं- पता-

1. भिषन भायजी मंजल आलम मो. मुशलीम, बेरमा

2. कल्लू विजय झा श्री प्रेमचन्द्र झा बेरमा

3. शुकन टोनी झा स्व. मिथिलेश झा बेरमा

4. चाहबला धर्मेन्द्र मिश्र श्री सदानंद मिश्र बेरमा

5. कल्लू केर पत्नी धर्मेन्द्र मिश्र श्री सदानंद मिश्र बेरमा

6. शराब दोकानदार प्रमोद साहु श्री गणेश साहु बेरमा

7. समदिया विकाश ठाकुर श्री ब्रह्मदेव ठाकुर बेरमा

8. चोर-1 प्रमोद साहु श्री गणेश साहु बेरमा

9. चोर-2 आशीष ठाकुर श्री ललन ठाकुर बेरमा

10. मुन-मुन काका विकाश ठाकुर श्री ब्रह्मदेव ठाकुर बेरमा

11. मास्टरजी माधव ठाकुर स्व. बेचन ठाकुर बेरमा

सहयोगकर्त्ता-

अमरेन्द्र मिश्र

मधुकान्त झा

ललन ठाकुर

लक्ष्मीकान्त झा

अंकित ठाकुर

तबरेज आलम

ओमप्रकाश मण्डल

दीपक मण्डल

शिवम मण्डल

दिनेश मुखिया

शंकर पासवान

गुलशन अली

राघव मिश्र

३

 नवेंदु कुमार झा

१

मिथिला राज्यक विरोध मे उतरलाह डा॰ मिश्र

मिथिलांचल के सभ दिन खतरा मिथिला पुत्र सॅ रहल अछि। स्वातंत्राक 64 वर्ष मे आधा समय बिहारक नेतृत्व मिथिला पुत्रक हाथ मे रहल मुदा मिथिलांचलक दुर्गति आ विकास सभक सोझा अछि। मिथिलांचल मे राजनीति रोटी सेकबाला मैथिलांचलक राजनीतिज्ञ मिथिला हितक रक्षाक समय स्वयं मुद्रा मे आबि जाति छथि। उŸार प्रदेशक मुख्यमंत्री मायावतीक छोट प्रदेशक घोषणाक बाद बिहारक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार छोट प्रदेशक समर्थनक बाद ई आशा जागल छल जे मिथिला पुत्र सभ एहि दिशा मे डेंग बढ़ौताह मुदा मिथिला आ मैथिलीक झण्डा उठैबाक ढाबा करएबाला नेता सभ राजनीतिक चुसनीक मजबूरी मे जाहित रहे अलग मिथिल राज्यक विरोध मे ठाढ़ भेला एहि सॅ हुनक राजनीतिक चरित्र सोझा आबि गेल अछि।
मिथिलाक सभ सॅ पैघ हितैषी कहए बाला बिहारक पूर्व मुख्यमंत्री डा॰ जगन्नाथ मिश्र अपन मुख्य मंत्रित्वकाल मे मैथिलीक उपेक्षाक उर्दू के प्रदेशक द्वितीय भाषाक दर्जा देलनि। विकासक नाम पर मिथिलाक कोना ठगलनि से तऽ हुनक प्रतिनिधित्व बाला झंझारपुर विधानसभा क्षेत्र के देखि कऽ सहजहि पता चलैत अछि। आ आब जिनगीक तेसर चरण मे बादो मिथिलाक विकासक परोक्ष एजेन्डा सॅ पाछा नहि हटि रहल छथि। एक दिस देश भरि मे छोट प्रदेशक लेल संघर्ष चलि रहल अछि आ मिथिला प्रदेशक लेल अनुकूल वातावरण बनैबाक समय आएल अछि तऽ डाक्टर मिश्र अलग

मिथिला राज्यक विरोधक झण्डा उठा सĕाक आगा अपन माथ झुका लेलनि अछि। दरअसल हुनक नजरि राज्य सभाक चुनाव पर अछि। अगिला वर्ष्ज्ञ राज्य सभाक कतेको सीट बिहार सँ खाली भऽ रहल अछि आ डा॰ मिश्र एहि उम्मीद मे नीतीश कुमार के खुश करबाक लेल अलग मिथिला राज्यक विरोध मे उतरि गेलाह अछि। डा॰ मिश्र भने कतबो नाक रगरथि जदयू आ भाजपाक गठबंधन मे हुनका राज्य सभा देखबाक अक्सर भेटत एकर आशा कम अछि। डॉ॰ मिश्र राजनीतिक शक्तिक केन्द्र बनलाक दरमियान तऽ मिथिलाक उद्वारक लेल कोनो प्रयास तऽ नहिए कएलनि आ आब जखन उचित अवसर बुझि पड़ैत अछि तऽ मिथिलाक जन आंकाक्षा के गला दबऽ मे लागि गेलाह अछि।

दरअसल मिथिलाक ई दुर्भाग्य अछि जे प्रदेशक सĕा के सब सँ बैसी दिन नेतृत्व करबा अवसर मिथिला पुत्र सभके भेटल मुदा विकास नहि होएबाक सौभाग्य मिथिलांचल के भेटला मिथिला राज्य आन्दोलन मिथ्लिांचलक नेताक लेल ‘‘राजनीतिक पर्यटन’ बनि गेल अछि। एहि सँ पहिने भाजपा सँ निष्काषित भेलाक बाद पण्डित ताराकांत झा सेहो मिथिला राज्य अभियान चलौने छलाह। एकर राजनीतिक लाभ सेहो हुनका भेटल। पंडित झाक भाजपा मे आपसी बाद हुनका उच्च सदनक सदस्य बनाओल गेल आ संवैधानिक पद सेहो देल गेल अछि। लगैत अछि जे पंडित झा एहि मात्र एहि मादे मिथिला राज्य अभियान चलौने छलाह। पद भेटैत मिथिला राज्य अभ्यिानक हवा निकलि गेल आ एक बेर फेर

मिथिलावासी आ मिथिलांचल ठगल गेल। केन्द्र मे राजग सरकारक मंत्री पद सँ हटैलाक बाद भाजपाक प्रदेश अध्यक्ष डॉ॰ सी.पी. ठाकुर सेहो मैथिलीक संविधानक अष्टम् अनुसूची मे देबाक लेल दरभंगा, पटना आ दिल्ली धरि फोटो खिलौलनि। मैथिलीक मांग पूरा भेल। डॉ॰ ठाकुरक चापलूस मंडली एकर खूब प्रचार मिथिलांचल मे कएलक जेना मात्र किछुए मासक हुनक प्रयास सँ ई सफल भेला एकर लाभ चापलूस मंडली वाम विचारक मिथिला राज्यक मठाधीश के भेल आ ओ वामपंथी सँ दक्षिणपंथी भऽ गेलाह। भाजपाक वर्तमान कार्यकारिणी मे ओ विराजमान छथि। खैर, एहि बेर सभ सँ मुखर विरोध डॉ॰ सी.पी. ठाकुर दिस सँ भेल अछि तऽ पंडित ताराकांत झा मौन छथि। आब सभ राजनीति नेताक मिथिला प्रति हुनक सोच सोझा आबि गेल अछि तऽ जनताक सेहो अपन संकल्प एहि मिथिला विरोधी नेता सभक सोझा आनए पड़त। नहि तऽ जगत जननी मां सीता, लोरिक सलहेस, दीना भद्री, मंडन आ विद्यापतिक धरती एहिन कुहरेत रहत।

२

पर्यटनक उद्योग पर सरकारक बढ़ल जोर विकसित होएत हलेश्वर पुनौरा आ पंथपाकर

प्रदेश मे पर्यटनक संभावना के देखैत बिहार सरकार पूर्व राष्ट्रपति

डा0 ए.पी.जे. अब्दुल कलामक सुझाव पर अमल करब प्रारंभ कऽ देलक अछि। सरकार पर्यटन उद्योग के बढ़ावा देबाक लेल कतेको योजना बनौलक अछि। सरकारक योजना जगत जननी मां सीता आ मर्यादा पुरुषोŸाम श्रीराम सँ प्रदेश मे जुड़ल जगह सभक रामायण सर्किटक रूप मे विकसित करबाक अछि। एहि वास्ते सीतामढ़ीक पुनौर हलेश्वर स्थान, पंथपाकर, बक्सर जिलाक रामजानकी मठ आ आन प्रमुख स्थान के विकसित कऽ एहि ठाम पर्यटन के आकर्षित करबाक योजना बनाओल गेल अछि। दोसर दिस आई मुख्य मंत्री नीतीश कुमार बिहारशरीफ मे आयोजित एकटा राष्ट्रीय सेमिनार मे सूफी सर्किट बनैबाक घोषणा सेहो कएलनि अछि। रामायण सर्किटक अंतर्गत प्राचीन शास्त्र मे मर्यादा पुरुषोŸाम श्रीरामक बरियातिक बिहारक जाहि जाहि जगह होइत मिथिला नरेश राजा जनकक घर पर पहूंचत ओहि सभ जगह आ जगत जननी सीता सँ सरोकार राखए बाला जगह सभके पर्यटनक दृष्टि सँ विकसित कएल जायत। वाल्मीकि रामायण आ राम चरितमानस मे सीता स्वयंवरक बाद श्री रामक बरियातीक मनोरम वर्ण प्रस्तुत कएल गेल अछि।

श्रीराम आ लक्ष्मण विश्वमित्रक संग अयोध्या सँ हुनक आश्रम आयल छलाह। आ एहि ठाम सँ विश्वामित्रक संग मिथिला नरेश द्वारा जगत जननीक विवाह वास्ते आयोजित स्वयंवर मे भाग लेने छलाह। श्रीराम एहि स्वयंवर मे शिवक धनुष तोड़ि जगत राजा जनकक संकल्प के साकार कएलनि आ राजा जनकक निमंत्रण पर अयोध्या

सँ राजा दशरथ श्रीरामक बरियाती लऽ मिथिला आएल छलाह। एहि क्रम मे प्रदेशक कतेको जगहक सँ होइत मिथिला पहूचल छलाह। एहि मे सरयू गंगाक संगम छपरा से 8 किलोमीटर दूर सीधी, तारका वध करबाक स्थान चरित्रवन (बक्सर) गिरिव्रज (राजगीर) फतुहा, विशाला नगर (वैशाली) आदि श्री रामक बरियाती आ विश्वामित्रक संग शिक्षा ग्रहणक काल सँ जुड़ल जगह अछि तऽ सीतामढ़ीक हलेश्वर स्थान जतए राजा जनक हर चलौने छलाह तऽ पुनौरा सीतामढ़ी मे माताक जन्म भेल छल। पंथपाकर सीतामढ़ी मे श्री रामक बरियाती रूकल छल। एहि मे दरभंगा जिलाक अहिल्या स्थान सेहो प्रमुख अछि जतए अहिल्याक उद्यार श्रीराम कएने छलाह। एहि ठाम गौतम ऋषिक आश्रम आ गौतम कुण्ड सेहो अछि। एहि सभ जगह के रामाण सर्किटक रूप मे विकसित कऽ प्रदेश मे पर्यटनक उद्योग के भजगूति देबाक सरकार कऽ रहल अछि। एहि दिशा मे सरकार डेग सेहो उठा देलक अछि। सीतामढ़ी हलेश्वर स्थान के विकसित करबाक लेल 47 लाख टाका आ बक्सरक रामजानकी मठ के विकसित करबाक लेल सेहो 52 लाख टाका जारी कऽ देल गेल अछि।

३

लोकायुक्तक मामिला मे सत्ता आ विपक्ष मे गतिरोध

प्रदेश मे मजगूत लोकायुक्त बनैबाक लऽकऽ सरकार आ विपक्ष मे

विरोधाभास सोझा आबि गेल अछि। एक दिस सरकारक प्रस्तावित विधेयक पर टीम अन्ना के विरोध पर सरकारक कड़गर प्रतिक्रिया आ दोसर दिस कॉंग्रेस, भाकपा माले आ लोजपा सहित आन विपक्षी दलक एहि मामिला मे सरकार पर लगाओल जा रहल निशानाक मध्य एहि विधेयक पर आम जनता सँ राय लेबाक समय सीमा आई समाप्त भऽ गेल। सरकार एहि विधेयक के बिहार विधान मंडलक शीतकालीन सत्रक दरमियान 7 दिसम्बर के प्रस्तुत करबाक लेल तैयार अछि। एहि विधेयक पर विचारक लेल 26 नवम्बर के सर्वदलीय बैसक सेहो आयोजित कएल गेल। आम लोक सँ भेटल सुझाव आ सर्वदलीय बैसक मे आएल सुझाव पर उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदीक अध्यक्षता बाला मंत्री समूह विचार कऽ एहि विधेयक के अंतिम रूप देत। मुख्यमंत्री के एकर अंतर्गत आनए आ लोकायुक्त नियुक्ति मे सरकारक हस्तक्षेपक बिन्दु पर सामान्य रूपे सभ सँ बेसी आपति उठि रहल अछि। ओना सरकार स्पष्ट कएलक अछि जे सभ मामिला पर विचार कऽ एकटा मजगूत लोकायुक्त विधेयक आनल जाएत। दोसर दिस, मुख्यमंत्री के लोकायुक्तक दायरा मे अनबाक विरोध कड़ैत पूर्व मुख्यमंत्री डाक्टर जगन्नाथ मिश्र सरकार के खुश करबाक प्रयास कएलनि अछि जाहि सँ कि दिल्लीक रास्ता खूजि सकए।

४

मनाओल गेल दरभंगा महाराजक जन्म दिवस

महाराजा कामेश्वर सिंहक 105म जन्म दिवस पर दरभंगा मे समारोहपूर्वक मनाओल गेल। एहि अवसर पर प्रख्यात समाज शास्त्री आ जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालयक पूर्व प्रोफेसर डाक्टर दीपंकर गुप्ता ''कामेश्वर स्मृति व्याख्यान माला'' मे अपन व्याख्यान प्रस्तुत कएलनि। समरोह मे बिहारक पूर्व पुलिस महानिदेशक डी.एन. गौतम विशिष्ट अतिथि छलाह जखन कि सामाजिक विज्ञान अध्ययन केन्द्र कोलकाताक प्रोफेसर डाक्टर पी.के. बोस अध्यक्षता कएलनि। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउंडेशन द्वारा आयोजित एहि समारोहक जनतब दैत प्रबंधक ट्रस्टी डा0 हेतुकर झा जनौलनि जे एहि अवसर पर कामेश्वर सिंह बिहार हेरिटेज श्रृंखलाक अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकक विमोचन सेहो कएल गेल।

५

प्रदेश मे खूजत पशु विश्वविद्यालय

प्रदेश मे वर्ष 2012 सॅ प्रारंभ होमए वाला आगिला पांच वर्षक लेल पशु आ मत्स्य संसाधन विभाग अपन रोड मैप तैयार कएल अछि। जाहि मे प्रदेश मे पशु विश्वविद्यालय, पशु मित्रक नियुक्ति आ कॉलेज खोलब प्राथमिकताक सूची मे अछि। पशु आ मत्स्य संसाधन विभाग सॅ भेटल जनतबक अनुसार प्रस्तावित पशु विश्वविद्यालयक अंतर्गत एकटा नव पशु महाविद्यालय, डेयरी

महाविद्यालय आ मत्स्य महाविद्यालय खोलल जायत। विभाग पशु संसाधन, डेयरी आ एहि सँ संबंधित आन क्षेत्रक विस्तृत पढ़ाई, आ शोध आदि पर 70,000 टाका अगिला पांच वर्ष मे खर्च करत। एकर अलावा प्रदेश सभ 8442 पंचायत मे पशु मित्रक बहाली होएत। पशु मित्रक चयनक बाद हुनका प्रशिक्षित कऽ अनुबंधक आधार पर नियुक्ति होएत। वर्ष 2012-13 मे 1720, वर्ष 2013-15 मे 1720 आ, वर्ष 2016-17 मे 1562 पशु मित्र के तकनीकि मदति उपलब्ध कराओल जाएत जाहि सँ ओ किसान के मदति करबाक संगहि पशु चिकित्सालय आ प्रखंड स्तर पर पशु चिकित्सक के सहयोग करताह। विभागक रोड मैपक अनुसार दुग्ध उत्पादन समिति मे नीजि जन भागीदारी (पीपीपी) क आधार पर पशु चारा आ पाल्ट्र प्लांट प्रत्येक प्रखंड मे लगैबाक योजना अछि। पशु चारा आ पशुक प्रदेशक सभ अड़तीस जिला मे 3800 लाखक टाकाक खर्च सँ आधुनिक पशु वद्यशाला सेहो खोलल जायत। पशु संस्थान के मजगूत कएल जायत प्रखंड पशु सेवा केन्द्र सभ 534 प्रखंड मे खोलल जायत जाहि पर 53400 लाख टाका खर्च होएत।

६

टाका नहि खर्च कएला पर बंद होएत आवंटन

ISSN 2229-547X VIDEHA

राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाक नहि खर्च करयवाला चीनी मिल मालिक सभके विÿीय वर्ष 2011-12क लेल टाका आवंटित नहि कएल जायत। वर्ष 2010-11क लेल एहि योजना मद सँ आवंटित टाका मे सँ बगहा चीनी मिल मे 35.97 लाख, नरकटियागंज मे 41.72 लाख, रीगा मे 90 लाख, लौरिया मे 65.53 लाख, मझौलिया मे 17 लाख, प्रतापुर मे 72.49 लाख, सुगौली मे 56.56 लाख, सिधवलिया मे 46 लाख आ गोपालपुर चीनी मिल मे 19.68 लाख टाका बाचल अछि।

४

प्रभात राय भट्ट

रोटी रोजीक खोजी

नेपालक मधेस प्रान्तमे महोतरी जिलाक धिरापुर गामक
बर्ष ३० भोला एकटा निम्नबर्गीय परिवामे

जन्म लेलक, हुनक माए बाबु बड मुस्किलसँ मेहनत
मजदूरी कऽ भोलाक पालन-पोषण केलक,

भोलाक माए-
बाबु गरीब हेबाक कारण भोला प्रारम्भिको शिक्षासँ वन्चित रहल। जेन-
तेन समय

बितैत गेल आ समयानुसार भोला पैघ सेहो भऽ गेल !

समयक संग संग हुनक दाम्पत्य जीवनक शुभारम्भ सेहो भऽ गेलै, भरल
जुवानीक अबस्थामे दाम्पत्य जीवनक

रसास्वादन एवं आन्नदमे पूर्ण रूपेण डुबि गेलाह।

ओ
अपन आर्थिक स्थितिकैं नजैर अंदाज करैत गेलाह मुदा बिना अर्थसँ जीवन
क गाड़ी कतेक दिन चलि सकैए !

कनियाक सौख श्रींगारक सामिग्रीः भोजन भातक बेबस्था वृद्ध माए बाबुकेँ दबाइ दारू सभक अभाव चारू दिशसँ

अखड़ऽ लगलै।

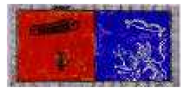
तकर बाद भोलाकेँ अपनजिमेवारीक बोध भेलै।

हुनका किछु नै सुझाइ जे की करू आ नै करू। राति दिन बेचारा भोला घरक लचरल बेबस्था देखि कऽ बड चिंतित

रहऽ लागल! एक दिन ओ अपन मिता
सुरेश कापरकेँ अपन सभटा दु:ख सुनैलक!
सुरेश बड नीक सलाह देलकै-देखू मिता अइ
नेपाल देशमे स्वरोजगारीक कोनो ब्यबस्था नै छै, पढलो लिखल मनुखकेँ नो करी नै भेटै छैक तहन हम अहाँ कोन जोकरक छी! हम एकैटा सलाह देब, सउदी अरब चलि जाउ, ओइ ठाम बड़ पैसा भेटै छैक, अहाँक सभटा दु:ख दूर भऽ जाएत। सुरेशक गप सुनि कऽ भोलाकेँ माथमे चक्कर देबऽ लगलै !!मुदा किछु देरक बाद भोला सहमती जनौलक आ सुरेशसँ बिदा लैत घर तरफ प्रस्थान केलक!

सुरेश घर पहुचैत बजैए- कनियाँ कतऽ गेली यै- हमरा बड़ जोरसँ भूख लागल अछि, किछु खाइले दिअ ने । कनियाँक कोनो जवाब नै एला उपरांत ओ भानस घरमे गेल। कनियाँकेँ देखलक। माथ हाथ धएने आ सिशैक सिशैक कऽ कानैत। अहां किए कनै छी यै अतराढंवाली? की भेल, किछु बाजब तब ने हम बुझबै! कनियाँ कहलकै....हम की बाजु आ बाजल बिनु रहलो नै जाइए, अहाँ जे कोनो काम धंधा नै करबै तहन ई चुल्हाचौका कोना चलत। एक पाउ चाबल छल जेकर मरसटका भात बना कऽ माए-बाबु आ बच्चा सभमे परसादी जकाँ बाँटि देलौं आ हम तँ उपबासो कऽ लेब मुदा अहाँकेँ तँ भूख बर्दास्त नै होइए तइसँ हमर छाती फटि रहल अछि मुदा अहाँकेँ तँ कोनो चिंता फिकिर रहबे ने करैए! तपेश्वर मालिक सेहो बड़ खिसिया कऽ द्वारपर सँ गेल। कहै छल जे ५०० टकाक हमर सूद ब्याज सहित २५००० भऽ गेल मुदा ई भोलबा अखन धरि देबऽ के नाम नै लैए।

हे यै अतराढंवाली, अहां आब जुनि चिंता करू, हमरापर भरोसा रखू। सभ ठीक भऽ जेतै। ई किछु दिनक दु:ख थीक। एकटा कहाबत छै जे भगवानक घरमे देर छै मुदा अंधेर नै।
अतराढंवालीक मोन अति प्रसन्न भेलै आ झटसं पुछि बैठैए- आइयौ

ISSN 2229-547X VIDEHA

रामपुकारक पापा- ई की बात अछि जे अहां एतेक पुरुषार्थ वाला गप करैत छी? की बजली यए अतराढंवाली एकर मतलब अहुं हमरा निकम्मे बुझैत छी? तँ कान खोलि कऽ सुनि लिअ। हम आब सउदी अरबिया जा रहल छी आ ढेर पैसा कमा कऽ अहां लेल भेजब! अतराढंवाली ई बात सुनिते घबरा गेल आ कहऽ लागल- की बज्लौं? कने फेरसं बाजु तँ। अहांकेँ जे मोनमे अबैए सएहे बाजि दैत छी। एहन बात आब बजैत नै होइब से कहि दै छी हम……………

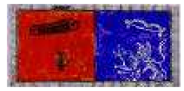
मोन तँ भोलाक सेहो उदास भऽ जाइए मुदा हिमत करि कऽ कनियाँकेँ समझाबक कोशिश करैए। देखियौ कनियाँ, हम जनैत छी जे हम कोनो काम धंधा नै करैत छी। तइयो अहां हमरासं खूब प्रेम करैत छी। आ हमहूँ अहां बिनु एकौ घडी नै रहि सकैत छी। ई सभटा जनैत बुझैत हम मजबूरी बस एहन निर्णय लेलहुं आ अइके अलाबा दुसर कोनो रस्तो नै अछि ! आखिर ई जीवन तँ प्रेम आ स्नेहसँ मात्र नै चलत। नै जीवनमे दुःख सुख भूख रोग शोक पीड़ा ब्यथा वेदना संवेदना प्रेम स्नेह विवाह बिदाई जीवन मृत्यु समाज सेवा घर परिवार इस्ट मित्र कर-कुटुंब नाता गोता मान सम्मान प्रतिष्ठा घर मकान, खेत खलिहान बगीचा मचान, सत्कार तिरिस्कार, मिलन बिछोड, ई सभटा जिनगीक अभिन्न अंग अछि, आ ई सभटाक जड़ि एकैटा थीक जेकर नाम अछि पैसा…………तँ

हमरा परदेश जाहिटा पड़तै- अहां कनिको मोन मलाल नै करू सबहक प्रियतम पाहून परदेश खटै छैक ! हे-यौ रामपुकारक पापा। ई बात सुनि कऽ हमर छाती फटैए..तहन अहां बिनु हम कोना रहि सकै छी? नै नै, हमरा नै चाही पैसा कौड़ी महल मकान। हम नुने रोटी खेबै। सेहो नै भेटत तँ साग पात खायाकऽ जिनगी काटि लेब। कहैत भोलाकेँ भरि पांज पकड़ि कऽ सिशैक सिशैक नोर बहबैत कानऽ लागैए....मुदा भोला कुलदेवताकेँ सलामी राखैत माए-बाबुसं आशीर्वाद लैत घरसं प्रस्थान भऽ गेल…………………!

<u>रोजी रोटिक खोजी भाग</u>

२

भोला साउदी अरबक एकटा कंस्ट्रक्सन कम्पनीमे राइतक ११ बजे पहुंचल आ भिन्सरमे ७ बजे आफिसमे हाजिर भऽ गेल। कम्पनीक मैनेजर साहब भोलासं कबूलनामा कागजपर साइन करबौलक आ भोलाकेँ उक्त कबूलनामाक विवरण सुनौलक :-

ISSN 2229-547X VIDEHA

१.मासिक वेतन ५०० रियाल ड्यूटी ८ घण्टा २.करार अवधि ३ वर्ष !

भोला ई बात सुनि कऽ हतप्रभ भऽ गेल जेना मानू भोलाक माथपर बज्रपात गिर गेल। फेर भोला अपने आपकेँ सम्हारैत मैनेजर साहबसं कहलक- नेपालक मेनपावरक कबूलनामा अनुसार हमर पगार ६०० रियाल + खाना +२०० ओभर टाइम आ दू वर्षमे ३ मासक छुटीक सर्त भेल छल। मुदा मैनेजर भोलाक एकोटा बात नै सुनलक। तहन भोला कहलक हम सुखा ५०० मे काम नै करब। २०० खानामे खर्च भऽ जाएत। बचत ३०० रियाल ३०० रियालक नेपाली टाका ६०० हजार मात्र होइत अछि। तइ हेतु हमरा वापस भेज दिअ! मैनेजर भोलाक सामने साम दंड भेदक सूत्र अनुसरण करैत कड़ा रूपसं प्रस्तुत भेल। बेचारा भोला मैनेजरकेँ चंडाल रूप आ कड़ा चेताबनीक सामने निरीह बनि गेल आ काम करबा लेल तैयार भऽ गेल!

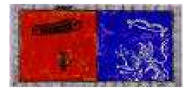
भोला अपन भाग्यक साथ समझौता करैत कम्पनीक काजमे इमानदारी पुर्बक सरिक भऽ गेल, मुदा महिना लागैत पगार हाथमे

आबिते भोला हिसाब किताबमे लागि जाइत छल। खाना नास्ताक खर्च निकालैत बाद मुस्किलसं ३०० रियाल बचैक। आब भोला घरक बारेमे सोचै लागल। ३०० रियालक सिर्फ ६००० नेपाली होइत अछि जाइसं घर परिवार चलत की रु.१००००० कर्जा सधत जेकर सिर्फ ब्याज ३०० हजार चलि रहल अछि। यएह बात सोचैत सोचैत प्रात: भऽ गेल। फेर बेचारा भोला अपन दैनिक काम काजमे तटस्थ रूपसं लागि जाए। यएह क्रम लगभग ५/६ महिना चलैत गेल। तेकर बाद भोला किछु टाका घर भेजलक, जइसं हुनक घर खर्च चलि रहल छल! १ साल बितला बाद भोलाक घरसं चिठ्ठी आएल। भोला उक्त चिठ्ठी पढ़ि कऽ मर्माहित भऽ गेल। चिठ्ठीमे लिखल रहैक- रामपुकारक बाबु घरक स्थिति बड़ नाजुक अबस्थासं गुजरि रहल अछि आ अहां जे कर्जा लऽ कऽ गेल छी ओकर ब्याज ३६०० हजार भऽ गेल। महाजन आएल छल। कहि कऽ गेल जे आब मूल धन रु. १३६००० भऽ गेल। ऐ बातपर ध्यान दिअ।

भोला चिठ्ठी पढैत फेर घरक चिंतामे डुबि गेल। कर्जा कोना सधत? भोलाकेँ उदास देख हुनक संघतिया पुछि बैठल। आइयो मिता अहां एना सदिखन एतेक उदास किए रहैत छी यौ? भोलाक ध्यान भंग भेल आ संघतियाकेँ अपन सभटा दु:ख सुनौलक! संघतिया हाथमे खैनी मलैत कहलक- रुकू, कने ई खैनी खाय दिअ, तहन

हम कुनु उपाय बताबै छी। खैनी ठोरमे धरैत झटसं एकटा गप भोलाकेँ सुनौलक। देखू हम जे कहैत छी से ध्यानसं सुनू। चुप-चाप हम आर अहां दुनु गोटे ई कम्पनी छोड़ि कऽ भागि चलू। कतौ दोसर ठाम जतए नीक कमाइ होइत होइक! मुदा भोलाकेँ संघतियाक गप कनियो निक नै लागल। भोला कहलक- देखू ई दोसरक देसमे भागि कऽ कतए जाएब। कहीं देहि नै भऽ गेल तहन के मदत करत आ दोसर ऐ देसक कानून बड़ कडा छैक। पकड़ा गेलापर जेलमे चक्की चलबऽ पड़त। तहन धोबीक कुत्ता नै घर नै घाटक। होइत अछि से बुझि लिअ। हम तँहि नै जाएब। अहाँ जाएब तँ जाउ !

भोला फेर अपन काम काजमे जुइट गेल आ भोलाक संघतिया मासिक १५०० पगारमे दोसर ठाम काम करै लागल। देखते देखते दुइ साल बित गेल ! भोलाक घरसं फेर एकटा चिट्ठी आएल। भोला चिट्ठी पढ़लक। चिट्ठी पढ़ि कऽ खुसी होमय बजाय पुनः उदास भऽ गेल आ गंभीर सोचमे डुबि गेल। भोलाकेँ सभसँ बड़का परेशानी रहैक कर्जा, जे ओ साउदी आबऽ बेरमे लेने रहैक। भोला सोचलक जे एतबा न्यूनतम पगारमे कर्जा कोना सधत। अंतत: भोला कम्पनी छोड़ि भागऽक निर्णय लेलक! भोला कम्पनीसं भागि संघतियाक कम्पनीमे चलि गेल आ मासिक १५०० सय पर काज करै लागल। भोला ५ महिनामे रु १००००० टाका घर सेहो भेज

देलक आ कनियासं फोन मार्फत गप केलक। कनियासं कहलक- ई एक लाख टाका महाजनक खतामे जमा कऽ दिअ।
आ हुनका कहि दिअ जे ५ महिनाक बाद
हम हुनकर सभटा पाइ चुकता कऽ देबै! आब भोला किछु प्रसन्न मुद्रामे रहै लागल आ अति प्रसन्नताक साथ सोचै लागल। लोक ठीक कहैत छै जे भगवानक घर देर छै मुदा अंधेर नै। आब हमरो बिपतिक घडी टड़ि रहल अछि मुदा बेचारा भोलाकेँ की पता जे भाग्य रेखा कियो नै देखने छैक। कखन की हेतै से मनुखक कल्पनासं बहुत दूरक चीज छैक। समयचक्र कखन कुन रूप लेत ई एकैटा परमात्मा जनैत छथि! बड़ मुस्किलसं भोलाक ठोरपर मुस्कान आएल छल मुदा दैबकेँ ई रास नै एलै। भोलाक जीवनमे तेज गतिसं एकटा बड़ भारी बज्रपातक आगमन भेलै। भोला अपन ड्यूटी खतम कऽ डेरा तरफ जाइके क्रममे रोड पार
करैत समयमे भोलाक देहपर तेज गतिमे कालरुपी एकटा गाड़ी चढ़ि गेल। भोला जीवन आ मृत्युक बिच एक घण्टा लादैत रहल। अंतत: भोला अपन चेतना गुमा बैठल। ताइ समयमे उद्धार टोली आबि कऽ भोलाकेँ अस्पतालमे भरती कऽ देलक! ऐ दुखद घटनाक २० दिन बाद भोलाक घरमे खबड़ि गेल जे भोला आब ऐ दुनियामे नै रहि गेल। रोड एक्सीडेंटमे हुनक मृत्यु भऽ गेल। ई बात सुनैत बेचारी भोलाक कनिया मूर्छित पड़ि गेल आ गाम घरक महिला सब भोला कनियाक चूड़ी फोड़ि मांगक सिंदूर धोबि विधवा बनाबक काजमे एकमत भऽ गेल। तखने समाजसेवी एकटा महिला ऐ बातक घोर

विरोध केलनि आ सब महिलाकेँ सम्झौलन- जा धरि कुनु ठोस पुष्टि नै भेटैए ताधरि रूकि जाउ। कहीं ई समाचार गलत होइक आ भोला जिन्दा होइक! गायत्री देवी जीक सुपुत्र प्रभात राय सेहो साउदी अरबमे रहथि ओ फोन सं सभटा बात सुनैलथि आ प्रभात राय अस्वासन देलथि जे अहां सभ हमर फ़ोनक प्रतीक्षामे रहू हम अखने वास्तविकता की अछि से कहै छी।

प्रभात भोलाक घटना प्रति जानकारी हासिल करैमे लागि गेल! अस्पताल, पुलिस, एम्बुलेंस, ट्राफ्फिक सभ ठाम पता लगौलाक बाद प्रभातक मेहनत रंग लौलक। भोलाकेँ जिबिते अबस्थामे रियाद स्थित एकटा अस्पतालक कोमामे भरना भेल देखलक। प्रभात तुरत गाममे फोनसँ आँखि देखल पुख्ता जानकारी देलन्हि। ई बात सुनैत धिरापुर गाममे हर्सौल्लासक माहौल बनल आ गामक सबलोक प्रभातकेँ धन्यबाद दैत एकटा विनम्र अनुरोध केलथि। जते खर्चा लागतै हम सभ चंदा उठा कऽ देब मुदा भोलाक जान बचा दियौ! प्रभात अस्वासन देलथि, अहां सभ जुनि चिंता करी, हमरासं जते बनि पड़त हम जरुर करब। आब भोलाक उद्धार कार्यमे प्रभात दिन राति एक कऽ देलक। तीन मासक बाद भोला अर्धचेतन अबस्थामे आएल। फेर एक महिना उपचारक बाबजूदो किछु आंशिक सुधार मात्र भेल। एम्हर अस्प्तालक खर्च सेहो जीवन बीमाक हद पार कऽ गेल। प्रभातक प्रयासमे भोलाकेँ बैधानिक कम्पनी आ जीवन बीमा

अस्पतालक खर्च चुकता केलाक बाद डिस्चार्ज भेल आ नेपाल पठाउल गेल! भोलाकेँ जिबिते अबस्थामे गाम आबक खबरि सुनि कऽ भोलाकेँ परिवार लगाइत समूचा गामक लोक एकबेर पुनः खुश भेल। २ दिनक बाद भोला अपन मातृभूमिमे पहुंचल आ सबहक प्रतीक्षाक घड़ी ख़त्म भेल! भोलाकेँ जीवित देखैला समूचा गामक लोक आबि गेल मुदा भोला ई सभ बातसं बहुत दूर जा चुकल रहैक। ओ ऐ काबिल नै रहैक जे किनकोसं मिलनक खुसी बाँटि सकए। भोलाकेँ अपंग आ अर्धचेतन अबस्था देख सभक मुहसं आह निकलि गेलै! भोलाक कनिया अपन सोहागरूपी पति परमेश्वरकेँ अपंगो अबस्थामे भेट गेलै तैँ खुसी जरुर भेलै मुदा किछु दिन बाद अतराढवालीक लेल ओकर सोहाग एकटा दीर्घकालीन बोझ बनि गेलै, ओइ बोझक भार उठेनाइ बड़ मुस्किल भऽ रहल छै, किए तैँ आजीवन अपंग आ अर्धपागल रही गेलाह !!

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

३. पद्य

***३.१.*१**गुलसारिका २. 

भावना नवीन

३.२.ओमप्रकाश झा

*३.३.*१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' २. 

मिहिर झा ३.जगदानंद झा 'मनु'

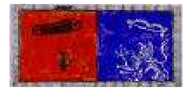
३.४.१**शिवशंकर सिंह ठाकुर २.**अमित मोहन झा ३. रवि मिश्रा'भारद्वाज'

३.५.१.अनिल मल्लिक २उमेश पासवान ३.जगदीश प्रसाद मण्डल ४. मुन्नाजी हाइकू

३.६.१. अन्जनी कुमार वर्मा २.
रामबिलास साह

*३.७.*१.डॉ॰ शशिधर कुमर २ नवीन कुमार "आशा"

*३.८.*१.प्रभात राय भट्ट २. **अमरेन्द्र कुमार मिश्र**

२०११ (वर्ष ४ मास ४८ अंक ९५)http://www.videha.co.in मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१.गुलसारिका २.**भावना** नवीन

१

गुलसारिका, भोपाल

बांहि केर डारि सँ खसला पर
जँ देह में खोंच लागियो जाए त
संतोख अछि
सम्हारबाक चेष्टा त कएलहुँ अहाँ
भरिसक हमरे जकाँ अहिना
कोनो युग में
धरा उधियाएल होएतीह

आ अम्बर हुनक डेन धरबाक चेष्टा मे
हुनकहिं उपर ओंघरा गएल होएताह
क्षितिज देखि त अहिना लगैये
क्षितिज भ्रम नहिं
अनुपम सत्य थिक
किएक त क्षितजक पार
कोनहुँ सत नहिं कोनहुँ असत नहि
सृष्टि नहिं ब्रम्हांड नहिं अतः
विध्वंसो नहिं
तें हमर हे सनातन अधिष्ठाता
तर्क छोड़ू
तर्कक गाछ पर सिद्धांक फॉड़ पकै छै
सेहो आस्था विश्वास आ प्रेमक पात
झड़ि गेलाक बाद
तें आब जखन हम प्रश्नशून्य छी
त आँखिक आगू
उत्तरोत्तर उत्तरक बाढि अछि
भसिया ने जाई तें
आँखि मुनने स्वयं मे लीन
संकल्प दोहरबति छी ठाढि
जे आब एकहु डेग आगाँ नहि
एकहु डेग पाछाँ नहि अहीं त छी हमर पूर्णविराम

२

जाहि वयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह
केसक जुट्टी में हम तारा गुहलहुँ
जाहि वयस हमर बहिना गौर पुजलनि
हमहुँ अपन सीथ मे सेनुरक बान्ह बन्हलहुँ
ओ ईनार सँ हम अकासगंगा सँ
घैलक घैल भरलहुँ तैयो
रौदीमे जेना पियास सुखा गेल आ
आ साओनमे आँखिक धरनि चूबए लागल
एहि बेरका जाड़ सोचने छी किछु आर
हमर बहिना सुएटर बुनतीह
हम दू जोड़ बाँहि आ एक जोड़ साँस बुनब

२

ISSN 2229-547X VIDEHA



भावना नवीन

गज़ल

जिनगी एकटा दुखक गीत अछि, सदिखन गुनगुनाबय पडत
दर्द बड़ड भारी अछि मुदा, एहि में हमरा मुस्कुराबय पडत !

बुझि रहल अछि दिया प्रेमक,बैढ़ रहल अछि अन्हार बड़ड
ई नेहजोत आब हमरा लहूलुहान दिल सँ जराबय पडत !

रूसलों किएक अहीं बुझैत छी , हम तं एतबे जनैत छी
रुसि गेलों जे अहाँ हमरा सं हमरे अहांके मनाबय पडत !!!

लाज रखवा लेल अपन प्रेमक तोडब हम सभ बंधन
दिल नै खाली हमरा, बाजीयो जान केर लगाबै पडत !!!

उदास भ अहाँक अंगना से जे, हमरा उठि के जाय पडत
अपन "भावना" के अर्थी अपनहि उठाबय पडत !!!!

२

गजल

अहाँ सँ मिलवा लेल आयल छलों
आबि बहुत पछ्तेलहूँ हम

सोचि दूरी एहि असगरपन कें
ओहि राति बड देर धरि जागलों हम

पुरबैया केर झोंक जकां लोग कतेक
आयल, कतेको सँ ओकतायलहूँ हम

जाहि सोच में ओ डूबल छलाह
ओहि 'भावना' सँ घबरेलहूँ हम ...

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

ओमप्रकाश झा

गजल

पता नै कोन आगि मे जरैत रहल करेज हमर।

पानि नै खाली घीए टा चाहैत रहल करेज हमर।

आनक मरल आत्मा कें जीया कें राखैक फेर मे फँसि,

नहुँ-नहुँ सुनगैत मरैत रहल करेज हमर।

एतेक मारि खेलक झूठ प्रेमक खेल मे जमाना सँ,

कियो देखलक नै कुहरैत रहल करेज हमर।

फेर कतौ नै कियो बम फोडि कँ अनाथ करै ककरो,

सूर्योदय होइते धडकैत रहल करेज हमर।

अपना कँ नित जीयाबै मे करेजक खून करैत छी,

खसि-खसि कँ देखू सम्हरैत रहल करेज हमर।

दुख आ सुख मे अंतर करै मे नै ओझरा कँ कखनो,

नब गीत सदिखन गबैत रहल करेज हमर।

---------------- वर्ण २० -----------------------

ISSN 2229-547X VIDEHA

गुरूदेव आशीष जी कँ सादर समर्पित।

2

आईना सदिखन हमरा सत्ते कहै छै।

हमर रूप हमरे देखबैत रहै छै।

चलि गेलौं त' बूझलौं अहाँ हमर नै छी,

बनल विश्वासक किला एहीना ढहै छै।

धार कँ कोन मतलब भूमिक दर्द सँ,

जेम्हरे मोन भेल धार ओम्हरे बहै छै।

देखू प्रेमक अकाल नै छै एहि गाम मे,

उधारक प्रेमक बाढि सँ गाम दहै छै।

ककरो मारबाक चोट सहि लेत "ओम",

मुदा बूझै नै प्रेमक मारि कोना सहै छै।

-------------- वर्ण १५ ---------------

3

गजल

आइ-काल्हि सदिखन हम अपने सँ बतियाईत रहै छी।

लोक कहै ए जे हम नाम अहींक बडबडाईत रहै छी।

सब बैसार मे आब चर्चा कर' लागलौं अहींक नाम केर,

सुनि कें कहै छै सब जे निशाँ मे हम भसियाईत रहै छी।

हमरा लागै ए निशाँ आब टूटि गेल छै पीबि लेला कँ बाद,

सोझ रहै मे छलौं अपस्याँत, आब डगमगाईत रहै छी।

एते बेर नाम लेलौं अहाँक हम, कहियो त' सुनने हैब,

कोन कोनटा मे नुकेलौं अहीं कँ ताकैत बौआईत रहै छी।

एक चुरू अपने हाथ सँ आबि कँ पीया दितिये जे "ओम" कँ,

मरि जइतौं आराम सँ हम, जाहि लेल टौआईत रहै छी।

---------------------- वर्ण २२ ----------------------

4

गजल

नित पूछै छै किछ सवाल इ जिनगी।

करै सदिखन नब ताल इ जिनगी।

कखनो बनि दुखक घुप्प अन्हरिया,

लागै मारि सँ फूलल गाल इ जिनगी।

सुखक राग कखनो सुनाबै एना कँ,

रंगल बनि कतेक लाल इ जिनगी।

कहै जिनगी होइत छै जीबैक नाम,

ककरो लेल होइ ए काल इ जिनगी।

जिनगी कँ बूझै मे "ओम" ओझरायल,

जतबा बूझलौं लागै जाल इ जिनगी।

ISSN 2229-547X VIDEHA

------------- वर्ण १४ -------------

5

गजल

एकटा खिस्सा बनि जइते अहाँ संकेत जौं बुझितहुँ।

हमही छलहुँ अहाँक मोन मे कखनो त' कहितहुँ।

लोक-लाजक देबाल ठाढ छल हमरा अहाँ कँ बीच,

एको बेर इशारा दितियै हम देबाल खसबितहुँ।

अहाँक प्रेमक ठंढा आगि मे जरि कँ होइतौं शीतल,

नहुँ-नहुँ भूसाक आगि बनि कँ किया आइ जरितहुँ।

सब कँ फूल बाँटै मे कोना अपन जिनगी काँट केलौं,

कोनो फूल नै छल हमर, काँटो त' अहाँ पठबितहुँ।

जाइ काल रूकै लेल अहाँ "ओम" कँ आवाज नै देलियै,

बहैत धार नै छलहुँ हम जे घुरि कँ नै अबितहुँ।

------------------ वर्ण २० ---------------------

6

गजल

हमर नजरि मे पैसि कँ हमर नजरि बनि फडकि रहल छी।

पोर-पोर मे अहीं समेलौं, सीना मे हमर अहीं धडकि रहल छी।

विरह-विष सँ मोन पीडित छल, अहाँक प्रेमक अमृत भेंटल,

प्रेम-सुधा सँ मोन नै भरै, जतबा पीबि ओतबा परकि रहल छी।

ISSN 2229-547X VIDEHA

हृदयक छल बाट सुखायल, जेकरा सिनेह अहाँक भीजायल,

छन-छन भीजि प्रेमक बरखा मे, तखनो किया झरकि रहल छी।

जिनगीक रौदी कें अहीं भगेलौं, अहाँ प्रेम-मेघ केर छाहरि केलौं,

भरल हमर आकाश प्रेम सँ, अहाँ छी बिजुरि तडकि रहल छी।

भाव-शून्य "ओम"क छल जे अंतर, जिनगी मे आबि मारि कें मंतर,

अहीं बनलौं गजल कविता, बनि भाव मोन मे बरकि रहल छी।

--------------------------- वर्ण २५ ---------------------------

7

गजल

भेंटलै जखने नबका मीत पुरना कें कोना छोड़ि देलक।

जकरा सँ छल ठेहुँन-छाबा, हमर मोन के तोड़ि देलक।

सपथक नै कोनो मालगुजारी, सपथक नै बही बनल,

संग जीबै-मरैक सपथ खा कें जीबतै डाबा फोडि देलक।

ओकरा लग छै ढेरी चेहरा, हमरा लग बस एके छल,

अपन भोरका मुँह पर नब मुँह साँझ मे जोडि देलक।

जिनगी-खेत मे विश्वास-खाद द' प्रेमक बीया हम बुनल,

धोखा केर कोदारि चला कें देखू लागल खेती कोडि देलक।

"ओम" प्रेमक घर बनेलक, ओकरा बिन छै सून पडल,

बाट जे जाइ छल ओहि घर मे, कोनो जोगारे मोडि देलक।

---------------------- वर्ण २२ --------------------

8

गजल

कतौ छै रौदी प्रचंड, कतौ बरखा सँ हरान छै।

कतौ छै फूजल मोन, कतौ बन्न पेटी मे प्राण छै।

ककरो भेल अपच, कियो देखू भूखले मरल,

कतौ छै होइत भोज, कतौ उजडल दोकान छै।

एके कलम सँ लिखलक किया भाग्य नै विधाता,

कतौ छै तृप्त हृदय, कतौ छूछे टा अरमान छै।

कियो मुट्ठी मे समेटने कते इजोत छै बैसल,

कतौ छै जे सून घर, कतौ भरल इ दलान छै।

अचरज सँ देखै छै "ओम" लीला एहि दुनियाक,

कतौ छै इ मौनी खाली, कतौ बखारी भरि धान छै।

------------------ वर्ण १८ -----------------

9

गजल

पिया जुनि करू बलजोरी, लोक की कहत।

प्रेम करू मुदा चोरी-चोरी, लोक की कहत।

तन्नुक शरीर मोरा यौवन उफनायल,

चुप्पे बान्हू अहाँ प्रेम-डोरी, लोक की कहत।

थमल नै डेग, अहाँ प्रेम-नोत पठाओल,

हम आब बनलौं चकोरी, लोक की कहत।

श्याम रंग मे अहाँक मोर अंग रंगायल,

दीयाबाती मे खेललौं होरी, लोक की कहत।

"ओम"क प्रिया इ आतुर मोन कें बुझाओल,

कतेक कहब कर जोडि, लोक की कहत।

-------------- वर्ण १६ --------------

10

गजल

ओ हमरा बिसरि गेल जे गाबैत रहै छल हमर गीत।

शहरक हवा लागि गेलै आब भेल शहरी हमर मीत।

मोनक कोनटा मे नुकेलक नेनपनक सभ क्रीडा-खेल,

खाइ छलै संगे पटुआ, ओकरा लागै मधुर हमर तीत।

छल जुटल जकरा संग हृदय हमर, रहितो काया दू,

हमरा हरबैथ आब, अपमान बूझैथ ओ हमर जीत।

दोस्तीक सपथ खाइत नै छलै अघाइत ओ हमरा संग,

भसकेलक घर दोस्तीक, द्वेषक बनि गेल हमर भीत।

मीत घुरि आबू, एखनहुँ "ओम"क हृदय मे अहींक वास,

फेर बहाबियो धार दोस्तीक, जे छल अहाँक हमर रीत।

-------------------- वर्ण २२ ---------------------

(हमर नेनपनक मीत कें समर्पित, जे हमरा बिसरि गेला)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' २. **मिहिर झा ३.**जगदानंद झा 'मनु'

१

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

१

ई जे पोथी पतरा थीक
सभटा कनियां-पुतरा थीक ।

परिजन-पुरजन, हीत-अपेक्षित
जाल बहुत,एक मकरा थीक ।

दूर सं देखल नदी बुझायल
लग जा देखल,डबरा थीक ।

फूलक माला बहुत पहिरलहुं
कांटहु हमरहि बखरा थीक ।

धोती लाल, घुनेस माथ पर
चलल कटैले, बकरा थीक ।

भोंट ने एकरा दिय' एकहुटा
इ तं चिन्हले लबरा थीक ।

करनी देखब मरनी बेरिया
गारि ने थिक इ फकरा थीक ।

२

पहिने एकटा काज करू
सभकें बांटू ,राज करू ।

सदनमे जा कऽ सूति रहै छी
किछु तं बौआ लाज करू ।

अहांक पुरखा छथि विद्यापति

हुनका पर तं नाज करू ।

जाति,धर्म सब जेल बनल अछि
अपना कें आजाद करू ।

कहि गेलाह हरिमोहन बाबू
शिक्षित अपन समाज करू ।

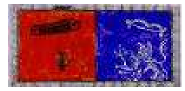
पचपनमे बचपन नहि आओत
कतबो अहां रियाज करू ।

अपनहि माय-बहिन सन बूझू
हमरा जुनि बरबाद करू ।

२

**मिहिर झा**

बदरा घुमि घुमि आउ

ISSN 2229-547X VIDEHA

बदरा घुमि घुमि आउ

हरियर हरियर दूबि क बिछौना

अहां आबि भिजाउ

बदरा घुमि घुमि आउ |

देश अयला हमर सजना

चंचल भेल हमर नयना

और नहि तडपाउ

बदरा घुमि घुमि आउ |

पिया छथि हमर एखने आएल

बरख से आगि अछि देह मे लागल

आबि अहां मिझाउ

बदरा घुमि घुमि आउ |

३

जगदानंद झा 'मनु',

पिता- श्री राज कुमार झा, जन्म स्थान आ पैत्रिक गाम : हरिपुर डिहटोल ,जिला मधुबनी, शिक्षा :प्राथमिक -ग्राम हरिपुर डिहटोल मे, माध्यमिक आ उच्च माध्यमिक -सी बी एस ई, दिल्ली, स्नातक -देशबंधु कालेज ,दिल्ली बिश्वविद्यालय

(१) मायक भूमि बजा रहल अछि

जुनि हमरा जकरु महामाया, मायक भूमि बजा रहल अछि

जाहि माटी कए देह बनल हमर,ओमाटी बजा रहल अछि

रुन-झुन संगी-साथीक हमरा, याद बहुत शता रहल अछि

काका-ककिक मधुर वोल ओजे,कान्में घंटी बजा रहल अछि

जुनि हमरा जकरु महामाया, मायक भूमि बजा रहल अछि

सोंधी-सोंधी मुरहीक खुशबु,गामक हमरा खीच रहल अछि

कनियाँ-काकीक कडकड कचड़ी,मोन कए डोला रहल अछि

लहलह झुमैत खेतक धान, शीश हिलाके बजा रहल अछि

चौरचन, छैठक सनेसक स्वाद, हमरा कचोत रहल अछि

हुक्का-लोलिक उक जे फेकल,सुमैर हमरा कना रहल अछि

नै सैहसकै छी दुरी एते आब, ह्रदय-बांध टूट रहल अछि

जुनि हमरा जकरु महामाया,मायक भूमि बजा रहल अछि

----

(२) कविता

पाई

आई पाई सँ प्यार

खरीदल जाएत छैक

सम्मान खरीदल जाएत छैक

वस् ! जेबी में हेबाक चाहि

पाई

हमरा नहि चाहि

ई पाईयक दुनियाँ

हमरा नहि चाहि

ई भाराकए दुनियाँ

हम तs वसायव्

अपन एक नव आशियाँ

जाहिठाम प्यार कए अहमियत होई

सम्मान कए पूजा होई

जाहिठाम

ठोड पर हँसी लावैक लेल

ह्रदय सँ आह! नहि निकलै

शब्द बजैक सँ पाहिले

लाबा में नहि बदलै

जाहिठाम

अर्थ कए अर्थ समझल जाए

सबके भीतर

एक प्यारक आशियाँ

बसायल जाई ।

३

एक दिन हमहूँ मरब

एक दिन हमहूँ मरब

दुनियाँ कए सुख-दुख छोइर कए

निश्चिन्त हेवा हेतु

देखै हेतु दुनियाँ में अपन प्रतिमिम्ब

कए खुशी होइए कए दुखी होइए

एक दिन हमहूँ मरब

देखै लेल समाज में

हमर की स्थान छल

देखै लेल किनका ह्रदय में

हमर की स्थान छल

एक दिन हमहूँ मरब

करए लेल अपन पापक हिसाब

हमर पाप सँ कए कुपित छल

कए क्रोधित छल

कए द्रविल-चिंतित छल

कए खुसी छल

कए दुखी-व्यथित छल

एक दिन हमहूँ मरब

परखै हेतु अपन ह्रदय

अपन स्नेही-स्वजनक ह्रदय

अपन मितक ह्रदय

अपन अमितक ह्रदय

४

कविता

पाई

ISSN 2229-547X VIDEHA

आई पाई सँ प्यार

खरीदल जाएत छैक

सम्मान खरीदल जाएत छैक

वस् ! जेबी में हेबाक चाहि

पाई

हमरा नहि चाहि

ई पाईयक दुनियाँ

हमरा नहि चाहि

ई भाराकए दुनियाँ

हम तऽ वसायव्

अपन एक नव आशियाँ

जाहिठाम प्यार कए अहमियत होई

सम्मान कए पूजा होई

जाहिठाम

ठोड पर हँसी लावैक लेल

ह्रदय सँ आह! नहि निकलै

शब्द बजैक सँ पाहिले

लाबा में नहि बदलै

जाहिठाम

अर्थ कए अर्थ समझल जाए

सबके भीतर

एक प्यारक आशियाँ

बसायल जाई ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.**शिवशंकर सिंह ठाकुर २.**अमित मोहन झा ३.
रवि मिश्रा’भारद्वाज’

१.

**शिवशंकर सिंह ठाकुर**

लगई छी अहाँ सोना जकां

चन्द्रमा सन चेहरा अहाँ के ,
चानन सन शीतल छाँव अहाँ के ,
निकलै छी अहाँ जोऊ कतोउ स ,
गम्कैत छी अहाँ फूल जकां ----------------

रूण -झुन,रूण-झुन पायल बजै अछि ,
चंचल अहंक नैन लागैत अछि ,

देखि जिम्हर सं अहाँ जाई छी ,
ताकै छी अहाँ के हिरण जकां ....

जूड़ा बना क जे घर स निकलै छी,
लागै छी अहाँ सोना जकां ,
अपन अदा स जे अहाँ देखै छी ,
चमकै छी अहाँ बिजुली जकां ....

राति इजोरिया नीक लगई अछि ,
लागै छी अहाँ चानी जकां ,
चोर नजरि स जे हमरा देखै छी,
लागै छी अहाँ बादल जकां ....

"प्रेम अहाँ स हम करै छी"
बाजू अहाँ कनी नीक जकां ,
जिनगी हमर हैत स्वर्ग स सुन्दर ,
राखब अहाँ के रानी जकां ....

२.


अमित मोहन झा

ग्राम- भंडारिसम(वाणेश्वरी स्थान), मनीगाछी, दरभंगा, बिहार, भारत।

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

पहिलुक दिन हम याद करई छी,

नबकी भीर पर माछ मारई छी,

पहिलुक दिन हम याद करई छी,

ई पैनपीबी ओ पुरहित्ता,

पोखईर मखानक बिढ़नी के छ्त्ता,

मारल माछ उपइछ के खत्ता,

जामुनक गाछ पर घोरणक छत्ता,

आम लतामक की पुछई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

पापाजी कमाबईथ बड्ड थोड़,

पर हुनकर इच्छा बड्ड ज़ोर,

हमहू पढ़ही थोरबों थोर,

सुइन सुइन हमर माथा घोर,

हुनक प्रयास नहि बिसरी सकई छी,

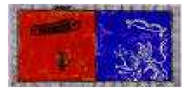
पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

नहि देखला जहन तनिको सुधार,

मन मे सब क्यो केलइन विचार,

स्कूल हमर बदलबाक चाही,

प्राइवेट स्कूल सबहक उर माही,

ISSN 2229-547X VIDEHA

सब बुझलइथ आब सुधईर सकई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

भरि दिन गाछी मे बौएनाइ,

नहि स्कूलक टास्क बनेनाइ,

मित्रक संगे दिन बीतेनाइ,

गामे गामे खूब छिछिएनाइ,

यादि करैत ओ सिहरि उठई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

सिंगही बिल मे हाथ घुसेनाइ,

सुग्गा पकरई शीशो पर चढ़नाई,

ब्योंत लगा कांकोर बहरेनाइ,

ओरहा बादामक बना के खेनाई,

यादि करैत आब हम शरमाई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

कल्याणी के गुढ़ विचार,

क्षुब्ध देखि हमर ई व्यवहार,

ओ सदिखन केलैन प्रयास,

बदलब हम हुनका छल भास,

बड़की बहिन मे माँ के पबई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

बाबा हमर विद्वताक खान,

ओ नहि छेला किछ से अनजान,

तकला क्षण मे एक उपाय,

पापा के कहलाइन समझाय,

हिनका अहाँ ल जाउ अररिया,

रन-बन घुमईथ भरि दुपहरिया,

हाथ से कहीं ई निकलि नै जाय,

ततत्काल ई करू उपाय,

ओ वचन अखनों तक सुनई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

एकर छेलइन्ह पापा के भान,

लय जाइथ संगे वाणेश्वरी स्थान,

रास्ता भरे बुझाबईथ जाइथ,

ई नहि करी ओमहर नहि जाइ,

सब दृशतांटे यादि करई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

पापा संगे अररिया गेलौ,

अपन आदत ओतहु नहि छोरलौ,

पापा जेबी से पाई चोराय,

रॉयल टाकीज़ सिनेमा देखय जाय,

कॉमिक्सक ते खान बनेलौ,

गलत राह पर किछ आर चललौ,

पापाक बेबसी यादि करई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

स्कूल से कतेक बेर भगलौ,

तुइत इमली तर समय बीतेलौ,

पहिल विचारल नहि हम पढ़बइ,

नगर नगर मे घुमबे करबई,

अन्न्पूर्णा के गोल मिठाई,

मित्रक सब संग तास खेलाई,

यादि करैत हम खूब बिहूसई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

पापा अपनहि खेनाई बनाबईथ,

घर-बजारक काज सरियाबईथ,

ओजपूर्ण कविता ओ सुनाबईथ,

हमर सुतल आत्मा के जगाबईथ,

रोम रोम पापाक ऋणी पबई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

आंखि हमर तुरंत फुजि गेल,

भेलहु जहन दसवीं मे फेल,

माँ-पापाक आंखिक नोर,

पिघलल हमर हृदय कठोर,

प्रण केलौ आब करब ईजोर,

चाहे सूरज बदलईथ छोर,

ई बातक आइ गांठ बनहई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

लक्ष्य अखनि धरि अइछै दूर,

प्रण अछि जे करबई ओ पूर,

करईथ शारदे कृपा अपार,

हमर लगाबईथ बेरा पार,

हे माँ कल जोरि नमन करई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

माँ हमर जनमहि नहि देल,

भाग्य विधाता सेहो भेल,

छईथ दुर्गा के ओ अवतार,

करय एली हमर उध्धार,

माँ पापा लेल "अमित" लिखई छी,

पहिलुक दिन हम यादि करई छी।

३


रवि मिश्रा'भारद्वाज'

ग्राम : ननौर

जिला : मधुबनी

जिनगी की कहु एहेन अंजान बाट मे चलल जा रहल अछि
भोर ठीक सों भेल नहि मुदा सांझ ढलल जा रहल अछि

मोजर त खूब लागल छल गाछ मे
टुकला ठीक सों भेल नही मुदा मोजर झरल जा रहल अछि

कियो अन्न बिन तरपै अछि त कियो पानी बिन
ककरो पानी भेटल नई मुदा ककरो गिलास मे मदिरा भरल जा रहल अछि

ककरो चूल्हा अन्न बिन बुझायल अछि
महगा बेचे के चक्कर मे ककरो कोठी मे अन्न सरल जा रहल अछि

ISSN 2229-547X VIDEHA

बाहारक लगाल आगी देखी सब कियो बुझायात
के बुझायेत मोनक आगी जे बिन धधरे जरल जा रहल अछि

कियो मरि के जिब रहल अछि
कियो जी के जेना मरल जा रहल अछि

2

'कलेश"
करेजा मे धूसल एहेन कलेश
पल मे बदैल गेल सुन्दर रुप आ भेश
एहेन बज्र खसौलक विधाता
तौर देलक जिनगी केर डोर
ईजोतो मे सिर्फ अन्हार अछि
संतोष धरब ककरा पर
रोकने नै रुकै या आखिक नोर
हे सखी पहिने आबि
रांगल जिनगी केर रांगै छलौ
करम हमर फूटल
अपन सँ संग छूटल

अहुँ किया फेरै छी मुँह
कनेक खूशी देबय मे किया लागै या अबुह
जी के जेना रोज मरै छी
ककरा देखायब ई नोर
रोज आँचर मे धरै छी
ई नोर नै निकलैत अछी सिर्फ,
अपन दुखमयी जिनगी आ दशा पर
बल्कि किछू लोकक अवहेलना आ कुदशा पर
शूभ काज सँ राखल जाय या हमरा दुर
किछू लोकक मोन अछि कतेक क्रुर
हे सखी हमहु अही जेना नारी छी
मुदा भेद अछी सिर्फ अछि एतवा
लोक कहैत अछी हमरा विधवा

३

'गजल'

जिनगी किया एना तंग लागै या

रांगल त छी मुदा बेरंग लागै या

बचपन बितेलौ रेत, मे जवानी खेत मे

कोना कततै बुढापा ऐकता जंग लागै या

जे दोस्त बनि दूस्मन भेल छल दूर

बेचारा भेल लाचार आब त ऑहो संग लागै या

मोजर नहि केलौ जकरा कहीयो

भैल शक्ति क्षिन्न आब ऑहो दबंग लागै या

४

· 'गजल'

जिनगी की कहु एहेन अंजान बाट मे चलल जा रहल अछि
भोर ठीक सों भेल नहि मुदा सांझ ढलल जा रहल अछि

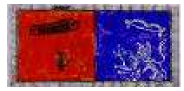
मोजर त खूब लागल छल गाछ मे
टुकला ठीक सों भेल नही मुदा मोजर झरल जा रहल अछि

कियो अन्न बिन तरपै अछि त कियो पानी बिन
ककरो पानी भेटल नई मुदा ककरो गिलास मे मदिरा भरल जा रहल अछि

ककरो चूल्हा अन्न बिन बुझायल अछि
महगा बेचे के चक्कर मे ककरो कोठी मे अन्न सरल जा रहल अछि

बाहारक लगाल आगी देखी सब कियो बुझायात
के बुझायेत मोनक आगी जे बिन धधरे जरल जा रहल अछि

कियो मरि के जिब रहल अछि
कियो जी के जेना मरल जा रहल अछि

ISSN 2229-547X VIDEHA

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१. अनिल मल्लिक २उमेश पासवान ३.जगदीश प्रसाद मण्डल ४. मुन्नाजी हाइकू

१

अनिल मल्लिक

“स्वीकारोक्ति”

आखर आखर शब्द लिखै छी, शब्द अर्थ औ मर्म लिखै छी
मात्र लिखै छी, मर्म ने बुझलहु, केलहु हम एहन कुकर्म लिखै छी

आत्मा हमर कराही रहल अछी, पश्चाताप जेना डाही रहल अछी
समधीयाना उजाडी कोठा भरलहु, भेल बडका अधर्म लिखै छी

पुत्र'क पिता छलहु, दम्भ भरल छल, डुबल लालच मे आकँठ लिखै छी
बयश ढलल, बिष दन्त झरी गेल, देलहु जे दहेज'क डन्क लिखै छी
पुत्रबधु छैथ माता सीया सन, साउस ससुर'क ध्यान रखै छैथ
देखीकय हुनकर सेवा औ समर्पण, लज्जा सॉ भिजैत नयन लिखै छी

साउसो धीया छलैथ, ननैदो धीया छलिह, दहेज ने कोनो रीत लिखै छी
सीया सन धीया, घर घर मिथिला मे, होई धीया के जीत लिखै छी
'बैष्णव जन....पीर पराई..' बिसरलहु, अपराधबोध दिन रैन लिखै छी
अन्त समय निकट आबि रहल अछी मुदा, मोन मे नै अछी चैन लिखै छी

प्रेम लिखै छी, प्रित लिखै छी, कहियो बिरह'क गीत लिखै छी
अपराध हमर क्षमा करु ''माँ मिथिला'', हम ई धीया के जीत लिखै छी
साँझ दुपहरिया भोर लिखै छी, सन्ताप'क नई कोनो छोर लिखै छी

ISSN 2229-547X VIDEHA

किन्हको ने होय येहन पिडा पछतावा, विन्ती हम कर-जोर लिखै छी

सुनी सभ ब्यथा ‘‘दद्दा’’ के अयलहु अछी, हुन'क मात्र बयान लिखै छी
बर्ण बिन्याश मे छी हम अज्ञानी, गल्ती'क देब क्षमादान लिखै छी

कहय सुनय मे सहज लगै अछी मुदा, आब करु दृढ सँकल्प लिखै छी
"आत्म-लोकपाल" देत मुक्ती ई तक्षक सॉ ,नै और कोनो बिकल्प लिखै छी

आखर ... आखर ... शब्द ... !

२


उमेश पासवान

कविता-

डेग डेगपर खतरा

लोक लोककेँ

जानसँ मारै छै

दानव सन

करै छै बेबहार

कियो भऽ गेल

बइमान कियो चोर

कियो दहेज लोभी

कियो डाकू खॅखार

विश्वास केकरापर

के करत?

अपनो अप्पनकेँ

लऽ लइ छै जान

मनुख-मनुखकेँ

नै चीन्हि रहलैए

मनुख चरित्र

जानवर सन भऽ रहलैए

डेगपर खतरा अछि

ओना बुझाइए

देखू आजुक मनुख

बदलाव देखि गिद्धो सरमाइए।

३


जगदीश प्रसाद मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक आधा दर्जन कविता.......

धोबि घाट

ISSN 2229-547X VIDEHA

किनछरि धार धोबिघाट बनल छै

बामी-दहिनी बीच पड़ल छै।

ठेहुन पानिसँ भीत्ता महारक

खाढ़ी-खाढ़ी रूप गढ़ल छै।

अपना सीमा रोकि-रोकि घाट

तिरछिया-तिरछिया धारा चलै छै।

जहिना ले-ऊँच घाट मढ़ल

तहिना ले-ऊँच ठाढ़ धोबि छै।

एक ओरीकेँ पकड़ि-पकड़ि

उनटा-उनटा पाट पटकै छै।

रेहे-रेहे सटल मैल

खाढ़-खाढ़ी पटकि झरै छै।

तीन ताल पकड़िते पकड़ि

चिन्ह-पहचिन्ह तीनू करै छै।

दू पाटन बीच पड़ि-पड़ि

रचल-बसल मैल संग छोड़ै छै।

जुग-जुगसँ जकड़ि जकड़ल

पटका-पाबि-पाबि संग छोड़ै छै।

गुड़कि-गुड़कि गहे-गहे

पानिक संग-संग सेहो बहै छै।

सहस्त्रोसँ रचि-रचि बेबस्था

कोने-सान्हिये पकड़ि लेने छै।

उनटा-पुनटा देखि-देखि धोबि

गरे-गर उनटा पटकै छै।

दंगल बीच पहलवान जहिना

लपैक बाँहि पकड़ै छै।

छाती-पीठ सटा फेकै छै

पाट धोबिया सीखै छै।

एक धैर्य टूटि-टूटि दोसर

बालिक शक्ति पबै छै।

सात ताड़ बीच जहिना वीणा

आनए पकड़ि महुराएल साँप छै।

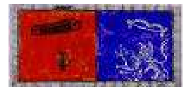
अपन मधुर स्वर-लहरीसँ

नंगटे नाच नचबै छै।

परखि देखि देखिते देखिनिहार

अपन दिशा देखै छै।

पबिते अनुकूल दिशा अपन

मधुर-मधुर फल सभ चीखै छै।

समए साक्ष्य शीशा सिरजि

ऐनाक रूप धड़ै छै।

पबिते रूप अपन ऐनामे

समए-संग दौगए लगै छै।

चल रे जीवन

चल रे जीवन चलिते चल।

संगी बनि तूँ संगे चल

जौवन चल जुआनी चल

जिनगानी संग मर्दगानी चल

चिंतन संग दिलेरी चल।

चल रे जीवन चलिते चल।

यात्रीकेँ आराम कहाँ छै

यात्रा पथ विश्राम कहाँ छै।

ओर-छोर बिनु जहिना जिनगी

तहिना ऐ दुनियाँ केर छै।

पकड़ि मन तूँ चलिते चल।

चल रे जीवन चलिते चल।

ग्रह नक्षत्र सभटा चलै छै

सूर्य तरेगन सेहो चलै छै

दोहरी बाट पकड़ि चान

अन्हार-इजोतक बीच चलै छै।

देखा-देखी चलिते चल।

चल रे जीवन चलिते चल।

बाटे-बाट छिड़ियाएल सुख छै

संगे-संग बिटियाएल दुख छै।

काँट-कुश लहलहा-लहलहा

गंगा-यमुना धार बहै छै।

परखि-परखि तूँ चलिते चल।

चल रे जीवन चलिते चल।

किछु दैतो चल किछु लैतो चल

किछु कहितो चल किछु सुनितो चल

किछु समेटतो चल किछु बटितो चल

किछु रखितो चल किछु फेकितो चल

बिचो-बीच तूँ चलिते चल।

चल रे जीवन चलिते चल।

समए संग चल

ऋृतु संग चल

गति संग चल

मति संग चल।

गति-मति संग चलिते चल।

चल रे जीवन चलिते चल।

गतिये संग लछमी चलै छै

सरस्वती मतिये चलै छै।

विश्वासक संग अशो चलै छै

तही बीच जिनगीओ चलै छै।

साहससँ संतोष साटि-साटि

धीरज धारण करिते चल।

चल रे जीवन चलिते चल।

टूटए ने कहियो सूर-ताल

हुअए ने कहियो जिन्गी बेहाल।

जहिये समटल जिनगी चलतै

बनतै ने कहियो समए काल।

बूझि देखि तूँ चलिते चल

चल रे जीवन चलिते चल।

की लऽ कऽ आएल एतए अछि?

की लऽ कऽ जाइत अछि?

सभ किछु एतए छोड़ि-छाड़ि

जस-अजस लऽ पड़ाइत अछि।

निखरि-निखिर कऽ चलिते चल।

चल रे जीवन चलिते चल।

सती-बेश्या

सरिपहुँ कहए छी, कियो नै

बसए दिअए चाहैए।

मोख पकड़ि मुँह छेकि

खूर-पूजैक आहूत करैए।

बिनु खूर-पुजौने पकड़ि-पकड़ि

दलदलमे भरमबैए।

जाधरि दल-दल टपि नै पेबै

गाछक झोंझ लसकौनेए।

लसकैयोक बिकराल वोन छै

पसरल सगतरि धरतीपर।

केना ससरि पाएब ओकरा

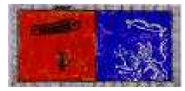
अरूप-सरूप क्षण बदलै छै।

नव-नव चालि नव रूप सजा कऽ

धूप-छाँह बनि खेलै छै।

जाधरि जड़िकेँ जानि नै पेबै

नाओं-ठेकान केना बुझबै।

ISSN 2229-547X VIDEHA

बिनु नाओं-ठेकाने, केनए-केनए

मड़िआएल आँखि चिन्ह पेबै।

बिनु देखने चीन्हि केना पेबै

चालि-चलैन आ किरदानी।

बिनु गछाड़ने, डेग नै कहियो

देत उठए अपन मन-मानी।

जुग-जुगसँ छिछिया-छिछिया

छुछका-छुछका छुछकौने अछि।

राड़ी-डबहारी रोपि-रोपि

राहीकेँ रगरगबैत अछि।

जँ लग्गाक लागि लगा

जाए चाहब ओइ पार।

बीचे रूप बदलि-बदलि

धरा खसाएल बीच धार।

जखने निकसी बान्हि लग्गा

हँसि लग्गा लग्गी बनत।

लग्गा भरि जे छल हटल

ससरि-ससरि लग आऔत।

पाबि बान्ह जेना खढ़ आ बत्ती

घर नाओं धड़बैत छै।

तहिना सहेजते सज्या

बसोबास बनबैत छै।

बीत भरि ओ बाँसक छिप्पी

उनटि टूटि सटैत छै।

पड़िते बान्ह दुनू-सँ-दुनू

नोकसी रूप धड़ैत छै।

जखने पड़ैत जौड़क लटपटी

प्रेमिकाकेँ दिअए इशारा।

अजगुत रूप प्रेमी-प्रेमिकाक

दुनूक-दुनू बनैत सहारा।

लीला अगम बनल दुनूक

अछि चाहैत करए सभ प्रेम।

मुदा, की? ई थिक अनुचित

हँसि दुनियाँसँ करी प्रेम।

लग्गिये छी जौहरी करामाती

कखनो तोड़ए गाछक डारि।

कखनो नापए कुदि-कुदि

खेते-खेत बनबैत आड़ि।

कखनो धारमे नाउ दौगा

धार पार करैत अछि।

कखनो फल-फूल तोड़ि-तोड़ि

भुखल पेट भरैत अछि।

लग्गी बनि बनिते ओजार

नचनी-नाच नचए लगैत।

अपने हाथे खुआ-खुआ

अकड़ि-सकड़ि चालि धड़बैत।

हाथ-हथियार बन्ति बनैत

कनखिया देखबए उड़ियाइत सती।

बिलगा-बिलगा, बुझा-बुझा

आन नै, अपने हेती।

पड़िते दृष्टि दहलि, ढुलकि

गमे-गमे गुड़कए लगैत।

पकड़ि डोर सिनेही सिनेह।

स-हरि सिहरि सटए लगैत।

कॅपैत करेज कुहरि कुकुआ

गुन-गुन गुनाइत गीत

तड़कि-तड़पि तन-तना

प्रेमी मन झकसए लगैत।

रेहे-रेहे सींच झकासी

सीता शीत सिहरबए लगैत।

चाक चढ़ल पानि-माटि जेना

नव-नव वर्तन गढ़ैए।

तहिना मन तनमे

सुमति सोच सृजैए।

सच्चे कहै छी, नै बसए

दिअए चाहैए हमरा।

झीक-झीक झोंट झटकि

लीड़ी-बीड़ी सेहो करैए।

नवकी कनियाँ बूझि-बूझि

बेश्या-सती बनबैए।

धर्मराजसँ यमराज बनि

छतपति नाओं धड़बैए।

केना बँचि पाएत यौ भैया

सत्-क सतीत्व हमर?

केना जीब पाएब हम

संसारक ई समर।

मोख मारि बैसल बेश्या-ए

ससरि केना सकब कहू।

देखिते देखि, बुझिते बूझि

की करब सेहो कहू।

सत् बसाएब बेश्या कहाँ

वृत्त-कुवृत्तिक खेल छी।

हाथ-मुँहक किरदानी सभ

देखि-देखि बकलेल छी।

चहल-पहल किरदानी शब्दक

नाकक नाथ बनबैत अछि।

सुकुमार-सुकोमल नाक पाबि

गाएक आत्मा नथैत अछि।

पड़िते नाक पड़ि नथिया

नर्तकीक रूप गढ़ैत अछि।

काजर-चून लगा-लगा

मारि ठहाका हँसैत अछि।

काजर घर केना बास करब

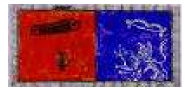
करए पड़त बुद्धिक स्नान

केने बिना से केना पएबे

तन-मन अन्तर धान।

धाने-धन कहबै छै भैया

केना ने मुँहो खोलब।

ISSN 2229-547X VIDEHA

मुदा, मुकरि-मुकरि कमड़जाल

पानि-बरफ केना बुझब।

अपनेपर हँसै छी

ठक विद्या विद्यालयसँ

नीकहा डिग्री किनलौं।

शिक्षामित्रक उजैहियामे

हमहूँ नोकरी पेलौं।

लाखे रूपैयामे,

दशो कट्ठा जमीन गमेलौं।

गुरू दक्षिना देने बिना

गुरूआइक भार उठेलौं।

दिन-राति गुरूआइ करै छी

मुँह भरल मधुरसँ।

जे निकलत सएह मधुर

सुनैत रहू असथिरसँ।

आरो बात सुनबै छी

अपनेपर हँसै छी।

मात्रा घुसका-फुसका

शब्द बनेलौं ठूठ डारि।

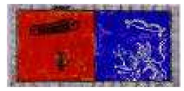
अक्षर काटि ईंटा बनेलौं

साहूल खसा देलौं डांरि।

तीरछा-तीरछा चेन्ह लगा

कोने कानी लेलौं नाओं।





ISSN 2229-547X VIDEHA

बाहरे-बाहर सोझ-साझ

उठि-बनि गेलइ सौंसे गाओं।

पुरने घरक ईंटा जोड़ि-जोड़ि

नवका घर बनबै छी।

अपनेपर हँसै छी।

पुरनाकेँ पुराण कहि-कहि

नवका चालि सिखबैत एलौं।

धर्म सनातन कहि-कहि

अर्थ-जाल फेकैत एलौं।

इचना पोठी छानि-छानि

डेली भरैत एलौं।

गुबदी मारि बिहुँसि छी

मन कनैत, हँसैत तन

कठहँसी हँसि हँसै छी।

अपनेपर हँसै छी।

धन की? केकरा कहबै

धन यौ भाय

गाए-माए छी एक्के

पूछि लियनु यशोदा माइ।

बिनु धनक धनिक जहिना

ताम-झाम देखबैए।

देखि-देखि आँखि करूआए

लाजे आँखि मुनै छी।

अपनेपर हँसै छी।

हेहरा गाछक फल खा-खा

हेहरपन्नी सिखैत छी।

दिन-राति हहरि-हहरि

निचाँ ससरैत छी।

उनटा मुँह आगू घुमा

कल्याण-कल्याण रटैत छी।

क्षणे-क्षण पले-पल

रीत-नीति घटबैत छी।

अपनेपर हँसैत छी।

गालक सितार बना-बना

राग-पुराणक श्वर चढ़ा।

वेद-पुराण गबैत छी

अपनेपर हँसैत छी।

सासु

सासु हमर बड़ अपखैतनी

बेटी बना डेबने छथि।

जहिना माइयक बेटी दुलारू

तहिना बना रखने छथि।

सोलहो आना काज अपनसिर

गार्जन मानि रखने छथि।

कोनो धैन-फिकिर नै हमरा

बेटी बूझि बुझबै छथि।

जँ कोनो गलती होइए

अल्हरी नाओं सुनै छी

मुदा लगले, तइखन

घरक लछमी पात्र कहबै छी।

पावर तँ पावर होइ छै

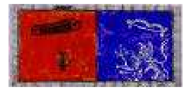
बुझए पावर कुर्सी बैसनिहार।

मनुखक पावर स्वयं मनुख छी

जानए मनुख बनि जीनिहार।

ओ दिन

ओ दिन, ओ दिन छी,

जइ दिन भयक प्रेमी देखलौं।

ओ दिन, ओ दिन छी,

जइ दिन भयसँ यारी केलौं,

दर्शन पाबि भैयारी केलौं।

माघ मास राति सतपहरा

आशाक आश भैयारी देखलौं।

ओ दिन, ओ दिन छी,

संग सटल भैयारी देखलौं।

जेकर सिर सोर बनि

पान्कि संग पताल पहुँचए।

सिसैक-सिसैक, संग आशाक

जिनगीक संग जीबैत चलए।

संग मिलि हँसए,

गबैत चलए संग-संग।

राति-दिन सहन सृरजि

कूदि-कूदि कुदैत संग।

घर भैयारी, बाहर भैयारी

संगी, मित्र-दोस्त कहबैत।

प्रेमाश्रु संग ढुलकि-ढुलकि

धरती बीच नाओं धड़बैत।

सिर उसरगए मिलि संग

वीर-शहीद कहबैए।

मातृभूमि ओ पितृभूमि बीच

सेवा कऽ जगबैए।

बजिते एक देबाल घड़ी

घरक घंटी घुनघुनाएल।

पकड़ि कान गुनगुना-गुना

रणभूमि-कर्मभुमि देखाएल।

सातो घर सजल सेज

देखते मन तड़पि उठल।

दलदल करैत दलकीमे

चिचिया-चिचिया चहकि उठल।

अछि कठिन कर्मक परीक्षा

मुदा, सफल नै हएब कठिन।

विचार सहजि सुता

ISSN 2229-547X VIDEHA

समटि-समटि कएल एकठीन।

बेंग सदृश्य कुदए लगैत

तरजू कला समेटि धड़ब।

कलाकारी छी, मोचना कठिन

आङुरसँ पकड़ि धड़ब।

जिनगी परीक्षाक ओ घड़ी

जइ दिन जिनगी नाओं पड़ए।

जागल-सुतल बीच दुनूक

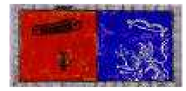
जागलनाथ काज धड़ए।

पैघ काजक पैघ फल

एक्के आँखिये दुनियाँ देखैत।

कनाह कहू आकि समूह

देखि-देखि लगैत समोह।

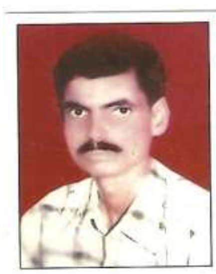
साध सृरजि साधक सदति

फूल वृक्ष सजबैए।

सृरजि शक्ति, शक्ति संग

सदति भक्ति करैए।

४.

मुन्नाजी

गजल

बिगड़लो रूपक नकल करैए आब लोक

नकलोकेँ यथार्थ संजोगि रखैए आब लोक

दायित्व बुझैए मात्र अपन स्वार्थ पूर्ति लेल

अनकासँ अपनाकँ विलगा लैए आब लोक

धुँआधार हँकैए गप्प लोक कल्पनाक भावेँ

यथार्थमे अपनाकँ सुनगा लैए आब लोक

जीवनक दशा-दिशा तय करैए मात्र स्वयं

देखाबामे स्वयंकँ हँटा लैए आब लोक

पहिनेसँ बेशी आरक्षित भऽ कऽ जीबैए सभ

मुदा बेर पड़ने देखार होइए आब लोक

स्तरसँ उठि कऽ जीबाक भऽ गेलैए परिपाटी

पाइक फेरमे भ्रष्टाचारी भेल-ए आब लोक

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१. अन्जनी कुमार वर्मा २.
रामबिलास साहू

१

अन्जनी कुमार वर्मा

ISSN 2229-547X VIDEHA

आत्मबल

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

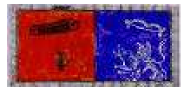
संघर्ष मय जिनगी सं फराक रहब निक अछि
अहि बिगड़ल समाज सं सुनसान जंगले निक अछि
मुदा कतैक दिन धैर ?
उचितक बात पर नहि क सकैछ धनुषाकार
आत्मबल कें राखि देखू आत्म्बलक इतिहास
धनुषाकारक बाद भ जाईछ जनजागरण
क्रांतिक विकराल रूप क लैछ धारण
जगविदित अछि क्रांति केर की की होईछ परिणाम
रौद्र रूप धारण कय जखन लैछ तीर- कमान
नहि अप्पन प्राण केर भय होइछ
नहि दोसराक प्राणक मोह
तखैन देह में आबी जैत अछि
अभिमन्यु केर खून
सोइच लिय हे पथभ्रष्ट जयद्रथ
होयत कोन उपाय
कतेक दिन धैर सहन करत
दुखिया केर समुदाय
लौह-भुजा आब फड़कि रहल अछि

प्राण -प्राण लेल तड़पि रहल अछि
क्रांतिक ज्वाला भड़कि रहल अछि
आब सोचु अप्पन उपाय
नहि मानत पीड़ित समुदाय
क्रन्तिये ठीक अंत उपाय.........

बहैत बसात

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

प्रासाद बनि जाएत अछि
निर्दोष पीड़ितक नोर सं
गजराज मरी जाएत अछि
नन्हकी चुट्टीक क्रोध सं
शीर्ष पद पर बैस करैछ
रावण सन हुंकार
मुदा एकटा बानर जारि देने छल लंका..
बजा देने छल डंका...
अरब लोकक भावना
नहि बुझब त चल जायत
सुख,सुविधा आ शांति.....

ISSN 2229-547X VIDEHA

परिभाषा

,,,,,,,,,,,,,,

आवेदन,अंतर्विक्षा आ अपव्यय सं

थाकि गेल अछि मन

बेकार बुढायत अछि

उच्च शिक्षाक प्रमाणपत्र,

आब सबके समेटि

बंद क देलियेक अछि पेटी म

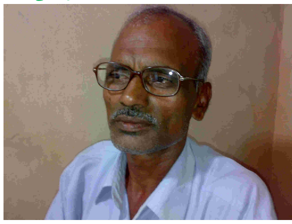
पैसा,प्रतिष्ठा आ पैरवीक लेल

शुरू क देलों अछि स्वरोजगार

कुरता पैजामा आ बंडी पहिरी

बन गेलोंहअछि..नेता.....

२

रामबिलास साहू

किछु टनका

रामविलास साहु जीक टनका

52. सावन मास

रिमझिम फुहार

प्रेम बढ़ाबै

प्रेमीकेँ ललचाबै

गोरीकेँ तरसाबै।

ISSN 2229-547X VIDEHA

53. मोनक बात

की कहब सजनी

समय नहि

की भेजब सनेस

दिल दर्दक क्लेश।

54. दिलक रोग

नहि कोनो इलाज

प्रेमक भूख

नहि मिटै धनसँ

नहि कोनो दवासँ।

55. चंचल मन

चित्त घबराइत

मन डोलैत

नयन सुखदाय

प्रेमी कहै लजाय।

56. सोना कंगना

पैर पयजनियाँ

नाचै अंगना

घुरि घुरि ताकैत

हमर सजनियाँ।

57. फूलक डारि

झुलि सनेश दैत

देशवासीकेँ

सदा प्रसन्न रहुँ

देशक सेवा करू।

58. देशक सेवा

मायक सेवा करू

जिनगी भरि

र्धमक पालन छै

गरीबक कल्याण।

59. सुइत उठि

माय-बाप गुरूकेँ

छूऊ चरण

नित्य बन्दन करू

कृपा करत देव।

60. पिढ़ लिखकऽ

बनु ज्ञानीसँ दानी

करू देशक

विकास कल्याणक

रखू उँचा तिरंगा।

61. सभ अपन

पराया नहि कोय

सूरज चाँद

सभकेँ समझैत

एक समान हित।

62. राजा दुखित

प्रजा सभ दुखित

जोगिक दुख

दुखिया सँ छै बेसी

संसार अछि दु :खी।

63. सेवा करैत

पथ पर चलैत

आगू बढ़ैत

झरना सन आगू

संघर्ष सँ बढ़ैते।

64. खूनक दाग

छिपाय नहि पावै

पापक भार

धरती नै उठाबै

सत्य करै से होय।

65. प्रात:क जल

पीबैत रहु नित्य

टटका फल

खाऊ जीबैत धरि

बनल रहु स्वस्थ।

66. रथक चक्का

उलटि चलै बाट

चाक् चलै छै

ठामे ठाम नचैत

दुनु करै दू काम।

67. बच्चा बेदरू

खेलैत संगे खेल

कखनु झगड़ा

कखनु करै मेल

पढ़ै छै पाठ एक।

68. खिलैत फूल

देखैत भौंरा नाचै

रस पिबैत

राति बितबै संगै

प्रेमक बात करै।

69. दिलक बात

की कहब सजनी

प्रेमक बाँध

सभसँ मजबूत

तोड़लौं सँ नै टुटै।

70. खूनक दाग

सभसँ अछि पक्का

मिटैत नहि

ISSN 2229-547X VIDEHA

कारी दागसँ भारी

बड़ पैघ बीमारी।

71. सच्चा इंसान

ज्ञान धर्म ईमान

उच्च विचारि

मानवक श्रृंगार

कार्य करै महान्।

72. सूर्य रौंद सँ

धरती तैप तैप

शुद्ध होयत

सोना तपै आगिसँ

धर्म सँ तपै लोक।

73. मोछक मान

राखै छै घरवाली

सेवक करै

घरक रखवाली

गाय छै हितकारी।

74. दुर्जन साधु

नौकर बेईमान

कपटी मित्र

ई तीनु छी शैतान

क्षणमे लेत प्राण।

75. खाना खजाना

जनाना पखाना कँ

पर्दामे राखू

जौं राखक बाहर

बिख बानि जाएत।

76. प्रीत नै जानै

ओछी जाति, नीन नै

टुटल खाट

प्यास नै धोबी घाट

सभ कहै छै बात।

77. बैल खींचैत

अछि काठक गाड़ी

मनुख खींचै

छै दुनियाक गाड़ी

की बनल लाचारी।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.  *डॉ॰ शशिधर कुमर २*  *नवीन कुमार "आशा"*

१.



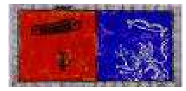
डॉ॰ शशिधर कुमर, एम॰डी॰(आयु॰) कायचिकित्सा, कॉलेज ऑफ आयुर्वेद एण्ड रिसर्च सेण्टर, निगडी प्राधिकरण, पूणा (महाराष्ट्र) ४११०४४

किए हँसबै छS मिथिला केर नाम भैय्या ?

(गीत)

होइ छS मिथिला केर कण कण निलाम भैय्या ।

कोना तौँ सभ करै छS अराम भैय्या ??

धरती ई जनकक आइ आहत पड़ल छऽ ।

तोरहि सभ केर बाट तकै छऽ ।

कोना बैसल छऽ मूनि आँखि कान भैय्या ?

कोना तोँ सभ करै छऽ अराम भैय्या ??

मिथिला केर माटि केर बोली लगै छऽ ।

खरिहानहि पैसि, दुष्ट गोली दगै छऽ ।

हृदय मैथिलीक भेलह लहु लुहान भैय्या ।

कोना तोँ सभ करै छऽ अराम भैय्या ??

मिथिलाऽक नाँव बेचि गद्दी चढ़ै छऽ ।

पाछाँ सऽ एकरहि गर्दनि कटै छऽ ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

कतऽ गेलह तोऽहर ओ शान भैय्या ?

कोना तोँ सभ करै छऽ अराम भैय्या ??

छीः छीः तोरा की लाजो ने होइ छऽ ।

कुक्कुर जेकाँ अँइठ पातो चटै छऽ ।

किए हँसबै छऽ मिथिलाक नाम भैय्या ?

कोना तोँ सभ करै छऽ अराम भैय्या ??

ककरा दृष्टि मे नीक, के कह ?

(कविता)

तन सुन्नरि हम देखि रहल छी,

मन सुन्नर - से कोना कहू ।

तन केर सुन्नरता घातक थिक,

जँ सुन्नर मन केर बिना रहू ।।

अहँ सुन्नरि छी, बड़ सुन्नरि छी,

चर्चा पसरल सौंसे जग मे ।

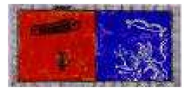
पर सुन्नरता की थिक - के कह ?

के एकरा फरिछाओत जग मे ??

नञि ठोस तरल वा गैस ई थिक,

हो मानक परिभाषा जकरा ।

ककरा दृष्टि मे नीक के कह ?

ISSN 2229-547X VIDEHA

थिक कक्कर अभिलाषा ककरा ।।

तन केर सुन्नरता चञ्चल थिक,

मन केर सुन्नरता रहए थीर ।

मन सिन्धु समान अथाह, स्वच्छ,

तन बरसाती धाराक नीर ।।

तन भ्रामक थिक, तन नश्वर थिक,

नहि प्रेमक थिक ओ परिचायक ।

नञि तऽ, श्रीकृष्णक की हस्ती ,

जे बनितथि ओ सभहक नायक ।।

सुनइत छी लैला
कारी छलि,

कोयली कारी से
जनितहि छी ।

आँखिक पुतरी
होइत'छि कारी,

गुन एकर विश्व भरि
मनितहि छी ।।

हो तन सुन्नर, हो मन सुन्नर,

तऽ एहि सँ बढ़ि कऽ की होयत ?

नहि चरम मेल दुहु केर सम्भव,

जँ होयत, तऽ बढ़ि की होयत ??

की इएह कहाबैछ सुन्नरता ??

(कविता)

तन गोर, नयन हिरणी सनि हो,

हो अंग अंग मे चञ्चलता ।

दुहु ठोर पात तिलकोरहि सनि,

पातर कटि मे हो लोचकता ।।

हो पीनि पयोधर शिरिफल सनि,

मुस्कान भरल हो मादकता ।

दाड़िम दाना सनि दाँत जकर,

हो केश मे मेघक पाण्डरता ।।

हर अलंकरण सज्जित तन पर,

हर चालि - चलन मे अल्हरता ।

की एतबहि सँ ओ सुन्नर अछि ?

की इएह कहाबैछ सुन्नरता ??

२.नवीन कुमार "आशा"

मिथिलामे बसए प्राण

संस्कारक होइ छी धनी

सदिखन सबहक हृदय बसी

प्रतिभाक होइ छी खान

सभ ठाम छोड़ी अपन निशान

चाहे रही कतबो असगर

ओतौ बना ली एकटा समाज

किछु-किछु अछि दुर्गुण

तैयो लोक कहए निपुण।

भोरे-भोर उठी नहाइ

भगवानक सुमिरण हृदय बसाइ

तखन करी एतऽ ग्रहण

फेर करी ओतौ विचरण

ठाढ़ रहै छी सदिखन सधने

नै बूझब छी अकान

जखन होइ छै गलत

तखन खोली अपन जुबान

जखन होइ अछि बड़ गुणगान

तखन बाजी ठहरू श्रीमान

बैसऽ काल मुँह राखी चुप

आबऽ दैत छी पहिचान

मिथिलाक छी हम वासी

मैथिली अछि हमर भाषा

माता-पिताक करी सम्मान।

मिथिलाक अछि पहिचान

धोती-कुर्ता पान-मखान

कतबो रही दूर देश

तखनो बसए मिथिलामे प्राण

मिथिलामे प्राण

बस आब आशा देत पहिचान

घानेरामपुरमे अछि ओकर मकान

अछि मुखसँ कनी कठोर

पर राखए सबहक ओ मान

संस्कारक होइ छी धनी

(माँ मिथिलाकेँ समर्पित)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.प्रभात राय भट्ट २. **अमरेन्द्र कुमार मिश्र**

१.

प्रभात राय भट्ट

दहेज मुक्त मिथिला बनाबू

समाजक कलंक बनल अछि तिलक दहेज //

की जाने लोग कोना करैए एकरा परहेज //२

बेट्टा बनल अछि मालजाल बाप बनल पैकारी
दहेजक आगिमे जड़ि रहल अछि बहु बेट्टी बेचारी
समाजमे दहेजक रोग लागल अछि बड भारी

जौं उपचार नहि करब तँ फैल जाएत महामारी

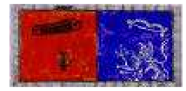
समाजक कलंक बनल अछि तिलक दहेज //

की जाने लोग कोना करैए एकरा परहेज //२

बेट्टी जन्म लैते बाप माथ पएर हाथ धरैए

बेट्टीक ब्याह कोना करब चिंतामे डुबल रहैए

शिशु हत्या करैए किये भ्रूण हत्या करैए
आगि लागल दहेजक बेट्टी जड़ि मरि मरैए

समाजक कलंक बनल अछि तिलक दहेज //
की जाने लोग कोना करैए एकरा परहेज //२

मैथिल ललना पढ़ि लिख भोगेलथि विद्वान

मुदा दहेज छै अपराध ई किनको नहि ज्ञान
मांगी दहेज किए करैतछी बेट्टी बहुक अपमान

करू आदर्श ब्याह यौ ललना बढ़त अहांक शान

समाजक कलंक बनल अछि तिलक दहेज //
की जाने लोग कोना करैए एकरा परहेज //२

उठू जगु मैथिल ललना बढ़ू आब आगू
तिलक दहेजक विरुद्ध एक अभियान चलाबू
मैथिली वैदेही जानकीक भ्रूण हत्यासं बचाबू
उठू जगु मैथिल दहेज मुक्त मिथिला बनाबू
समाजक कलंक बनल अछि तिलक दहेज//
की जाने लोग कोना करैए एकरा परहेज //२

ISSN 2229-547X VIDEHA

२

अमरेन्द्र कुमार मिश्र

पिताक नाओं- श्री विनोद मिश्र

गाम- बेरमा

भाया- तमुरिया

जिला- मधुबनी

(बिहार)

कविता-

नेता

गामक नेता देशक नेता

राज आ समाजक नेता

होइत अछि कमजोर आ होशियार

अप्पन नकली बात बना कऽ

करैत अछि जनतासँ प्यार

नेता मुर्ख हुअए वा गमार

कहैत अपने-आप बुद्धियार

चौक-चौराहा भाषण दऽ कऽ

मचा रहल अछि भ्रष्टाचार

गामक नेता……………।

ई नेताजी जुर्मक बेटा

जनता सभकेँ लोभा लेता

बान्ह-सड़कमे माल बनेताह

मजदुरियोपर ई टेक्स लगेताह

करताह हरदम अत्याचार

जनता लग रखता खाली विचार

गामक नेता………………।

जखन आएत चुनावक बेर

परचा आ भाषणक बेर

गाम-टोल घुमि-फिर ओ

जनताक आगू शिष नवेता

लोभक रस जनताकेँ पियेता

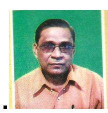
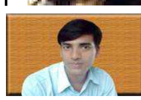
वैलेट पेपर हाथमे थम्हेता

मकराक जालमे सभकेँ फँसेता

गामक नेता देशक नेता राज आ समाजक नेता।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह नूतन अंक मिथिला कला संगीत

१. ज्योति सुनीत चौधरी २.श्वेता झा (सिंगापुर) ३.गुंजन कर्ण ४.राजनाथ मिश्र (चित्रमय मिथिला) ५. उमेश मण्डल (मिथिलाक वनस्पति/ मिथिलाक जीव-जन्तु/ मिथिलाक जिनगी)

१.



ज्योति सुनीत चौधरी

जन्म स्थान -बेल्हवार, मधुबनी। ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आ हिनकर मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शनी ईलिंग आर्ट ग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रॊडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि। कविता संग्रह 'अर्चिस्' प्रकाशित। ज्योति सम्प्रति लन्दनमे रहै छथि।



सूर्यदेव (The Sun God)

२. श्वेता झा (सिंगापुर)



३.गुंजन कर्ण राँटी मधुबनी, सम्प्रति यू.के.मे रहै छथि। www.madhubaniarts.co.uk पर हुनकर कलाकृति देखि सकै छी।



४

राजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिला स्लाइड शो

चित्रमय मिथिला (https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/)

५.

उमेश मण्डल

ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो

मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो

मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो

मिथिलाक वनस्पति/ मिथिलाक जीव जन्तु/ मिथिलाक जिनगी (https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भारती

१. मोहनदास (दीर्घकथा):*लेखक: उदय प्रकाश (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद विनीत उत्पल)*

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर)

मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

२.छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला झा द्वारा मैथिली अनुवाद

छिन्नमस्ता

बालानां कृते

**डॉ॰ शशिधर कुमर “विदेह”**

एम॰डी॰(आयु॰) कायचिकित्सा

कॉलेज ऑफ आयुर्वेद एण्ड रिसर्च सेण्टर, निगडी प्राधिकरण, पूणा (महाराष्ट्र) ४११०४४,

मातृ भू वन्दना

(बालगीत)

सिता[१] मधुरम्[३], मधुरपि[२] मधुरम्[३],

मधुरादपि मधु माएक भाषा ।

संस्कृत प्रिय, हिन्दी प्रियतर,

दुहु सँ बढ़ि कऽ मिथिलाभाषा ।।

धरती सुन्नर, भारत सुन्नर,

पर सुन्नरतम मिथिलाबासा ।

जिनगी हो समर्पित एकरहि लए,

अछि मात्र इएह टा अभिलाषा ।।

मिट जाय भलहि, नञि हिय हारी,

सम विषम, माए अहीं केर आशा ।

रहए ध्यान सतत् अहँ चरणहि मे,

हो हरेक जन्म मिथिलाबासा ।।

१ सिता = चिन्नी वा मिश्री

२ मधुर / मधूर = मिठाई

३ मधुर = मीठ

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com **पर पठाउ।**

ISSN 2229-547X VIDEHA

बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक

१.प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त्त (सूर्योदयक एक घंटा पहिने) सर्वप्रथम अपन दुनू हाथ देखबाक चाही, आ' ई श्लोक बजबाक चाही।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

करक आगाँ लक्ष्मी बसैत छथि, करक मध्यमे सरस्वती, करक मूलमे ब्रह्मा स्थित छथि। भोरमे ताहि द्वारे करक दर्शन करबाक थीक।

२.संध्या काल दीप लेसबाक काल-

दीपमूले स्थितो ब्रह्मा दीपमध्ये जनार्दनः।

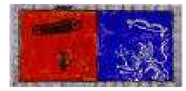
दीपाग्रे शङ्करः प्रोक्तः सन्ध्याज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

दीपक मूल भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (विष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शङ्कर स्थित छथि। हे संध्याज्योति! अहाँकेँ नमस्कार।

३.सुतबाक काल-

रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्।





शयने यः स्मरेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति॥

जे सभ दिन सुतबासँ पहिने राम, कुमारस्वामी, हनूमान्, गरुड़ आऽ भीमक स्मरण करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

४. नहेबाक समय-

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु आऽ कावेरी धार। एहि जलमे अपन सान्निध्य दिअ।

५.उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तत् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

समुद्रक उत्तरमे आऽ हिमालयक दक्षिणमे भारत अछि आऽ ओतुका सन्तति भारती कहबैत छथि।

६.अहल्या द्रौपदी सीता तारा मण्डोदरी तथा।

पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशकम्॥

जे सभ दिन अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मण्दोदरी, एहि पाँच साध्वी-स्त्रीक स्मरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

७.अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।

कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः॥

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान्, विभीषण, कृपाचार्य आऽ परशुराम- ई सात टा चिरञ्जीवी कहबैत छथि।

८.साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी

उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः।

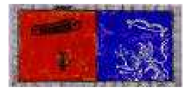
सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादान्तस्य धूर्जटेः

जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला॥

९. बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती।

अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूर्वाक्षत मंत्र(शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्नित्यस्य प्रजापतिर्ॠषिः। लिंभोक्ता देवताः।
स्वराडुत्कृतिश्छन्दः। षड्जः स्वरः॥

आ ब्रह्म॑न् ब्राह्म॒णो ब्र॑ह्मवर्च॒सी जा॑यता॒मा रा॒ष्ट्रे रा॑ज॒न्यः शुरे॑ऽइषव्यो॒ऽतिव्या॒धी म॑हार॒थो जा॑यतां॒ दोग्ध्रीं॑ धे॒नुर्वोढा॑न॒ड्वाना॒शुः सप्तिः॒ पुर॑न्धि॒र्योवा॑ जि॒ष्णू र॑थे॒ष्ठाः स॒भेयो॒ युवास्य यज॑मानस्य वी॒रो जा॒यतां निका॒मे-नि॑कामे नः प॒र्जन्यों वर्षतु॒ फल॑वत्यो न॒ऽओषधयः पच्यन्तां योगेक्ष॒मो नः॑ कल्पताम्॥२२॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।

ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव।

हे भगवान्। अपन देशमे सुयोग्य आ' सर्वज्ञ विद्यार्थी उत्पन्न होथि, आ' शुत्रुकेँ नाश कएनिहार सैनिक उत्पन्न होथि। अपन देशक गाय खूब दूध दय बाली, बरद भार वहन करएमे सक्षम होथि आ' घोड़ा त्वरित रूपेँ दौगय बला होए। स्त्रीगण नगरक नेतृत्व करबामे सक्षम होथि आ' युवक सभामे ओजपूर्ण भाषण देबयबला आ' नेतृत्व देबामे सक्षम होथि। अपन देशमे जखन आवश्यक होय वर्षा होए आ' औषधिक-बूटी सर्वदा परिपक्व होइत रहए। एवं क्रमे सभ तरहेँ हमरा सभक कल्याण होए। शत्रुक बुद्धिक नाश होए आ' मित्रक उदय होए॥

ISSN 2229-547X VIDEHA

मनुष्यकें कोन वस्तुक इच्छा करबाक चाही तकर वर्णन एहि मंत्रमे कएल गेल अछि।

एहिमे वाचकलुप्तोपमालड़्कार अछि।

अन्वय-

ब्रह्मंन् - विद्या आदि गुणसँ परिपूर्ण ब्रह्म

राष्ट्रे - देशमे

ब्रंह्मवर्चसी-ब्रह्म विद्याक तेजसँ युक्त

आ जायतां- उत्पन्न होए

रांजन्यः-राजा

शुरेँऽ बिना डर बला

इषव्यो- बाण चलेबामे निपुण

ऽतिव्याधी-शत्रुकेँ तारण दय बला

मंहारथो-पैघ रथ बला वीर

दोग्ध्रीं-कामना(दूध पूर्ण करए बाली)

धेनुर्वोढानड्वानाशुः धेनु-गौ वा वाणी वोंढानड्वा- पैघ बरद नाशुः-आशुः-त्वरित

सप्तिः-घोड़ा

पुरंन्धिर्योवा- पुरंन्धि- व्यवहारकेँ धारण करए बाली योंवा-स्त्री

जिष्णू-शत्रुकेँ जीतए बला

रंथेष्ठाः-रथ पर स्थिर

सभेयो-उत्तम सभामे

युवास्य-युवा जेहन

यजंमानस्य-राजाक राज्यमे

वीरो-शत्रुकेँ पराजित करएबला

निकामे-निंकामे-निश्चययुक्त कार्यमे

नः-हमर सभक

पर्जन्यों-मेघ

वर्षतु-वर्षा होए

फलवत्यो-उत्तम फल बला

ओषधयः-औषधिः

पच्यन्तां- पाकए

योगेक्षमो-अलभ्य लभ्य करेबाक हेतु कएल गेल योगक रक्षा

नः-हमरा सभक हेतु

कल्पताम्-समर्थ होए

ग्रिफिथक अनुवाद- हे ब्रह्मण, हमर राज्यमे ब्राह्मण नीक धार्मिक विद्या बला, राजन्य-वीर,तीरंदाज, दूध दए बाली गाय, दौगय बला जन्तु, उद्यमी नारी होथि। पार्जन्य आवश्यकता पड़ला पर वर्षा देथि, फल देय बला गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/संरक्षित करी।

8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The_Science_of_Words- GAJENDRA THAKUR translated by the author himself

8.1.3.On_the_dice-board_of_the_millennium- GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (IN ENGLISH)- SHEFALIKA VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma and Dr. Jaya Verma

VIDEHA MAITHILI SAMSKRIT TUTOR

बिपिन कुमार झा

संवादः

इहलोके मानवजीवने क्षणा आयान्ति यान्ति च। तत्र पुण्यास्ते क्षणाः यत्र भगवन्निर्देशनं श्रृण्वन् जनः किमपि महत्त्वमयङ्कार्यमारभते। अपि च समारब्धकर्मपरिसमाप्तये सपरिकरबन्धनमुद्यमञ्च करोति। केचित् सम्यक् एव उक्तवान् अस्ति-

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन..... इति। आशयः एवं यत् ते अधमजनास्सन्ति ये विघ्नभयात् कर्यारम्भस्यविषये एव न चिन्तयन्ति तत्रैव मध्यमजनाः ते सन्ति ये कार्यारम्भानन्तरं विघ्ने सति मध्ये एव तत्त्यजन्ति। ते एव उत्तमजनाः ये अनेकदा यद्यपि विघ्नाः समापतन्ति किन्तु ते पूर्णाहूतेः अनन्तरम् एव विरमन्ति। ते एव विजिताः भवन्ति इह प्रपञ्चपूर्णसंसारे। अस्तु अत्र एतदेव मे मतिः यत् सर्वदा विशेषसम्पत् स्यात्। अपि च शिवसङ्कल्पः स्यात्।

विशेषसम्पत् इति पदस्याभिप्रायः विद्यते- यस्मिन् कर्मणि भवन्तः नियुक्ताः तत्र यत् किमपि अपेक्षितं स्यात् तेषाम् उपस्थितिरिति शम्।

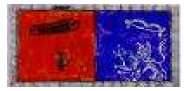
{प्रस्तोता - बिपिन कुमार झा, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थाने (पुरीनगरे) साहित्यविभागे अध्यापकः (अनु.) अस्ति।}

विदेह नूतन अंक भाषापाक रचना-लेखन

Input: (कोष्ठकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोनेटिक-रोमनमे टाइप करू। Input in Devanagari, Mithilakshara or Phonetic-Roman.) Output: (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर आ फोनेटिक-रोमन/ रोमनमे। Result in Devanagari, Mithilakshara and Phonetic-Roman/ Roman.)

- English to Maithili
- Maithili to English

इंग्लिश-मैथिली-कोष / मैथिली-इंग्लिश-कोष प्रोजेक्टकेँ आगू बढ़ाऊ, अपन सुझाव आ योगदान ई-मेल द्वारा ggajendra@videha.com पर पठाऊ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

१.भारत आ नेपालक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक शैली आ २.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपाल आ भारतक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक शैली

१.१. नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक *लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली*

(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

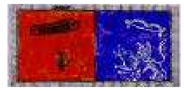
मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१.*पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार*: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)
खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)
उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

ISSN 2229-547X VIDEHA

२.*ढ आ ढ़* : ढ़क उच्चारण ''र् ह''जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ ''र् ह''क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आन ठाम खाली ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्द सभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३.*व आ ब* : मैथिलीमे ''व''क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। एहि सभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४.*य आ ज* : कतहु-कतहु ''य''क उच्चारण ''ज''जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएबला शब्द सभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, यावत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५.*ए आ य* : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।
प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।
नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।
सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे "ए"केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।
ए आ "य"क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो "ए"क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६.*हि, हु तथा एकार, ओकार* : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आनहु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७.*ष तथा ख* : मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्‌यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्‌कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८.*ध्वनि-लोप* : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़’ गेलाह, क’ लेल, उठ’ पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।

(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९.*ध्वनि स्थानान्तरण* : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटि कऽ दोसर ठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्द सभमे ई निअम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

१०.*हलन्त()क प्रयोग* : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्द सभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषा सम्बन्धी निअम अनुसार हलन्तविहीन राखल गेल अछि। मुदा व्याकरण सम्बन्धी प्रयोजनक लेल अत्यावश्यक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि। प्रस्तुत पोथीमे मथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सरल आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि कऽ वर्ण-विन्यास कएल गेल अछि। स्थान आ समयमे बचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सरल होबऽबला हिसाबसँ वर्ण-विन्यास मिलाओल गेल अछि। वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेबऽ पड़ि रहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एकरूपतापर ध्यान देल गेल अछि। तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ कुण्ठित नहि होइक, ताहू दिस लेखक-मण्डल सचेत अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक कहब छनि जे सरलताक अनुसन्धानमे एहन अवस्था किन्नहु ने आबऽ देबाक चाही जे भाषाक विशेषता छाँहमे पडि जाए।

-(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन
ठाम
जकर, तकर
तनिकर
अछि

अग्राह्य
अखन, अखनि, एखेन, अखनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकर, तेकर
तिनकर। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)
ऐछ, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाय: भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

४. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाय जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।

६. ह्र्स्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।

७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाय। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाय। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

९. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाय वा सानुनासिक स्वर। यथाः- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

१०. कारकक विभक्त्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्यः- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'क' क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

११. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथाः- देखि कय वा देखि कए।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाय।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाय, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथाः- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

१४. हलंत चिह्न निअमतः लगाओल जाय, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

१५. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा क' लिखल जाय, हटा क' नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाय, यथा घर परक।

१६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाय। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

१७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाय।

१८. समस्त पद सटा क' लिखल जाय, वा हाइफेनसँ जोड़ि क' , हटा क' नहि।

१९. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी (ऽ) नहि लगाओल जाय।

२०. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाय।

२१.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जाय। जा' ई नहि

बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाय। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाय।

ह./- गोविन्द झा ११/८/७६ श्रीकान्त ठाकुर ११/८/७६ सुरेन्द्र झा "सुमन" ११/०८/७६

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देश: (*बोल्ड कएल रूप ग्राह्य):-*

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम , मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नै सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य ***श****मे जीह तालुसँ ,* ***ष****मे मूर्धासँ आ दन्त* ***स****मे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे* ***ष*** *कें वैदिक संस्कृत जकाँ* ***ख*** *सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जकाँ (यथा संयोग आ गणेश* ***संजोग*** *आ*

गड़ेस *उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।*

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जएबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण

उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

अछि- अ इ छ **ऐछ (उच्चारण)**

छथि- छ इ थ   छैथ **(उच्चारण)**

पहुँचि- प हुँ इ च **(उच्चारण)**

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ऐ सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा ऐमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ केँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ केँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- ऐ लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजैत छी, तखनो पुरनका लोककेँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि। फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त+र ।

उच्चारणक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइव http://www.videha.co.in/ पर उपलब्ध अछि। फेर ***केँ / सँ***

/ **पर** पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा **तँ / कऽ** हटा कऽ। **ऐमे सँ** मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ जेना **छहटा** मुदा **सभ टा**। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नै। घरबलामे **बला** मुदा घरवालीमे **वाली** प्रयुक्त करू।

रहए-

रहै मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए)।

मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास **रहै** ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्ना ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत **रहए**।

छलै, छलए मे सेहो ऐ तरहक भेल। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

संयोगने- (उच्चारण **संजोगने)**

कँ/ कऽ

केर- **क** (

केर क प्रयोग गद्यमे नै करू , पद्यमे कऽ सकै छी।)

क (जेना रामक)

रामक आ संगे (उच्चारण **राम के / राम कऽ** सेहो)

सँ- सऽ **(उच्चारण)**

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नै। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उच्चारण

ISSN 2229-547X VIDEHA

होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकेँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो)।

केँ जेना रामकेँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकेँ
क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक
कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ
सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ
सऽ , तऽ , त , केर (गद्यमे) ऐ चारू शब्द सबहक प्रयोग अवांछित।
के दोसर अर्थें प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना, के कहलक? विभक्ति "क"क बदला एकर प्रयोग अवांछित।
नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ, नइं ऐ सभक उच्चारण आ लेखन - ***नै***

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नै) जतए अर्थ बदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नै- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नै)। मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नै)।
राष्ट्रिय (राष्ट्रीय नै)
सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)
पोछैले/ *पोछै लेल/* ***पोछए लेल***

पोछैए/ पोछए/ *(अर्थ परिवर्तन)* ***पोछए/ पोछै***

ओ लोकनि (हटा कऽ, ओ मे बिकारी नै)

ओइ*/ ओहि*

ओहिले*/*

ओहि लेल/ ओही लऽ

जएबेँ/ बैसबेँ

पँचभइयाँ

देखियौक*/ (देखिऔक नै- तहिना अ मे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)*

जकाँ */ जेकाँ*

तँइ/ ***तँए***

होएत / ***हएत***

नजि*/* ***नहि****/ नँइ/ नइँ/ नै*

सौँसे/ सौँसे

बड़ */*

बड़ी *(झोराओल)*

गाए (गाइ नहि), मुदा गाइक दूध (गाएक दूध नै।)

रहलेँ/ पहिरतैँ

हमहीँ/ अहीँ

सब - ***सभ***

सबहक *- सभहक*

धरि *- तक*

गप- बात

बूझब - समझब

बुझलौँ/ समझलौँ/ बुझलहुँ - समझलहुँ

हमरा आर - हम सभ

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता नै)

होइन/ होनि

जाइन (जानि नै, जेना देल जाइन) मुदा **जानि**-बूझि (अर्थ परिवर्तन)

पइठ/ जाइठ

आउ/ जाउ/ आऊ/ जाऊ

मे, कैँ, सँ, पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेसी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकेँ सटाऊ। जेना **ऐमे सँ ।**

एकटा , दूटा (मुदा **कए टा)**

बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नै। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नै (जेना **दिअ , आ**/ दिय' , आ', आ नै)

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि

आ फ्रेंचमे शब्दमे जतए एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d'etre एतए सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नै दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)।

अइमे, एहिमे/ **ऐमे**

जइमे, जाहिमे

एखन/ **अखन/** अइखन

कँ (के नहि) **मे** (अनुस्वार रहित)

भऽ

मे

दऽ

तँ (तऽ, त नै**)**

सँ (सऽ स नै**)**

गाछ तर

गाछ लग

साँझ खन

जो (जो go, करै जो do)

तै/तइ जेना- तै दुआरे/ तइमे/ तइले

जै/जइ जेना- जै कारण/ जइसँ/ जइले

ऐ/अइ जेन- ऐ कारण/ ऐसँ/ अइले/ मुदा एकर एकटा खास प्रयोग- लालति कतेक दिनसँ कहैत रहैत अइ

ISSN 2229-547X VIDEHA

लै/लइ *जेना लैसँ/ लइले/ लै दुआरे*

लहँ/ ***लौं***

गेलौं/ लेलौं/ लेलँह/ *गेलहुँ/ लेलहुँ/ लेलँ*

जइ/ *जाहि/* ***जै***

जहिठाम/ जाहिठाम/ ***जइठाम/ जैठाम***

एहि/ ***अहि/***

अइ ***(वाक्यक अंतमे ग्राह्य) / ऐ***

अइछ/ ***अछि/*** *ऐछ*

तइ/ *तहि/* ***तै/*** *ताहि*

ओहि/ ***ओइ***

सीखि/ ***सीख***

जीवि/ जीवी/ ***जीब***

भलेहीं/ ***भलहिं***

तैं/ *तँइ/* ***तएँ***

जाएब/ *जएब*

लइ/ ***लै***

छइ/ ***छै***

नहि/ ***नै/*** *नइ*

गइ/ ***गै***

छनि/ छन्हि *...*

समए *शब्दक संग जखन कोनो विभक्ति जुटै छै तखन समै जना समैपर इत्यादि। असगरमे* ***हृदए*** *आ विभक्ति जुटने हृदे जना हृदेसँ, हृदेमे इत्यादि।*

जइ*/ जाहि/*

जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ ***जइठाम****/ जैठाम*

एहि/ अहि/ अइ/ ***ऐ***

अइछ/ ***अछि****/ ऐछ*

तइ/ तहि/ ***तै****/ ताहि*

ओहि/ ***ओइ***

सीखि/ ***सीख***

जीवि/ जीवी/

जीब

भले/ भलेहीं/

भलहिं

तैं*/ तइँ/* ***तएँ***

जाएब*/ जएब*

लइ/ ***लै***

छइ/ ***छै***

नहि/ ***नै****/ नइ*

गइ/

गै

ISSN 2229-547X VIDEHA

छनि/ छन्हि

*चुकल अछि/ **गेल गछि***

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देल विकल्पमेसँ लैंगुएज एडीटर द्वारा कोन रूप चुनल जेबाक चाही:

बोल्ड कएल रूप ग्राह्य:

*१.होयबला/ होबयबला/ होमयबला/ हेब'बला, हेम'बला/ होयबाक/**होबएबला** /**होएबाक***

२. आ'/आऽ

आ

*३. क' लेने/**कऽ लेने/कए लेने**/कय लेने/ल'/**लऽ**/लय/**लए***

*४. भ' गेल/**भऽ गेल**/भय गेल/**भए***

गेल

*५. कर' गेलाह/**करऽ***

***गेलह**/**करए गेलाह**/करय गेलाह*

६.

***लिअ/दिअ** लिय',दिय',लिअ',दिय'/*

*७. कर' बला/**करऽ बला**/ करय बला **करैबला/**क'र' बला /*

करैवाली

*८. **बला** वला (पुरूष), वाली (स्त्री) ९*

.

आङ्ल आंग्ल

१०. **प्रायः** प्रायह

११. **दुःख** दुख १

२. चलि गेल **चल गेल**/चैल गेल

१३. **देलखिन्ह** देलकिन्ह, **देलखिन**

१४.

देखलन्हि देखलनि/ देखलैन्ह

१५. **छथिन्ह**/ छलन्हि **छथिन**/ छलैन/ **छलनि**

१६. **चलैत/दैत** चलति/दैति

१७. एखनो

अखनो

१८.

बढ़नि बढ़इन **बढ़न्हि**

१९. ओ'/ओऽ(सर्वनाम) **ओ**

२०

. **ओ** (संयोजक) ओ'/ओऽ

२१. **फाँगि**/फाङ्गि फाइंग/फाइङ

२२.

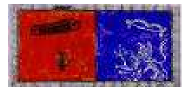
जे जे'/जेऽ २३. **ना-नुकुर** ना-नुकर

२४. **केलन्हि/केलनि**/कयलन्हि

२५. तखनतँ/ **तखन तँ**

२६. **जा**

रहल/जाय रहल/**जाए रहल**

ISSN 2229-547X VIDEHA

२७. निकलय/**निकलए**

लागल/ लगल बहराय/ **बहराए लागल/ लगल** निकल'/बहरै लागल

२८. ओतय/ जतय जत'/ ओत'/ **जतए/ ओतए**

२९.

की फूरल जे कि फूरल जे

३०. **जे** जे'/जेऽ

३१. **कूदि** / **यादि**(मोन पारब) कूइद/याइद/कूद/याद/

यादि (मोन)

३२. **इहो/ ओहो**

३३.

हँसए/ हँसय **हँसऽ**

३४. **नौ आकि दस**/नौ किंवा दस/ नौ वा दस

३५. **सासु-ससुर** सास-ससुर

३६. **छह/ सात** छ/छः/सात

३७.

की की'/ कीऽ (दीर्घीकारान्तमे ऽ वर्जित)

३८. **जबाब** जवाब

३९. **करएताह/ करेताह** करयताह

४०. दलान दिशि दलान दिश/**दलान दिस**

४१

. **गेलाह** गएलाह/गयलाह

४२. **किछु आर/** किछु और/ किछ आर

४३. ***जाइ छल/ जाइत छल*** *जाति छल/जैत छल*

४४. ***पहुँचि/ भेट जाइत छल/ भेट जाइ छलए*** *पहुँच/ भेटि जाइत छल*

४५.

जबान *(युवा)/* ***जवान***(फौजी)

४६. *लय/* ***लए*** *क'/* ***कऽ/ लए कए*** */* ***लऽ कऽ/ लऽ कए***

४७. *ल'/****लऽ*** *कय/*

कए

४८. *एखन / एखने /* ***अखन / अखने***

४९.

अहींकेँ *अहींकेँ*

५०. ***गहींर*** *गहीँर*

५१.

धार पार केनाइ *धार पार केनाय/केनाए*

५२. *जेकाँ जेँकाँ/*

जकाँ

५३. ***तहिना*** *तेहिना*

५४. ***एकर*** *अकर*

५५. ***बहिनउ*** *बहनोइ*

५६. ***बहिन*** *बहिनि*

५७. *बहिन-बहिनोइ*

बहिन-बहनउ

ISSN 2229-547X VIDEHA

५८. नहि/ ***नै***

५९. ***करबा*** / करबाय/ ***करबाए***

६०. ***तँ***/ त ऽ तय/***तए***

६१. भैयारी मे छोट-***भाए/भै/***, जेठ-***भाय/भाइ***

६२. गिनतीमे ***दू*** भाइ/भाए/***भाँइ***

६३. ई पोथी दू ***भाइक/*** भाँइ/ भाए/ लेल। यावत ***जावत***

६४. माय मै / ***माए*** मुदा ***माइक ममता***

६५. ***दैन्हि***/ ***दइन*** दनि/ दएन्हि/ दयन्हि ***दन्हि***/ दैन्हि

६६. द'/ ***दऽ***/ ***दए***

६७. ***ओ*** (संयोजक) ओऽ (सर्वनाम)

६८. ***तका*** कए तकाय ***तकाए***

६९. पैरे (on foot) ***पएरे कएक***/ कैक

७०.

ताहुमे/ ताहूमे

७१.

पुत्रीक

७२.

बजा कय/ ***कए*** / ***कऽ***

७३. बननाय/***बननाइ***

७४. ***कोला***

७५.

दिनुका दिनका

७६.

ततहिसँ

७७. *गरबओलन्हि/* ***गरबौलनि/***

ग*रबेलन्हि/* ***गरबेलनि***

७८. ***बालु*** *बालू*

७९.

चेन्ह *चिन्ह(अशुद्ध)*

८०. ***जे*** *जे'*

८१

. ***से/ के*** *से'/के'*

८२. ***एखुनका*** *अखनुका*

८३. *भुमिहार* ***भूमिहार***

८४. ***सुग्गर***

/ सुगरक/ *सूगर*

८५. ***झठहाक*** *झटहाक* ८६.

छूबि

८७. *करइयो/ओ* ***करैयो ने देलक /करियौ****-करइयौ*

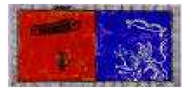
८८. ***पुबारि***

पुबाइ

८९. *झगड़ा-झाँटी*

झगड़ा-झाँटि

९०. ***पएरे-पएरे*** *पैरे-पैरे*

ISSN 2229-547X VIDEHA

९१. ***खेलएबाक***

९२. ***खेलेबाक***

९३. ***लगा***

९४. ***होए- हो*** ***होअए***

९५. ***बुझल*** *बूझल*

९६.

बूझल *(संबोधन अर्थमे)*

९७. *यैह* ***यएह*** */* ***इएह/*** *सैह****/ सएह***

९८. ***तातिल***

९९. *अयनाय- अयनाइ/* ***अएनाइ/ एनाइ***

१००. ***निन्न****- निन्द*

१०१.

बिनु *बिन*

१०२. ***जाए*** *जाइ*

१०३.

जाइ *(in different sense)-last word of sentence*

१०४. ***छत पर आबि जाइ***

१०५.

ने

१०६. ***खेलाए*** *(play)* ***खेलाइ***

१०७. ***शिकाइत****- शिकायत*

१०८.

ढप- ढ़प

१०९

. ***पढ़***- ***पढ***

११०. कनिए/ ***कनिये*** कनिञे

१११. ***राकस***- राकश

११२. ***होए***/ होय ***होइ***

११३. अउरदा-

औरदा

११४. ***बुझेलन्हि*** (different meaning- got understand)

११५. बुझएलन्हि/***बुझेलनि***/ बुझयलन्हि (understood himself)

११६. चलि- ***चल/ चलि गेल***

११७. ***खधाइ***- खधाय

११८.

मोन पाड़लखिन्ह/ मोन पाड़लखिन/ मोन पारलखिन्ह

११९. कैक- ***कएक- कइएक***

१२०.

लग ल'ग

१२१. ***जरेनाइ***

१२२. ***जरौनाइ*** जरओनाइ- जरएनाइ/

जरेनाइ

१२३. ***होइत***

१२४.

गरबेलन्हि/ ***गरबेलनि*** *गरबौलन्हि**/ गरबौलनि***

१२५.

चिखैत- *(to test)चिखइत*

१२६. ***करइयो*** *(willing to do) करैयो*

१२७. जेकरा- ***जकरा***

१२८. ***तकरा***- *तेकरा*

१२९.

बिदेसर स्थानेमे/ ***बिदेसरे स्थानमे***

१३०. करबयलहुँ/ करबएलहुँ/ करबेलहुँ ***करबेलौँ***

१३१.

हारिक *(उच्चारण हाइरक)*

१३२. ***ओजन*** *वजन* ***आफसोच***/ *अफसोस* ***कागत/ कागच/*** *कागज*

१३३. ***आधे भाग***/ ***आध-भागे***

१३४. ***पिचा*** */ पिचाय/**पिचाए***

१३५. नञ/ ***ने***

१३६. ***बच्चा*** *नञ*

(ने) पिचा जाय

१३७. ***तखन ने*** *(नञ)* ***कहैत अछि। कहै/ सुनै/ देखै छल*** *मुदा* ***कहैत-कहैत/ सुनैत-सुनैत/ देखैत-देखैत***

१३८.

कतेक गोटे/ *कताक गोटे*

१३९. ***कमाइ-धमाइ/*** *कमाई- धमाई*

१४०

. **लग** ल'ग

१४१. **खेलाइ** (for playing)

१४२.

छथिन्ह/ छथिन

१४३.

होइत होइ

१४४. क्यो **कियो** / केओ

१४५.

केश (hair)

१४६.

केस (court-case)

१४७

. **बननाइ**/ बननाय/ बननाए

१४८. **जरेनाइ**

१४९. **कुरसी** कुर्सी

१५०. **चरचा** चर्चा

१५१. **कर्म** करम

१५२. डुबाबए**/** डुबाबै**/ डुमाबै** डुमाबय/ **डुमाबए**

१५३. एखुनका/

अखुनका

१५४. **लए/ लिअए** (वाक्यक अंतिम शब्द)- **लऽ**

ISSN 2229-547X VIDEHA

१५५. कएलक/

केलक

१५६. **गरमी** गर्मी

१५७

. **वरदी** वर्दी

१५८. **सुना गेलाह** सुन'/सुनाऽ

१५९. **एनाइ-गेनाइ**

१६०.

तेना ने घेरलन्हि/ तेना ने घेरलनि

१६१. नञि / **नै**

१६२.

डरो ड'रो

१६३. **कतहु/ कतौ** कहीं

१६४. उमरिगर-**उमेरगर** उमरगर

१६५. **भरिगर**

१६६. धोल/**धोअल** धोएल

१६७. गप/**गप्प**

१६८.

के के'

१६९. **दरबज्जा**/ दरबजा

१७०. **ठाम**

१७१.

धरि तक

१७२.

घूरि लौटि

१७३. **थोरबेक**

१७४. **बड्ड**

१७५. **तौँ**/ **तूँ**

१७६. तौँहि(पद्यमे ग्राह्य)

१७७. **तौँही / तौँहि**

१७८.

करबाइए करबाइये

१७९. **एकेटा**

१८०. **करितथि** /करतथि

१८१.

पहुँचि/ पहुँच

१८२. राखलन्हि **रखलन्हि/ रखलनि**

१८३.

लगलन्हि/ लगलनि लागलन्हि

१८४.

सुनि (उच्चारण सुइन)

१८५. **अछि** (उच्चारण अइछ)

१८६. **एलथि गेलथि**

१८७. बितओने/ **बितौने/**

बितेने

१८८. *करबओलन्हि/* ***करबौलनि/***

करेलखिन्ह/ करेलखिन

१८९. *करएलन्हि/* ***करेलनि***

१९०.

आकि/ कि

१९१. ***पहुँचि/***

पहुँच

१९२. *बत्ती जराय/* ***जराए जरा*** *(आगि लगा)*

१९३.

से *से'*

१९४.

हाँ मे हाँ *(हाँमे हाँ विभक्तिमे हटा कए)*

१९५. ***फेल*** *फैल*

१९६. ***फइल****(spacious) फैल*

१९७. *होयतन्हि/ होएतन्हि/* ***होएतनि/हेतनि/ हेतन्हि***

१९८. ***हाथ मटिआएब****/ हाथ मटियाबय/हाथ मटियाएब*

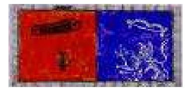
१९९. ***फेका*** *फेंका*

२००. ***देखाए देखा***

२०१. ***देखाबए***

२०२. ***सत्तरि*** *सत्तर*

२०३.

साहेब साहब

२०४.गेलैन्ह/ **गेलन्हि/ गेलनि**

२०५. **हेबाक**/ **होएबाक**

२०६.केलो/ कएलहुँ/**केलौं/** केलुँ

२०७. किछु न किछु/

किछु ने किछु

२०८.घुमेलहुँ/ घुमओलहुँ/ **घुमेलौं**

२०९. **एलाक**/ अएलाक

२१०. **अः**/ अह

२११.लय/

लए (अर्थ-परिवर्त्तन) २१२.कनीक/ **कनेक**

२१३.**सबहक/** सभक

२१४.मिलाऽ/ **मिला**

२१५.**कऽ**/ क

२१६.जाऽ/

जा

२१७.आऽ/ **आ**

२१८.**भऽ** /भ' (' फॉन्टक कमीक द्योतक)

२१९.**निअम**/ नियम

२२०

.**हेक्टेअर**/ हेक्टेयर

२२१.**पहिल अक्षर ढ/ बादक/ बीचक ढ़**

२२२.तहिं/**तहिँ**/ तञि/ **तँ**

२२३.कहिं/ **कहीँ**

२२४.**तइँ**/

तँ / तइँ

२२५.नँइ/ नइँ/ नञि/ नहि**/नै**

२२६.है/ **हए** / **एलीहें**/

२२७.छञि/ **छै**/ छैक /छइ

२२८.**दृष्टिएँ**/ दृष्टियेँ

२२९.**आ** (come)/ आऽ(conjunction)

२३०.

आ (conjunction)/ आऽ(come)

२३१.**कुनो**/ **कोनो,** कोना/**केना**

२३२.गेलैन्ह-**गेलन्हि-गेलनि**

२३३.**हेबाक**- होएबाक

२३४.केलौँ- कएलौँ-कएलहुँ/**केलौं**

२३५.किछु न किछ- **किछु ने किछु**

२३६.केहेन- **केहन**

२३७.आऽ (come)-**आ** (conjunction-and)/**आ।** आब'-आब'

/आबह-आबह

२३८. **हएत**-हैत

२३९.घुमेलहुँ-घुमएलहुँ- **घुमेलौं**

२४०.**एलाक**- अएलाक

२४१.होन्हि **होइन/ होन्हि/**

२४२.**ओ**-राम ओ श्यामक बीच(conjunction), ओऽ कहलक (he said)/**ओ**

२४३.**की हए/ कोसी अएली हए**/ की है। की हइ

२४४.**दृष्टिएँ** दृष्टियेँ

२४५

.**शामिल**/ सामेल

२४६.तँ / **तँए**/ तञि/ तहिँ

२४७.**जौँ**

/ ज्योँ/ जँ/

२४८.**सभ**/ सब

२४९.सभक/ **सबहक**

२५०.कहिँ/ **कहीँ**

२५१.**कुनो/ कोनो/** कोनहुँ/

२५२.**फारकती भऽ गेल/ भए गेल**/ भय गेल

२५३.**कोना/ केना/** कन्न/**कना**

२५४.**अः**/ अह

२५५.**जनै**/ जनञ

२५६.**गेलनि/**

गेलाह (अर्थ परिवर्तन)

२५७.केलन्हि/ कएलन्हि/ **केलनि/**

२५८.लय/ **लए/ लएह (**अर्थ परिवर्तन)

ISSN 2229-547X VIDEHA

२५९.**कनीक**/ **कनेक/कनी-मनी**

२६०.**पठेलन्हि पठेलनि/** पठेलइन/ पपठओलन्हि/ **पठबौलनि/**

२६१.**निअम/** नियम

२६२.**हेक्टेअर**/ हेक्टेयर

२६३.पहिल अक्षर रहने ढ/ बीचमे रहने ढ़

२६४.आकारान्तमे बिकारीक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रोफीक प्रयोग फान्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक ओकर बदला अवग्रह (बिकारी) क प्रयोग उचित

२६५.**करे (पद्यमे ग्राह्य) / -क**/ कऽ/ के

२६६.छैन्हि- **छन्हि**

२६७.**लगैए/** लगैये

२६८.होएत/ **हएत**

२६९.**जाएत**/ जएत/

२७०.**आएत/** अएत/ **आओत**

२७१

.**खाएत**/ खएत/ खैत

२७२.पिअएबाक/ **पिएबाक/पियेबाक**

२७३.**शुरु**/ **शुरुह**

२७४.**शुरुहे**/ **शुरुए**

२७५.अएताह/अओताह/ **एताह/ औताह**

२७६.जाहि/ जाइ/ **जइ**/ **जै/**

२७७.**जाइत**/ जैतए/ **जइतए**

२७८.**आएल**/ अएल

२७९.कैक/ **कएक**

२८०.आयल/ अएल/ **आएल**

२८१. **जाए**/ जअए/ जए (लालति जाए लगलीह।)

२८२. नुकएल/ **नुकाएल**

२८३. **कठुआएल**/ कठुअएल

२८४. ताहि/ **तै/ तइ**

२८५. गायब/ **गाएब**/ गएब

२८६. **सकै**/ **सकए**/ सकय

२८७.**सेरा/सरा**/ **सराए** (भात सरा गेल)

२८८.**कहैत रही/देखैत रही/ कहैत छलौं/ कहै छलौं- अहिना चलैत/ पढ़ैत**

(पढ़ै-पढ़ैत अर्थ कखनो काल परिवर्तित) - आर बुझै/ बुझैत (बुझै/ बुझै छी, मुदा बुझैत-बुझैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। छैक/ छै। बचलै/ बचलैक। रखबा/ रखबाक । बिनु/ बिन। रातिक/ रातुक बुझै आ बुझैत केर अपन-अपन जगहपर प्रयोग समीचीन अछि। बुझैत-बुझैत आब बुझलिऐ। हमहूँ बुझै छी।

२८९. **दुआरे**/ **द्वारे**

२९०.भेटि/ भेट/ **भेँट**

२९१.

खन/ खीन/ खुना (भोर खन/ भोर खीन)

२९२.तक/ **धरि**

२९३.**गऽ**/ **गै** (meaning different-जनबै गऽ)

२९४.सऽ/ **सँ** (मुदा दऽ, लऽ)

२९५.त्त्व,(तीन अक्षरक मेल बदला पुनरुक्तिक एक आ एकटा दोसरक उपयोग) आदिक बदला त्व आदि। महत्त्व/ **महत्व**/ **कर्ता**/ कर्त्ता आदिमे त्त संयुक्तक कोनो आवश्यकता मैथिलीमे नै अछि। **वक्तव्य**

२९६.**बेसी**/ बेशी

२९७.बाला/वाला **बला**/ वला (रहैबला)

२९८

.**वाली**/ (बदलैवाली)

२९९.वार्त्ता/ **वार्ता**

३००. **अन्तर्राष्ट्रिय**/ अन्तर्राष्ट्रीय

३०१. **लेमए**/ **लेबए**

३०२.**लमछुरका**, **नमछुरका**

३०२.**लागै**/ **लगै** (

भेटैत/ **भेटै**)

३०३.**लागल**/ **लगल**

३०४.हबा/ **हवा**

३०५.**राखलक**/ **रखलक**

३०६.**आ** (come)/ **आ** (and)

३०७. **पश्चाताप**/ पश्चात्ताप

३०८. ऽ केर व्यवहार शब्दक अन्तमे मात्र, यथासंभव बीचमे नै।

३०९.**कहैत/ कहै**

३१०.

रहए (छल)/ रहै (छलै) *(meaning different)*

३११.**तागति/ ताकति**

३१२.**खराप/** खराब

३१३.**बोइन/** बोनि/ बोइनि

३१४.जाठि/ **जाइठ**

३१५.कागज/ **कागच/ कागत**

३१६.**गिरै** *(meaning different- swallow)/* **गिरए** (खसए)

३१७.**राष्ट्रिय/** राष्ट्रीय

Festivals of Mithila

DATE-LIST (year- 2011-12)

(१४१९ साल)

Marriage Days:

Nov.2011- 20,21,23,25,27,30

Dec.2011- 1,5,9

January 2012- 18,19,20,23,25,27,29

Feb.2012- 2,3,8,9,10,16,17,19,23,24,29

March 2012- 1,8,9,12

April 2012- 15,16,18,25,26

June 2012- 8,13,24,25,28,29

Upanayana Days:

February 2012- 2,3,24,26

March 2012- 4

April 2012- 1,2,26

June 2012- 22

Dviragaman Din:

November 2011- 27,30

December 2011- 1,2,5,7,9,12

February 2012- 22,23,24,26,27,29

March 2012- 1,2,4,5,9,11,12

April 2012- 23,25,26,29

May 2012- 2,3,4,6,7

Mundan Din:

December 2011- 1,5

January 201225,26,30

March 2012- 12

April 2012- 26

May 2012- 23,25,31

June 2012- 8,21,22,29

FESTIVALS OF MITHILA

Mauna Panchami-20 July

Madhushravani- 2 August

Nag Panchami- 4 August

Raksha Bandhan- 13 Aug

Krishnastami- 21 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat- 29 August

Hartalika Teej- 31 August

ChauthChandra-1 September

Karma Dharma Ekadashi-8 September

Indra Pooja Aarambh- 9 September

Anant Caturdashi- 11 Sep

Agastyarghadaan- 12 Sep

Pitri Paksha begins- 13 Sep

Mahalaya Aarambh- 13 September

Vishwakarma Pooja- 17 September

Jimootavahan Vrata/ Jitia-20 September

Matri Navami- 21September

Kalashsthapan- 28 September

Belnauti- 2 October

Patrika Pravesh- 3 October

Mahastami- 4 October

Maha Navami - 5 October

Vijaya Dashami- 6 October

Kojagara- 11 Oct

Dhanteras- 24 October

Diyabati, shyama pooja-26 October

Annakoota/ Govardhana Pooja-27 October

Bhratridwitiya/ Chitragupta Pooja-28 October

Chhathi-khama -31 October

Chhathi- sayankalik arghya - 1 November

Devotthan Ekadashi- 17 November

Sama poojarambh- 2 November

Kartik Poornima/ Sama Bisarjan- 10 Nov

ravivratarambh- 27 November

Navanna parvan- 29 November

Vivaha Panchmi- 29 November

Makara/ Teela Sankranti-15 Jan

Naraknivaran chaturdashi- 21 January

Basant Panchami/ Saraswati Pooja- 28 January

Achla Saptmi- 30 January

Mahashivaratri-20 February

Holikadahan-Fagua-7 March

Holi-9 Mar

Varuni Yoga-20 March

Chaiti navaratrarambh- 23 March

Chaiti Chhathi vrata-29 March

Ram Navami- 1 April

Mesha Sankranti-Satuani-13 April

Jurishital-14 April

Akshaya Tritiya-24 April

Ravi Brat Ant- 29 April

Janaki Navami- 30 April

Vat Savitri-barasait- 20 May

Ganga Dashhara-30 May

Somavati Amavasya Vrata- 18 June

Jagannath Rath Yatra- 21 June

Hari Sayan Ekadashi- 30 June

Aashadhi Guru Poornima-3 Jul

VIDEHA ARCHIVE

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ आगाँक अंक

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३.मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

४.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

५.मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

"विदेह"क एहि सभ सहयोगी लिंकपर सेहो एक बेर जाऊ।

६.विदेह मैथिली क्विज : http://videhaquiz.blogspot.com/

७.विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/

८.विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

http://madhubani-art.blogspot.com/

९.विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/

१०.विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/

११.विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

१२. विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

१३. विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

१४.*VIDEHA* IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

१५. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

१६. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

१७. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

१८. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

१९. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/

२०.श्रुति प्रकाशन

http://www.shruti-publication.com/

२१.http://groups.google.com/group/videha

ISSN 2229-547X VIDEHA

Google समूह

VIDEHA केर सदस्यता लिअ

ईमेल : ?????????

एहि समूहपर जाऊ

२२.http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/

Subscribe to VIDEHA

enter email address

YAHOO! Groups Join Now!

Powered by us.groups.yahoo.com

२३.गजेन्द्र ठाकुर इडेक्स

http://gajendrathakur123.blogspot.com

२४. नेना भुटका

http://mangan-khabas.blogspot.com/

२५.विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

२६.Videha Radio

२७._ Join official Videha facebook group.

२८. विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

http://maithili-drama.blogspot.com/

२९.समदिया

http://esamaad.blogspot.com/

३०. मैथिली फिल्म्स

http://maithilifilms.blogspot.com/

३१.अनचिन्हार आखर

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/

महत्त्वपूर्ण सूचना:(१) 'विदेह' द्वारा धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित कएल गेल गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प-गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-किशोर साहित्य विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-१ सँ ७ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 विवरण एहि पृष्ठपर नीचाँमे आ प्रकाशकक साइट http://www.shruti-publication.com/ पर ।

महत्त्वपूर्ण सूचना (२):सूचना: विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server

Maithili-English and English-Maithili Dictionary. **विदेहक भाषापाक- रचनालेखन स्तंभमे।**

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बालमंडली-किशोरजगत विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-१ सँ ७

Ist edition 2009 of Gajendra Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding:

Language:Maithili

६९२ पृष्ठ : मूल्य भा. रु. 100/-(for individual buyers inside india)

(add courier charges Rs.50/-per copy for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers $40 US (including postage)

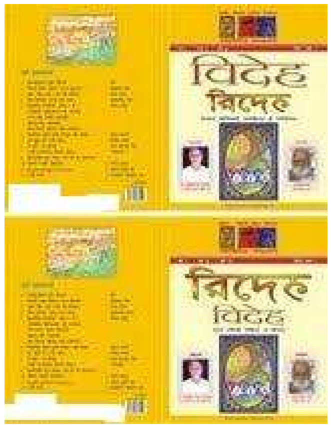
The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

https://sites.google.com/a/videha.com/videha/

http://videha123.wordpress.com/

Details for purchase available at print-version publishers's site
website: http://www.shruti-publication.com/
or you may write to
e-mail:shruti.publication@shruti-publication.com

विदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिरहुता : देवनागरी "विदेह" क, प्रिंट संस्करण :विदेह-ई-पत्रिका (http://www.videha.co.in/) क चुनल रचना सम्मिलित।



विदेह:सदेह:१: २: ३: ४

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

Details for purchase available at print-version publishers's site http://www.shruti-publication.com **or you may write to** shruti.publication@shruti-publication.com

२. संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा,उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मादेँ ।]

१.श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२.श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।

३.श्री विद्यानाथ झा "विदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लोबल युगमे अपन महिमामय "विदेह"केँ अपना देहमे प्रकट देखि जतबा प्रसन्नता आ संतोष भेल, तकरा कोनो उपलब्ध "मीटर"सँ नहि नापल जा सकैछ? ..एकर ऐतिहासिक मूल्यांकन आ

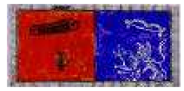
सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट हैत।

४. प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए रहल छी तकर चरचा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे होएत। आनन्द भए रहल अछि, ई जानि कए जे एतेक गोट मैथिल "विदेह" ई जर्नलकेँ पढ़ि रहल छथि।...विदेहक चालीसम अंक पुरबाक लेल अभिनन्दन।

५. डॉ. गंगेश गुंजन- एहि विदेह-कर्ममे लागि रहल अहाँक सम्वेदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत रंग, इतिहास मे एक टा विशिष्ट फराक अध्याय आरंभ करत, हमरा विश्वास अछि। अशेष शुभकामना आ बधाइक सङ्ग, सस्नेह...अहाँक पोथी *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रथम दृष्टया बहुत भव्य तथा उपयोगी बुझाइछ। मैथिलीमे तँ अपना स्वरूपक प्रायः ई पहिले एहन भव्य अवतारक पोथी थिक। हर्षपूर्ण हमर हार्दिक बधाई स्वीकार करी।

६. श्री रामाश्रय झा "रामरंग"(आब स्वर्गीय)- "अपना" मिथिलासँ संबंधित...विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ।...शेष सभ कुशल अछि।

७. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- इंटरनेट पर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" केर लेल बधाई आ शुभकामना स्वीकार करू।

ISSN 2229-547X VIDEHA

८. श्री प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कनेक चकित मुदा बेसी आह्लादित भेलहुँ। कालचक्रकेँ पकड़ि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि लेल हमर मंगलकामना।

९.डॉ. शिवप्रसाद यादव- ई जानि अपार हर्ष भए रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल अछि। पत्रकारितामे एहि प्रकारक नव प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक शुभकामना।

१०. श्री आद्याचरण झा- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे के कतेक सहयोग करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे हमर श्रद्धापूर्ण आहुति प्राप्त होयत- यावत ठीक-ठाक छी/ रहब।

११. श्री विजय ठाकुर- मिशिगन विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि। पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ई-पत्रिका "विदेह" क बारेमे जानि प्रसन्नता भेल। ’विदेह’ निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारय से कामना अछि।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ई-पत्रिका "विदेह" केर सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग रहत।

१४. डॉ. श्री भीमनाथ झा- "विदेह" इन्टरनेट पर अछि तेँ "विदेह" नाम उचित आर कतेक रूपेँ एकर विवरण भए सकैत अछि। आइ-काल्हि मोनमे उद्वेग रहैत अछि, मुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब।*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि अति प्रसन्नता भेल। मैथिलीक लेल ई घटना छी।

१५. श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"- जनकपुरधाम- "विदेह" ऑनलाइन देखि रहल छी। मैथिलीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ तकरा लेल हार्दिक बधाई। मिथिला रत्न सभक संकलन अपूर्व। नेपालोक सहयोग भेटत, से विश्वास करी।

१६. श्री राजनन्दन लालदास- "विदेह" ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी, नातिक अहिठाम देखलहुँ। एकर वार्षिक अंक जखन प्रिंट निकालब तँ हमरा पठायब। कलकत्तामे बहुत गोटेकेँ हम साइटक पता लिखाए देने छियन्हि। मोन तँ होइत अछि जे दिल्ली आबि कए आशीर्वाद दैतहुँ, मुदा उमर आब बेशी भए

गेल। शुभकामना देश-विदेशक मैथिलकेँ जोड़बाक लेल।.. उत्कृष्ट प्रकाशन *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* लेल बधाइ। अद्भुत काज कएल अछि, नीक प्रस्तुति अछि सात खण्डमे। मुदा अहाँक सेवा आ से निःस्वार्थ तखन बूझल जाइत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभपर दाम लिखल नहि रहितैक। ओहिना सभकेँ विलहि देल जइतैक। (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, अहाँक सूचनार्थ विदेह द्वारा ई-प्रकाशित कएल सभटा सामग्री आर्काइवमे https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ पर बिना मूल्यक डाउनलोड लेल उपलब्ध छै आ भविष्यमे सेहो रहतैक। एहि आर्काइवकेँ जे कियो प्रकाशक अनुमति लऽ कऽ प्रिंट रूपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम रखने छथि ताहिपर हमर कोनो नियंत्रण नहि अछि।- गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक संग।

१७. डॉ. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल पत्रिका "विदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषानुरागक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुरागसँ प्रेरित छी, एकर निमित्त जे हमर सेवाक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी। इंटरनेटपर आद्योपांत पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भऽ गेल।

१८.श्रीमती शेफालिका वर्मा- विदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भरि गेल। विज्ञान कतेक प्रगति कऽ रहल अछि...अहाँ सभ अनन्त

आकाशकेँ भेदि दियौ, समस्त विस्तारक रहस्यकेँ तार-तार कऽ दियौक...। अपनेक अद्भुत पुस्तक कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक विषयवस्तुक दृष्टिसँ गागरमे सागर अछि। बधाई।

१९.श्री हेतुकर झा, पटना-जाहि समर्पण भावसँ अपने मिथिला-मैथिलीक सेवामे तत्पर छी से स्तुत्य अछि। देशक राजधानीसँ भय रहल मैथिलीक शंखनाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अवश्य करत।

२०. श्री योगानन्द झा, कबिलपुर, लहेरियासराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीकेँ निकटसँ देखबाक अवसर भेटल अछि आ मैथिली जगतक एकटा उद्भट ओ समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्ताक्षरक कलमबन्द परिचयसँ आह्लादित छी। "विदेह"क देवनागरी सँस्करण पटनामे रु. 80/- मे उपलब्ध भऽ सकल जे विभिन्न लेखक लोकनिक छायाचित्र, परिचय पत्रक ओ रचनावलीक सम्यक प्रकाशनसँ ऐतिहासिक कहल जा सकैछ।

२१. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोलकाता- जय मैथिली, विदेहमे बहुत रास कविता, कथा, रिपोर्ट आदिक सचित्र संग्रह देखि आ आर अधिक प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- बधाई स्वीकार कएल जाओ।

२२.श्री जीवकान्त- विदेहक मुद्रित अंक पढ़ल- अद्भुत मेहनति। चाबस-चाबस। किछु समालोचना मरखाह..मुदा सत्य।

२३. श्री भालचन्द्र झा- अपनेक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि बुझाएल जेना हम अपने छपलहुँ अछि। एकर विशालकाय आकृति अपनेक सर्वसमावेशताक परिचायक अछि। अपनेक रचना सामर्थ्यमे उत्तरोत्तर वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग हार्दिक बधाई।

२४.श्रीमती डॉ नीता झा- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। ज्योतिरीश्वर शब्दावली, कृषि मत्स्य शब्दावली आ सीत बसन्त आ सभ कथा, कविता, उपन्यास, बाल-किशोर साहित्य सभ उत्तम छल। मैथिलीक उत्तरोत्तर विकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर होइत अछि।

२५.श्री मायानन्द मिश्र- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मे हमर उपन्यास *स्त्रीधनक* जे विरोध कएल गेल अछि तकर हम विरोध करैत छी।... *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीक लेल शुभकामना।(श्रीमान् समालोचनाकेँ विरोधक रूपमे नहि लेल जाए।-गजेन्द्र ठाकुर)

२६.श्री महेन्द्र हजारी- सम्पादक *श्रीमिथिला- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन हर्षित भऽ गेल..एखन पूरा पढ़यमे बहुत समय लागत, मुदा जतेक पढ़लहुँ से आह्लादित कएलक।

२७.श्री केदारनाथ चौधरी- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* अद्भुत लागल, मैथिली साहित्य लेल ई पोथी एकटा प्रतिमान बनत।

२८.श्री सत्यानन्द पाठक- विदेहक हम नियमित पाठक छी। ओकर स्वरूपक प्रशंसक छलहुँ। एम्हर अहाँक लिखल - *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखलहुँ। मोन आह्लादित भऽ उठल। कोनो रचना तरा-उपरी।

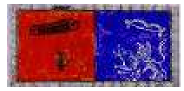
२९.श्रीमती रमा झा-सम्पादक मिथिला दर्पण। *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रिंट फॉर्म पढ़ि आ एकर गुणवत्ता देखि मोन प्रसन्न भऽ गेल, अद्भुत शब्द एकरा लेल प्रयुक्त कऽ रहल छी। विदेहक उत्तरोत्तर प्रगतिक शुभकामना।

३०.श्री नरेन्द्र झा, पटना- विदेह नियमित देखैत रहैत छी। मैथिली लेल अद्भुत काज कऽ रहल छी।

३१.श्री रामलोचन ठाकुर- कोलकाता- मिथिलाक्षर विदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भरि उठल, अंकक विशाल परिदृश्य आस्वस्तकारी अछि।

३२.श्री तारानन्द वियोगी- विदेह आ *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि चकबिदोर लागि गेल। आश्चर्य। शुभकामना आ बधाई।

३३.श्रीमती प्रेमलता मिश्र ''प्रेम''- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। सभ रचना उच्चकोटिक लागल। बधाई।

ISSN 2229-547X VIDEHA

३४.श्री कीर्तिनारायण मिश्र- बेगूसराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* बड्ड नीक लागल, आगांक सभ काज लेल बधाई।

३५.श्री महाप्रकाश-सहरसा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* नीक लागल, विशालकाय संगहि उत्तमकोटिक।

३६.श्री अग्निपुष्प- मिथिलाक्षर आ देवाक्षर विदेह पढ़ल..ई प्रथम तँ अछि एकरा प्रशंसामे मुदा हम एकरा दुस्साहसिक कहब। मिथिला चित्रकलाक स्तम्भकेँ मुदा अगिला अंकमे आर विस्तृत बनाऊ।

३७.श्री मंजर सुलेमान-दरभंगा- विदेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत। सभ चीज उत्तम।

३८.श्रीमती प्रोफेसर वीणा ठाकुर- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* उत्तम, पठनीय, विचारनीय। जे क्यो देखैत छथि पोथी प्राप्त करबाक उपाय पुछैत छथि। शुभकामना।

३९.श्री छत्रानन्द सिंह झा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ, बड्ड नीक सभ तरहेँ।

४०.श्री ताराकान्त झा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- विदेह तँ कन्टेन्ट प्रोवाइडरक काज कऽ रहल अछि। कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक अद्भुत लागल।

४१.डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक बहुत नीक, बहुत मेहनतिक परिणाम। बधाई।

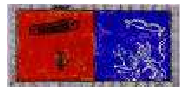
४२.श्री अमरनाथ- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक आ विदेह दुनू स्मरणीय घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य।

४३.श्री पंचानन मिश्र- विदेहक वैविध्य आ निरन्तरता प्रभावित करैत अछि, शुभकामना।

४४.श्री केदार कानन- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ बधाइ स्वीकार करी। आ नचिकेताक भूमिका पढ़लहुँ। शुरूमे तँ लागल जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित भेल अछि मुदा पोथी उनटौला पर ज्ञात भेल जे एहिमे तँ सभ विधा समाहित अछि।

४५.श्री धनाकर ठाकुर- अहाँ नीक काज कऽ रहल छी। फोटो गैलरीमे चित्र एहि शताब्दीक जन्मतिथिक अनुसार रहैत तऽ नीक।

४६.श्री आशीष झा- अहाँक पुस्तकक संबंधमे एतबा लिखबा सँ अपना कए नहि रोकि सकलहुँ जे ई किताब मात्र किताब नहि थीक, ई एकटा उम्मीद छी जे मैथिली अहाँ सन पुत्रक सेवा सँ निरंतर समृद्ध होइत चिरजीवन कए प्राप्त करत।

४७.श्री शम्भु कुमार सिंह- विदेहक तत्परता आ क्रियाशीलता देखि आह्लादित भऽ रहल छी। निश्चितरूपेण कहल जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे विदेहक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत। ओहि कुरुक्षेत्रक घटना सभ तँ अठारहे दिनमे खतम भऽ गेल रहए मुदा अहाँक *कुरुक्षेत्रम्* तँ अशेष अछि।

४८.डॉ. अजीत मिश्र- अपनेक प्रयासक कतबो प्रशंसा कएल जाए कमे होएतैक। मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएल गेल काज युग-युगान्तर धरि पूजनीय रहत।

४९.श्री बीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* आ *विदेह:सदेह* पढ़ि अति प्रसन्नता भेल। अहाँक स्वास्थ्य ठीक रहए आ उत्साह बनल रहए से कामना।

५०.श्री कुमार राधारमण- अहाँक दिशा-निर्देशमे *विदेह* पहिल मैथिली ई-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल। हमर शुभकामना।

५१.श्री फूलचन्द्र झा *प्रवीण*-विदेह:सदेह पढ़ने रही मुदा *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि बढ़ाई देबा लेल बाध्य भऽ गेलहुँ। आब विश्वास भऽ गेल जे मैथिली नहि मरत। अशेष शुभकामना।

५२.श्री विभूति आनन्द- विदेह:सदेह देखि, ओकर विस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल।

५३.श्री मानेश्वर मनुज-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* एकर भव्यता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक विशाल ग्रन्थ मैथिलीमे आइ धरि नहि देखने रही। एहिना भविष्यमे काज करैत रही, शुभकामना।

५४.श्री विद्यानन्द झा- आइ.आइ.एम.कोलकाता- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक विस्तार, छपाईक संग गुणवत्ता देखि अति प्रसन्नता भेल। अहाँक अनेक धन्यवाद; कतेक बरखसँ हम नेयारैत छलहुँ जे सभ पैघ शहरमे मैथिली लाइब्रेरीक स्थापना होअए, अहाँ ओकरा वेबपर कऽ रहल छी, अनेक धन्यवाद।

५५.श्री अरविन्द ठाकुर-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मैथिली साहित्यमे कएल गेल एहि तरहक पहिल प्रयोग अछि, शुभकामना।

५६.श्री कुमार पवन-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़ि रहल छी। किछु लघुकथा पढ़ल अछि, बहुत मार्मिक छल।

५७. श्री प्रदीप बिहारी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखल, बधाई।

५८.डॉ मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन विलक्षण नियमित सेवासँ हमरा लोकनिक हृदयमे विदेह सदेह भऽ गेल अछि।

५९.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सराहनीय। दुख होइत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पबैत छी।

६०.श्री देवशंकर नवीन- विदेहक निरन्तरता आ विशाल स्वरूप- विशाल पाठक वर्ग, एकरा ऐतिहासिक बनबैत अछि।

६१.श्री मोहन भारद्वाज- अहाँक समस्त कार्य देखल, बहुत नीक। एखन किछु परेशानीमे छी, मुदा शीघ्र सहयोग देब।

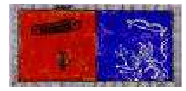
६२.श्री फजलुर रहमान हाशमी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मे एतेक मेहनतक लेल अहाँ साधुवादक अधिकारी छी।

६३.श्री लक्ष्मण झा "सागर"- मैथिलीमे चमत्कारिक रूपेँ अहाँक प्रवेश आह्लादकारी अछि।..अहाँकेँ एखन आर..दूर..बहुत दूरधरि जेबाक अछि। स्वस्थ आ प्रसन्न रही।

६४.श्री जगदीश प्रसाद मंडल-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़लहुँ । कथा सभ आ उपन्यास *सहस्रबाढ़नि* पूर्णरूपेँ पढ़ि गेल छी। गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्रबाढ़निमे अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता अनलक अछि। समालोचना शास्त्रमे अहाँक दृष्टि वैयक्तिक नहि वरन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से प्रशंसनीय।

६५.श्री अशोक झा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद- *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* लेल बधाई आ आगाँ लेल शुभकामना।





मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

६६.श्री ठाकुर प्रसाद मुर्मु- अद्भुत प्रयास। धन्यवादक संग प्रार्थना जे अपन माटि-पानिकेँ ध्यानमे राखि अंकक समायोजन कएल जाए। नव अंक धरि प्रयास सराहनीय। विदेहकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचार (आलेख) लगा रहल छथि। सभटा ग्रहणीय- पठनीय।

६७.बुद्धिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित 'विदेह'आ 'कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक' विलक्षण पत्रिका आ विलक्षण पोथी! की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे? एहि प्रयत्न सँ मैथिली क विकास होयत,निस्संदेह।

६८.श्री बृखेश चन्द्र लाल- गजेन्द्रजी, अपनेक पुस्तक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन गदगद भय गेल , हृदयसँ अनुगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

६९.श्री परमेश्वर कापड़ि - श्री गजेन्द्र जी । *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि गदगद आ नेहाल भेलहुँ।

७०.श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर- विदेह पढ़ैत रहैत छी। धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपर आलेख पढ़लहुँ। मैथिली गजल कत्तऽ सँ कत्तऽ चलि गेलैक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन जानल-पहिचानल लोकक चर्च कएने छथि। जेना मैथिलीमे मठक परम्परा रहल अछि। (स्पष्टीकरण- श्रीमान् प्रेमर्षि जी ओहि आलेखमे ई स्पष्ट

लिखने छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल छन्हि तँ से मात्र आलेखक लेखकक जानकारी नहि रहबाक द्वारे, एहिमे आन कोनो कारण नहि देखल जाय। अहाँसँ एहि विषयपर विस्तृत आलेख सादर आमंत्रित अछि।-सम्पादक)

७१.श्री मंत्रेश्वर झा- विदेह पढ़ल आ संगहि अहाँक मैगनम ओपस *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सेहो, अति उत्तम। मैथिलीक लेल कएल जा रहल अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि।

७२. श्री हरेकृष्ण झा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मैथिलीमे अपन तरहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ रचना कौशल देखबामे आएल जे लेखकक फील्डवर्कसँ जुड़ल रहबाक कारणसँ अछि।

७३.श्री सुकान्त सोम- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मे समाजक इतिहास आ वर्तमानसँ अहाँक जुड़ाव बड्ड नीक लागल, अहाँ एहि क्षेत्रमे आर आगाँ काज करब से आशा अछि।

७४.प्रोफेसर मदन मिश्र- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सन किताब मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक विशाल संग्रहपर शोध कएल जा सकैत अछि। भविष्यक लेल शुभकामना।

७५.प्रोफेसर कमला चौधरी- मैथिलीमे *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सन पोथी आबए जे गुण आ रूप दुनूमे निस्सन होअए, से बहुत दिनसँ आकांक्षा छल, ओ आब जा कऽ पूर्ण भेल। पोथी एक हाथसँ दोसर हाथ घुमि रहल अछि, एहिना आगाँ सेहो अहाँसँ आशा अछि।

७६.श्री उदय चन्द्र झा "विनोद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज कएलहुँ अछि से मैथिलीमे आइ धरि कियो नहि कएने छल। शुभकामना। अहाँकेँ एखन बहुत काज आर करबाक अछि।

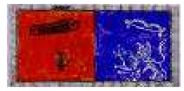
७७.श्री कृष्ण कुमार कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भेँट एकटा स्मरणीय क्षण बनि गेल। अहाँ जतेक काज एहि बएसमे कऽ गेल छी ताहिसँ हजार गुणा आर बेशीक आशा अछि।

७८.श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा लेल शब्द नहि भेटैत अछि। अहाँक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक सम्पूर्ण रूपेँ पढ़ि गेलहुँ। त्वञ्चाहञ्च बड्ड नीक लागल।

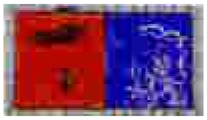
७९. श्री हीरेन्द्र कुमार झा- विदेह ई-पत्रिकाक सभ अंक ई-पत्रसँ भेटैत रहैत अछि। मैथिलीक ई-पत्रिका छैक एहि बातक गर्व होइत अछि। अहाँ आ अहाँक सभ सहयोगीकेँ हार्दिक शुभकामना।

विदेह



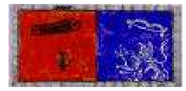


ISSN 2229-547X VIDEHA



मैथिली साहित्य आन्दोलन

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@videha.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो

पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित रचना प्रकाशित कएल जाइत अछि। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।




सिद्धिरस्तु